HTTP://SALFIBOOKS.BLOGSPOT.COM

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Publisher SHEHRI JAMIAT AHL-E-HADEES, JODHPUR

नाम किताब	: **दुनिया की ख़ुशनसीब औरत**
तालीफ़	: डॉ. आइज़ुलक़र्नी
हिन्दी ट्रान्सलिटरेशन	: ट्रांसलेशन डिपार्टमेन्ट, जमीअ़त अहले हदीस, जोधपुर
टाइप सेटिंग	: मोहम्मद गुफरान अंसारी, 83022-58062
तहक़ीक़ व नज़रेसानी	: मौलाना जमशेद आलम सल्फ़ी, 70625-03454
मेनेजिंग डायरेक्टर	: अली हम्ज़ा, 82338-55857
क़ीमत	: 250 रुपये
सफ़हात	: 176
अव्वल एडिशन	: मार्च 2018
ता'दाद	: 1000

मिलने के पते सोल डिस्ट्रीब्यूटर: **पोपुलर बुक स्टोर**, जोधपुर 094607-68990

अलकिताब इन्टरनेशनल जामिया नगर, नई दिल्ली 011-26986973	**मकतबा अस्सुन्नह** मुम्बई 08097444448	**मौलाना खुर्शीद मुहम्मदी** मिर्जापुर, यू.पी. 09919737053
मकतबा तर्जुमान 4116 उर्दू बाजार, नई दिल्ली 011-23273407	**दारूल इल्म** नागपाड़ा मुम्बई 022-23088989,23082231	**मकतबा अलफहीम** मऊनाथ, भंजन, यू.पी. 0547-2222013
अल हीरा पब्लिकेशन, 423 उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली 09015382970	**उमरी बुक डिपो** मुम्बई 09819961879	**तौहीद किताब सेन्टर,** 08003972503 सीकर, (राज.) **कलीम बुक डिपो,** 07014898515 सीकर, (राज.)
मदरसा दारूल उलूम सलफियह मोहल्ला सब्जी फरोश, रतलाम MP 7000411352, 9827397772	**शैख़ सुहैल सल्फ़ी,** मकतबा सलफ़िया वाराणासी 09451915874	**अल कौसर टेडर्स** 09414920119 जोधपुर (राज.)
मौलाना शकील मेरठी दारूल कुतुब इस्लामिया,. मटिया महल,दिल्ली 09910889357	**आई.आई.सी** नूरानी होटल के पास, डाण्डा बाजार,भुज, कच्छ (गुजरात) 09429017111	**अब्दुर्रहीम मुतवल्ली** मर्कजी जामा मस्जिद अहले हदीस, जोधपुर (राजस्थान) 9314366303

Scanned by CamScanner

अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही दीन पसन्द किया है तो दुनिया से न जाना मगर इस हालत में कि तुम मुस्लिम हो। (सूरह अल बकर: 132)

दुनिया की
खुश नसीब औरत

कुरआन शरीफ़ और अहादीसे सहीहा की रोशनी में

डॉ.आईजुल कर्नी

ڈاکٹر عائض القرنی

ज़ेरे निगरानी

शौबा ख्वातीन शहरी जमीअत अहले हदीस, जोधपुर

प्रकाशक :
मरकज़ी अन्जूमन खुद्दामुल कुरआन वल हदीस
जोधपुर

Scanned by CamScanner

फेहरिस्ते—मज़ामीन

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

अर्ज़े नाशिर

इस आरिज़ी दुनिया में अलग-अलग मुल्कों में अलग-अलग क़ौमों में ख़ुशनसीबी के मेअयार अलग-अलग हैं। कोई दौलत की फ़रावानी को ख़ुशनसीबी की अलामत जानता है तो कोई सामाने ऐशो-आराम की कोठी, कार, बंगला, जमीनों वग़ैरह को। कोई ऊँचे हसब व नसब को तो कोई आला व मुम्ताज कलीदी ओहदों के मिल जाने को ख़ुशनसीबी का बाइस बताता है। कोई औरत ख़ाविन्द की महबूबा बन जाने को और कोई ज्यादा तादाद में बेटों के मिलने और मुस्तक़बिल में अपने दस्त व बाज़ू बनने को अपनी ख़ुश क़िस्मती की ज़ामिन समझती है।

हक़ीक़त इसका उल्टा है, ख़ुशनसीबी वो नहीं जो दुनिया वाले समझे बैठे हैं। ऐसे ऊपर जिक्र किए हुए ख़ुशनसीब लोगों की बदनसीबी ये होती है कि उनको जिंदगी भर रूहानी सुकून नसीब नहीं होता, परेशानियाँ और मुश्किलात उनको घेरे रहती हैं। सुकून व राहत और इत्मीनान की दौलत से उनका दिल हमेशा महरूम व मअदूम ही रहता है। हक़ीक़ी ख़ुशनसीब औरत वो है जिसकी दुनियावी जिंदगी बहती नदिया की तरह पुरसुकून हो। ख़ुशनसीब औरत न किसी से डरती है, न किसी से बेजा उम्मीदें और ग़र्ज़ वाबस्ता रखती है बल्कि हर किसी से बेग़र्ज़ होती है, वो किसी से कुछ लेने की बजाय उसको कुछ देने में ख़ुशी व सुकून महसूस करती है। वो हमेशा ख़ुश अख़्लाक़ व ख़ुश अतवार और अच्छी बातचीत करने वाले मिजाज की होती है। हर दिल अजीजी, हर दिल महबूबी, एहतिराम व तमद्दुन उसकी शख़्सियत की पहचान बन कर रह जाती है। यूँ अपने किरदार व आला सीरत की बिना पर वो दूसरों के लिये आइडियल व नमूना बन जाती है। लोग उसको रात के सितारे समझते हैं और अपने सफ़र में मंजिल की दिशा का तअय्युन उसे देखकर करते हैं। उसकी सीरत उसके साँचे में ढल जाने को अपने लिये बाइसे ऐजाज व फ़ख़्र जानते हैं। हक़ीक़ी ख़ुशनसीब वही औरत है जो दुनिया में रहते हुए और चलते-फिरते आला महासिन (ख़ूबियों) का नमूना हो और यूँ वो दुनिया में भी कामयाब हो और आख़िरत में कामयाब होकर अल्लाह करीम की रज़ा का सर्टिफिकेट हासिल कर और हसीन जन्नतों की वारिस़ बन जाये।

मुहतरमा और मोमिना बहनो! सवाल ये पैदा होता है कि हम ऐसी कैसे बन सकती हैं कि यह कह सकें, हम दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब औरत बन गई हैं। इस किताब में दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब औरत बनने का फ़न ही तो बयान किया गया है। क़ुर्आन व सुन्नत तारीख़ और मुशाहिदात व तजर्बात की दुनिया की रोशनी में वो राज, क़ाइदे कुल्लिये और तरीक़े बताये गये हैं कि जिनको अपनाकर आप दुनिया की ख़ुशनसीब औरत बन सकती हैं।

मशहूर अरब स्कॉलर जनाब आइज़ अल्क़रनी की किताब **अस्अदुल मर्अति** को हिन्दी क़ालिब में ढाल कर आपके सामने पेश कर रहे हैं।

अब आप दुनिया की ख़ुशनसीब तरीन औरत बनने के सरबस्ता राजों से आगाही हासिल करने के लिये हमारी टीम की रात दिन जाँफ़िशानी के बाद तैयार की हुई इस किताब के मुतालअ़े में मसरूफ़ हो जायें। इन्शाअल्लाह! आप इल्म व अमल के ख़जानों से मालामाल हो जायेंगी।

वस्सलाम

आपकी दीन बहनें , शोबा ख़्वातीन, शहरी जमीअत अहले हदीस, जोधपुर

Scanned by CamScanner

मुसन्निफ़ एक नज़र में

- आइज़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन आइज़ आले मजदूअ अल्क़रनी
- सन् पैदाइश 1379 हिजरी
- इमाम मुहम्मद बिन सऊद इस्लामिक यूनिवर्सिटी, कुल्लिया उसूलुद्दीन से बी. ए. किया।
- 1408 हिजरी में हदीसे नबवी में एम. ए. किया। एम. ए. में आपके मक़ाले का उ़न्वान था, **'बिदअत और रिवायत व दिरायत पर उसके अ़सरात'**
- 1422 हिजरी में इमाम मुहम्मद बिन सऊद इस्लामिक यूनिवर्सिटी (रियाज़) से पी. एच. डी. की डिग्री हासिल की। मक़ाले का उ़न्वान था, 'इमाम कुर्तुबी की तल्ख़ीस, सहीह मुस्लिम के मुश्किलात की तशरीह, मुतालआ व तहक़ीक़।'
- आठ सौ से ज्यादा वीडियो और ऑडियो कैसिटें उनके ख़ुतबात, मवाइ़ज़ और दुरूस पर मबनी रिकॉर्ड किए गए हैं।
- उन्होंने हदीस शरीफ़, तफ़्सीर, फ़िक़्ह, अदब, सीरत और तज्किरा जैसे मौज़ूआत पर कई सारी क़ाबिले क़द्र किताबें लिखी हैं।
- उन्होंने दर्जनों ख़ुतबात, लेक्चरों, सेमीनारों, कॉन्फ्रेंसों में शिरकत की है जिन्हें मुस्लिम अ़रब यूथ एसोसिएशन, कुर्आन और सुन्नत सोसायटी अमेरीका ने मुन्अक़िद किया था। उन्होंने अलग-अलग अदबी अंजुमनों और क्लबों में ख़ुतबात भी दिये हैं और बहुत सारी यूनिवर्सिटियों के सेमीनारों में भी मक़ाले पेश किये हैं।
- उनकी किताब ला तहजन (ग़म न करें) दुनिया की अलग-अलग जुबानों में तर्जुमे होकर मक़्बूलियत का एक रिकॉर्ड क़ायम कर चुकी है। सिर्फ़ अंगेजी तर्जुमा (Do not be sad) लाखों की तादाद में छप चुकी है। अ़रबी के दस लाख से ज्यादा नुस्ख़े फ़रोख़्त हो चुके हैं।

Scanned by CamScanner

﴾ इन्तिसाब ﴿

उन तमाम मुस्लिम ख़्वातीन के नाम

- जो अल्लाह तबारक व तआला को अपना रब
- इस्लाम को अपना दीन
- मुहम्मद (ﷺ) को अपना रसूल
- दिल की गहराइयों से मानती हैं
- और इस बात पर वो फ़ख़्र व इम्बिसात महसूस करती हैं।

﴾ उन तमाम दुख़्तराने इस्लाम के नाम ﴿

- जो जिंदगी भर सिराते मुस्तक़ीम पर चलने और दूसरों तक हक़ का पैग़ाम पहुँचाने का फ़ैसला कर चुकी हैं।

﴾ उन तमाम मुअ़ल्लिमात और माँओं के नाम ﴿

- जो कलिम-ए-हक़ के लिये जद्दो-जहद करने, उसे क़ायम करने और अपनी रूह का तज्किया करने का अ़ज्म कर चुकी हैं।
- जो अपनी औलाद की तर्बियत तक़वा की बुनियाद पर करती हैं और सुन्नते नबवी (ﷺ) की बुनियाद पर उन्हें परवान चढ़ाती हैं, और उनकी नज़रों में अच्छे अख़्लाक़ी औसाफ़ को पसन्दीदा बनाती हैं।

﴾ उन तमाम ग़मजदा और परेशान हाल मस्तूरात के नाम ﴿

मुबारकाद और ख़ुशख़बरी, ग़म व अन्दोह से निजात, अल्लाह की इनायत, अज्रे अ़ज़ीम, मग़्फ़िरत और बख़्शिश उनके इंतज़ार में है।

Scanned by CamScanner

मुहब्बत के शरर से
दिल सरापा नूर होता है
जरा से बीज से पैदा
रियाज़े तूर होता है

-इक़बाल

Scanned by CamScanner

तक़दीम

हम्दो-सना अल्लाह तबारक व तआला के लिये जो कुल कायनात का रब है। सलात व सलाम रसूलुल्लाह (ﷺ), आपके अहले बैत, अस्हाबे किराम और उन तमाम लोगों के लिये जो क़यामत तक आप पर ईमान लायें और आपकी पैरवी करेंगे।

* ये किताब दरअसल एक साहिबे ईमान औरत को अपने दीन की सआदत और अल्लाह तबारक व तआला के फ़ज़्ल व इनायत से बहरावर करने के लिये लिखी गई है।

* ये ग़मजदा और मायूस दिलों को उम्मीद और शादमानी से हमकिनार करने वाली है।

* ये मुस्लिम ख़्वातीन को ग़मों से निजात की राह दिखाती है और उनके अंदर नाउम्मीदी से उम्मीद व यक़ीन की तरफ़ पेशक़दमी का हौसला पैदा करती है ताकि बादे नसीम के ख़नक झोंकों के साथ उम्मीद व यक़ीन का सूरज उन पर तुलूअ हो।

* ये किताब शिकस्ता दिल, ग़मों से निढाल और अन्देशों में गिरफ़्तार ख़्वातीन को तमामतर परेशानियों से निजात की तरफ़ दावत देती है।

* ये किताब उनके अक़्ले सलीम, क़ल्बे वसीअ, रूहे लतीफ़ और नफ़्से जकी को ग़ौर व फ़िक्र की दावत देती है और उनको पुकार-पुकार कर कहती है कि सब्र करो और अल्लाह से अज्र की उम्मीद रखो, अल्लाह की रहमत से मायूसी मत इख़्तियार करो क्योंकि अल्लाह तबारक व तआला हर हाल में तुम्हारे साथ है, अल्लाह रब्बुल इज्जत तुम्हारे लिये काफ़ी है, अल्लाह रब्बुल आलमीन तुम्हारा वली, नसीर, हामी व नासिर और निगेहबान है। उससे उम्मीद लगाये रखो और उसी पर तवक्कल (भरोसा) करो।

ऐ इस्लाम की अलमबर्दार बहनो! इस किताब का मुतालआ (Study) करो, ये क़ुर्आन पाक की मुहकम आयतों, हदीसे नबवी (ﷺ) की सहीह नुसूस, हकीमाना अक़्वाले जर्रीं, सबक़ आमूज क़िस्से, दिलनशीं अश्आर, सहीह अफ़्कार (thinks) और बेश-बहा नसीहत आमेज वाक़ियात व तजुर्बात व मुशाहिदात पर मुश्तमिल है।

इस किताब का मुतालआ करो और हुज्न व मलाल, मायूसी और पज्मुर्दगी और अन्देशा हाय

Scanned by CamScanner

दूर-दराज को अपने दिल व दिमाग़ से निकाल बाहर करो। इस गन्जीना हिक्मत का मुतालआ करो, ये तुम्हारे हाफ़िज़े से तवह्हुमात और शैतानी वस्वसों को साफ़ कर देगा और बाग़े उल्फ़त, चमनिस्ताने सआदत, दियारे ईमान और गुलिस्ताने निशात के गुलशने बेख़ार में दाख़िल करेगा।

मुम्किन है कि अल्लाह तबारक व तआला तुम्हें दोनों जहाँ की ख़ुशबख़्ती, कामयाबी और कामरानी से हमकिनार करे और अपने जूदो-करम और फ़ज़्ल व एहसान से शाद काम करे। बेशक वो मालिक अरज़ो-समावात बड़ा ही करीम बख़्शने और अता करने वाला है।

मैं तुम्हारे समाने इल्म व हिक्मत का ऐसा ख़जाना पेश कर रहा हूँ जिसमें बेश क़ीमत जवाहरात के ख़ूबसूरत जेवरात, हक़ व सदाक़त के ऐसे अनमोल मोतियों और जवाहरात पर मुश्तमिल हैं जिनके मुक़ाबले में चाँदी और सोने के तलाई जेवरात हेच हैं। ये वो बेश बहा जेवरात हैं जो तुम्हारी सीरत व किरदार के हुस्नो-जमाल को दोबाला कर देंगे और इसी वजह से मैंने इस किताब के अबवाब और फ़स्लों को जेवरात के नाम दिये हैं।

जब ये क़ीमती ख़जाना तुम्हारे पास है तो फिर तुम्हें दुनिया की मस्नूई सजावट, बनावट मस्नूई और नुमाइशी चीजों की कोई ज़रूरत नहीं है। इन क़ीमती जवाहरात से तुम अपनी सीरत को संवार लो, उनको जिंदगी की ख़ुशगवार तक़ारीब और महफ़िलों में जेबतन किए रहो, इन्शाअल्लाह! तुम दुनिया की ख़ुशनसीब औरतों में शुमार की जाओगी।

ऐ कि तेरा जमाल है दीन व अदब से आश्कार
लअल व गोहर में है कहाँ हुस्न व जमाले दिल निगार

नग़मए दिल नशीन तेरा और तेरी सनाए रब
जैसे सहाबे, सुबह नौ, जैसे नुजूले आबशार

नालाए नीम शब तेरा और दुआए सुबह व शाम
फ़िक्र व नज़र में नूर और लौह व क़लम का है वक़ार

ग़ारे हिरा के नूर से अरब व अजम में रोशनी
हामिले सुन्नते रसूल तुझपे हैं बरकतें निसार

तेरी सआदतों के पेश हेच है सारी कायनात
मख़्जने दिल में है तेरे महर व वफ़ाए किरदार

ख़ुशनसीबी का राज इल्म व मअरिफ़त और तालीम व तर्बियत की सफ़ाई और पाकीजगी में

Scanned by CamScanner

पिन्हाँ (पौशीदा) हैं। रूमानी नाविल और फ़र्ज़ी कहानियाँ जो अपने क़ारेईन को हक़ाइक़ से बहुत दूर ख़्वाबों की दुनिया में ले जाती हैं और वहाँ वो ख़ुद को तख़य्युलात के महकते गुलाबों के दरम्यान पाते हैं और ख़ुशगुमानियों के जाम से मख़्मूर (मदहोश) और सरमस्त हो जाते हैं लेकिन अंजाम कार कि वो मायूसी, नामुरादी और पज्मुर्दगी के शिकार हो जाते हैं और उनकी शख़्सियत जमूद, तअत्तुल और जहनी इन्तिशार का नमूना बन जाती है। इस क़िस्म की किताबें अख़्लाक़ के लिये समे क़ातिल होती हैं बल्कि उससे भी ज्यादा ख़तरनाक। जैसे अगाथा क्रिस्टी के जासूसी नाविल जो जराइम, रहजनी, चोरी धोखादेही और जअल साजी सिखाते हैं। **'दुनिया की बेहतरीन कहानियाँ'** के नाम से सिलसिले कुतुब की इशाअत का एहतिमाम किया था जिसके तहत नोबल ईनामयाफ़्ता नाविलों की इशाअत हुई थी। मैंने उन तमाम नाविलों का बिल्इस्तीआब मुतालआ किया है और आख़िरकार मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि उनमें कई सारी ग़लतियाँ और बेवक़ूफ़ाना बातें मौजूद हैं। इसमें भी कोई शक नहीं कि उन आलमी अदबियात में कुछ अदबी लिहाज़ से और नाविल निगारी के फ़न्नी महासिन के लिहाज़ से निहायत अहम हैं। जैसे **'बूढ़ा और समुन्द्र'** मुअल्लिफ़ा अरनिस्ट हमंकवे और इस तरह कुछ नाविल जिनमें अख़्लाक़ी इन्हितात, फ़ह्हाशी, पस्ती और घटियापन और दीगर अदबी जमूद व तअत्तुल की अलामतों से बचने की कोशिश की गई है। तमाम हिदायत याफ़्ता मोमिनात के लिये ज़रूरी है कि वो उन इस्लामी अदबियात का मुतालआ करें जो हमारा इल्मी व अदबी वरसा हैं। जैसे अली तन्तावी, नजीब कीलानी, मन्फलूती और राफ़ई और इन जैसे दीगर इस्लामी अदीब जिनकी तहरीरों में पाकीजगी है, जिनके ज़मीर जिंदा हैं और जो अपने अंदर इस्लामी बेदारी का पैग़ाम रखते हैं। मैं ऐसा इस लिये लिख रहा हूँ कि मेरी शदीद ख़्वाहिश है कि मेरी ये किताब बेरूनी असरात, इन्हिराफ़ के सम्मियत (ज़हर) और बेकार और लग़्व बातों की कमजोरियों से पाक हो। अल्लाह की पनाह! कितने हैं जो अदब के नाम पर जहरीले मज़मून के शिकार हुए और कितने हैं जिनकी जिंदगियाँ क़िस्सों, नाविल और डाम्मों ने तबाह कर दीं। बहरहाल किताबुल्लाह में बयान किये गये क़िस्सों और रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुन्नते मुतह्हिरा में जिक्र किए हुए वाक़ियात, तारीख़े इस्लामी के नेक हुक्मरानों, उलमा और सालेहीन के सबक़ देने वाले हालात से बेहतर कहानियाँ और वाक़ियात भला और क्या हो सकते हैं?

तुम्हारी ख़ुशबख़्ती और ख़ुशनसीबी तो उन्ही चीजों में है जो तुम्हारे पास दीन, हिदायत और अक़ीदे और अजदाद (पूर्वजों) के इल्मी वरसे की शक्ल में हैं। इसलिये अल्लाह की बरकत और ख़ुशनसीबी इन ही चीजों में तलाश करो

डॉक्टर आइज़ अल्क़रनी

Scanned by CamScanner

इस्तक़बालिया

ख़ुश आमदेद! ऐ तक़वा शआर, इबादत गुजार, सौम व सलात की पाबंद, पुर ऐतमाद और पुर उम्मीद बहन!

ख़ुश आमदेद! ऐ क़ाबिले एहतिराम, दानिशमंद, अक़्लमंद और पर्दा नशीन ख़ातून!

ख़ुश आमदेद! ऐ हिदायत याफ़्ता, बाख़बर इल्म की तलबगार और मुतालअे का जौक़ रखने से सरशार अदीबा!

ख़ुश आमदेद! ऐ हक़ गो और हक़ पसंद, वफ़ाशआर, अमानतदार मोमिना सादिक़ा!

ख़ुश आमदेद! ऐ सब्र करने, अल्लाह से अज्र की उम्मीद रखने, कसरत से तौबा करने और अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करने वाली नेक बन्दी!

ख़ुश आमदेद! ऐ जिक्रे इलाही में मशग़ूल, बाख़बर शुक्रगुजार दाइया!

ख़ुश आमदेद! ऐ आसिया, मरयम, आइशा और ख़दीजा (ﷺ) के नक़्शे क़दम पर चलने वाली!

ख़ुश आमदेद! ऐ सूरमाओं की माँ, ऐ नेक मर्दों को नशोनुमा देने वाली औरत!

ख़ुश आमदेद! ऐ आला अक़दार और तहजीबी वरसे की अमीन व मुहाफ़िज़!

ख़ुश आमदेद! ऐ हुदूदुल्लाह की हिफ़ाज़त और मुहर्रमाते इलाहिया से बचने वाली ग़य्यूर (ग़ैरतमंद) ख़ातून!

*****

Scanned by CamScanner

हाँ.....!

हाँ.....! तुम्हारी ख़ूबसूरत मुस्कान जो दूसरों तक दोस्ती और गर्मजोशी का पैग़ाम ले जाती है।

हाँ.....! तुम्हारे पाकीजा कलिमात जो मुख़्लिसाना मुहब्बत और दोस्ती के क़ियाम और दुश्मनी व इनाद के ख़ात्मे का सबब बनते हैं।

हाँ.....! तुम्हारे मक़्बूल सदक़ात जिनसे मसाकीन की मदद होती है, भूखों का पेट भर जाता है और फ़क़ीरों को ख़ुशी हासिल होती है।

हाँ.....! कुछ देर क़ुर्आन मजीद के साथ, उसकी तिलावत, उस पर ग़ौर व फ़िक्र और उस पर अ़मल का और तौबा और इस्तिग़फ़ार।

हाँ.....! ज़िक्रे इलाही की कस़रत और अल्लाह तआ़ला से मग़्फ़िरत की तलब, मुसलसल दुआ़यें और तौबतन्नसूह।

हाँ.....! इस्लामी नहज (तरीक़े) पर बच्चों की तर्बियत व निगेहदाश्त, सुन्नते नबविया (ﷺ) की तालीम और फ़लाहे दारैन की तरफ़ उनकी रहनुमाई।

हाँ.....! पाकदामनी और पर्दानशीनी, जिसको इख़्तियार करने का हुक्म अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने दिया है और जो हिफ़ाज़ती हिसार और क़िला है।

हाँ.....! नेक बन्दियों की सुहबत और दोस्ती इख़्तियार करना जो अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करती हैं, अपने दीन से मुहब्बत करती और आ़ला क़दरों को अ़जीज रखती हैं।

हाँ.....! वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक, सिला रहमी, पड़ौसियों का इकराम और यतीमों की किफ़ालत।

हाँ.....! मुफ़ीद किताबों का मुतालआ़ और उनको ग़ौर से पढ़ना और अच्छे और मुफ़ीद लिटेचर से इस्तिफ़ादा।

*****

Scanned by CamScanner

नहीं.....!

नहीं.....! उम्रे अजीज को फ़िज़ूल कामों में बर्बाद करना, इन्तिक़ाम की आग में जलना और बेकार और लायअ़नी (बेमतलब) बहस व मुबाहिसे में उलझना।

नहीं.....! दौलत के हुसूल और उसको जमा करने के पीछे अपनी सेहत, शादमानी, दिन का चैन और रात का सुकून बर्बाद करना।

नहीं.....! दूसरों की ख़ताओं, भूल-चूक और ग़ल्तियों के पीछे पड़ना और अपने उ़यूब से सर्फ़े नज़र करना।

नहीं.....! नफ़्सानी लज्जतों के हुसूल के दर्पे होना और नफ़्स की हर ख़्वाहिश और उसका हर मुतालबा पूरा करना।

नहीं.....! ला उबाली और बेकार लोगों के साथ लह्व लइब (खेलकूद) में वक़्त बर्बाद करना।

नहीं.....! जिस्म और मकान की सफ़ाई की तरफ़ से ग़फ़लत करना और घर को ग़लीज़ और बेतर्तीब रखना।

नहीं.....! हुक्का, सिगरेट, तम्बाकू और शराब नौशी और इस तरह की ख़बीस़ चीजें।

नहीं.....! गुजरी हुई मुसीबतें, हादस़ात व नाख़ुशगवार वाक़ियात और ख़तायें याद करना और उन ही में उलझे रहना।

नहीं.....! आख़िरत की जो अबदी और उसकी तैयारी से ग़फ़लत, हिसाबो-किताब से बेतवज्जही।

नहीं.....! हराम कामों में माल की बर्बादी और फ़िज़ूलख़र्ची, ताअ़त और बन्दगी में सुस्ती और कोताही।

*****

Scanned by CamScanner

महकते गुलाब!

पहला फूल : जो उसके बारगाह में तौबा करता है और उसकी तरफ़ पलटता है तो उसकी तौबा वो क़ुबूल फ़र्माता है। याद रखो! तुम्हारा रब बड़ा करीम है, जो भी उससे मग़्फ़िरत तलब करता है उसकी मग़्फ़िरत फ़र्मा देता है।

दूसरा फूल : कमजोरों के साथ रहम व करम का मामला करो ख़ुशी मिलेगी, हाजतमन्दों की हाजत रवाई करो तन्दुरुस्ती हासिल होगी और बुग़्ज़ व कीना मत रखो आफ़ियत मिलेगी।

तीसरा फूल : पुर उम्मीद रहो, अल्लाह तबारक व तआला तुम्हारे साथ है, फ़रिश्ते तुम्हारे लिये मग़्फ़िरत की दुआयें करते हैं और जन्नत तुम्हारी मुन्तज़िर है।

चौथा फूल : अपने आँसू पोंछ डालो! अपने रब से ख़ुशगुमान रहो, तफ़क्कुरात को परे रखो, अल्लाह की नेमतों को याद रखो।

पाँचवाँ फूल : ऐसा मत सोचो कि दुनिया की सारी नेमतें सबको हासिल हैं। रूए जमीन पर कोई ऐसा इंसान नहीं जिसकी तमाम ख़्वाहिशात पूरी होती हों और जो हर क़िस्म की परेशानियों से महफ़ूज़ हो।

छठा फूल : आला मक़ासिद की हामिल बनो! खजूर के बाबरकत दरख़्त की तरह जो नुक़सान पहुँचाने से परे है, उस पर जब पत्थर बरसाये जाते हैं तो जवाब में उससे तरो-ताजा फल टपकते हैं।

सातवाँ फूल : क्या तुमने किसी से सुना है कि हुज़्न व मलाल, माज़ी के नुक़सानात की तलाफ़ी और तफ़क्कुरात, ख़ताओं की इस्लाह कर सकते हैं? फिर हुज़्न व मलाल कैसा?

आठवाँ फूल : फ़ित्ना और परेशानी की मुन्तज़िर मत रहो बल्कि अल्लाह से हमेशा ख़ैर की उम्मीद रखो और अमन, सलामती और आफ़ियत की उम्मीद रखो।

नवाँ फूल : अपने दिल से नफ़रत की आग को बुझा डालो और हर उस शख़्स को माफ़ कर दो जिसने कभी तुमको तकलीफ़ पहुँचाई थी।

दसवाँ फूल : गुस्ल, वुज़ू, मिस्वाक, ख़ुश्बू और तन्ज़ीम तमाम बीमारियों और परेशानियों की मुजर्रब दवायें हैं।

*****

Scanned by CamScanner

खिलती और महकती कलियाँ

पहली कली : शहद की मक्खी की तरह जिंदगी गुजारो जो ख़ुश्बूदार फूलों और ताजा पंखड़ियों ही पर बैठती हैं।

दूसरी कली : तुम्हारे पास इसके लिये वक़्त नहीं कि लोगों के ड़यूब तलाश करो और उनकी ख़ताओं को शुमार करो।

तीसरी कली : जब अल्लाह तबारक व तआ़ला तुम्हारे साथ है तो फिर किसका ख़ौफ़? जब अल्लाह तआ़ला तुम्हारा मुख़ालिफ़ है तो फिर अब कैसी और किस पर उम्मीद?

चौथी कली : हसद की आग इंसान के जसदे ख़ाकी (मिट्टी के जिस्म) को जला देती है और हद से ज्यादा रश्क व ग़ैरत क़ुनूतियत (नाउम्मीदी) की सुलगती आग बल्कि आतिशफ़शाँ है।

पाँचवीं कली: आज की कोशिश का फल कल हासिल होगा, जिसने आज खो दिया वो कल भी खो देगा।

छठी कली : लह्व व लड़ब और फ़िज़ूल मुबाहिसे व मुजादिले की महफ़िलों से सलामती के साथ गुजर जाओ।

सातवीं कली : तुम्हारे अख़्लाक़े गुलशन बेख़ार के फूलों से बेहतर हों।

आठवीं कली: नेकी करो और उसको अपनी ख़ुशबख़्ती समझो, नेकियाँ तुम्हें ख़ुशियों से हमकिनार कर देंगे।

नवीं कली : लोगों के मामलात उनके ख़ालिक़ के हवाले करो, हासिदों को मौत है और दुश्मन भुला दिये जाने ही के क़ाबिल हैं।

दसवीं कली : ऐसी लज्जत हराम है जिसका नतीजा शर्मिन्दगी, निदामत, हसरत और सजा है।

Scanned by CamScanner

दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब औरत

(1)

ताबन्दा नुक़ूश

वजूदे ज़न से है तस्वीरे कायनात में रंग

उसी के साज से है जिंदगी का सोजे दरूँ

इक़बाल

Scanned by CamScanner

'कुव्वत और ताक़त सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही के पास है।'

किरणें

सिन्फ़े नाज़ुक ज़ोरो इस्तिबदाद के शिकन्जे में

गुज़िश्ता साअ़तें सब मर चुकी हैं
उम्मीदें कल की सब सूनी पड़ी हैं
मगर लम्हे जो हैं मौजूद अपने
चलो उनको गले से हम लगा लें

जब तुम क़ुर्आनी आयतों और सुन्नते मुतह्हरा का मुतालआ़ करोगी तो तुम कई आयतों और अहादीसे सहीहा इस बाब में पाओगी कि उनमें एक मोमिना की तारीफ़ व तहसीन की गई है। अल्लाह तबारक व तआ़ला क़ुर्आन पाक में एक मोमिना सालेहा की तारीफ़ इन अल्फ़ाज़ में करता है,

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِىْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِى الْجَنَّةِ وَ نَجِّنِىْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِىْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١١﴾

'और अहले ईमान के मामले में अल्लाह फ़िरऔन की बीवी की मिसा़ल पेश करता है जबकि उसने दुआ़ की, ऐ मेरे रब! मेरे लिये अपने यहाँ जन्नत में एक घर बना दे और फ़िरऔन और उसके अ़मल से बचा ले और ज़ालिम क़ौम से मुझको निजात दे।' (सूरह तहरीम : 11)

जरा इस आयत के अल्फ़ाज़ पर ग़ौर करो, किस तरह अल्लाह तआ़ला ने उस ख़ातूने आ़लम, हज़रत आसिया (ﷺ) को मोमिनीन और मोमिनात के लिये एक जिन्दा व जावेद मिसा़ल बनाकर पेश किया है और किस तरह अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला ने उनकी शख़्सियत को ज़ाहिरी और बातिनी लिहाज़ से मिसा़ली बनाकर पेश फ़र्माया है। वो उन तमाम औ़रतों के लिये नमूना हैं जो जिंदगी में हिदायत की तलबगार हैं और जो अल्लाह के बनाये तरीक़-ए-जिंदगी से अपनी हयात को संवारना चाहती हैं। हज़रत आसिया (ﷺ) किस क़द्र दानिशमंद (होशियार) और किस क़द्र हिदायतयाफ़्ता थीं कि उन्होंने अपने रब से तक़र्रुब की इल्तिजा पहले की, जन्नत के घर की दरख़्वास्त बाद में की। उन्होंने फ़िरऔन जैसे मुजरिम, सरकश और नाफ़र्मान काफ़िर की इताअ़त शआ़री से निजात की दुआ़ की और उसके जाहो-हश्म और महल के ऐशो-आराम को लात मार दी और हमेशा बाक़ी रहने वाली जन्नत में अपने लिये रब के क़ुर्ब में हसीन व जमील घर की तमन्ना की। ऐसा घर जिसमें घने बाग़ात और नहरें होंगी और साहिबे इक़्तिदार शहनशाहे कायनात के क़ुर्ब में मक़ामे सिद्क़। बेशक वो एक बड़ी नेक ख़ातून थीं जिनके ईमान व इख़्लास ने उनको जाबिर और ज़ालिम शौहर के सामने हक़ बात कहने की जुरअत बख़्शी।

अल्लाह की रहमत की उम्मीदवार रहो, उस वक़्त भी जब तुम तूफ़ान व हादसों में गिरफ़्तार हो।

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٦﴾

'बेशक तंगी के साथ फ़राख़ी भी है।' (सूरह नशरह : 6)

तुम्हारे पास अल्लाह की नेमतों का वसीअ़ जख़ीरा है

अल्लाह की इनायात की हद नहीं
हो लम्हा तो सदियों से भी कम नहीं

मेरी बहनो! यक़ीनी तौर पर मुशकिलात के साथ आसानियाँ भी हैं और आँसूओं के बाद मुस्कुराहटें भी हैं। रात के बाद दिन है। ग़म के बादल छट जायेंगे और अल्लाह के इज्न (इजाज़त) व हुक्म से अन्धेरी रात रोशन हो जायेगी और मुसीबतों का ख़ातमा हो जायेगा, और यक़ीन करो तुम्हें ईनाम व इकराम से नवाजा जायेगा। अगर तुम माँ हो तो तुम्हारे बच्चे दीन के हामी बनकर उठेंगे, मिल्लत के अन्सार व मददगार साबित होंगे, हाँ उस वक़्त जब तुम उनकी तर्बियत सालेह बुनियादों पर करोगी, वो तुम्हारे लिये वक़्ते सहर सज्दों में दुआयें करेंगे। अगर तुम एक रहमदिल और मेहरबान हो तो तुम्हारे लिये तुम्हारी औलाद नेमते उ़ज़मा (बड़ी नेमत) साबित होगी। तुम्हारे लिये ये शर्फ़ और फ़ख़्र काफ़ी है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) और तमाम नोअ़े बशर के इमाम (ﷺ) की माँ एक औ़रत ही तो थी।

तुम्हारे अंदर दाइए-दीन बनने की भरपूर सलाहियत मौजूद है, तुम अपनी हमजिन्स बहनों को अल्लाह तआ़ला के कलिमे तय्यिबा की तरफ़ मवाअ़िज़े हसना, हिक्मत और दिल पजीर बहस़ व मुबाहिस़े के जरिये से दा़वत दे सकती हो। तुम बहस़ व गुफ़्तगू के जरिये से और अपने अच्छे अख़्लाक़ और सीरत के जरिये से लोगों के दरम्यान एक अच्छी मिस़ाल क़ायम कर सकती हो। एक औ़रत अपने हुस्ने अख़्लाक़ और हुस्ने अ़मल से वो कुछ कर सकती है जो ख़ुतबात, लेक्चर और दुरूस से मुम्किन नहीं है। अक्सर ऐसा हुआ है कि एक मोमिना किसी मुहल्ले में लोगों की हमसाया बनकर रही और लोगों के उसके हुस्ने अख़्लाक़, दीनदारी, पर्दानशीनी, वक़ार, पड़ौसियों के साथ हुस्ने सुलूक और शौहर की ताअ़त व फ़र्मांबरदारी के चर्चे आ़म किये और इस तरह वो दूसरों के लिये एक अच्छी मिस़ाल बन गई जिसके बारे में सभी लोग अपनी अच्छी राय ज़ाहिर करने लगे। इस तरह उसकी सीरत की ख़ुश्बू फैल गई और लोग अपनी गुफ़्तगू में, वअ़ज़ और दर्स में उसका हवाला देने लगे यहाँ तक कि उसका उस्वा (नमूना) औ़रतों में फैल गया।

अ़न्क़रीब फूल खिलेंगे और हुज़्न व मलाल जाता रहेगा और हर तरफ़ ख़ुशियाँ ही ख़ुशियाँ हो जायेंगी।

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

سَيَجْعَلُ اللهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ﴿٧﴾

'अन्क़रीब अल्लाह सुब्हानहू व तआला तंगी के बाद आसानियाँ पैदा कर देगा।'

(सूरह तलाक़ : 7)

तुम्हारे लिये ये शर्फ़ बहुत है कि तुम मोमिना हो

वक़्त बे वक़्त आह भरती हो

हाय तक़दीर 'आह' या अल्लाह

जो कुछ अल्लाह तबारक व तआला की जात की ख़ातिर तुम पर गुजरे तो वो अज्ज व जल्ल की इजाज़त व हुक्म से तुम्हारे लिये कफ़्फ़ारा है। तुम्हारे लिये ख़ुशख़बरी है जैसाकि हदीसे नबवी में वारिद हुआ है, **'जब कोई औरत अपने रब की इताअत करती है और पाँचों वक़्त की नमाज अदा करती है, अपनी इज्जत की हिफ़ाज़त करती है तो अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो गई।'** (**सहीह :** मुस्नद अहमद 1: 191, मुअजमुल औसत लित्तबरानी : 8805, शैख़ अल्बानी इसे सहीह कहते हैं। सहीहुल जामेअ : 661)

ये तो निहायत आसान काम हैं उनके लिये जिनके लिये अल्लाह तआला आसान बना दें। इन नेक आमाल को इख़्तियार करो ताकि तुम अपने रब को रहीम व करीम पाओ जो तुमको दुनिया और आख़िरत दोनों जहान में ख़ुश और ख़ुशबख़्ती से हमकिनार करेगा। जहाँ कहीं रहो शरीअत के साथ रहो और अल्लाह की किताब और रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुन्नत को मज़बूती से पकड़े रहो। तुम एक मुसलमान औरत हो और ये शर्फ़ बहुत बड़ा शर्फ़ है और ये फ़ख़्र शायाने शान है। वो औरतें जो कुफ़्फ़ार के मुल्क में पैदा होती हैं उनकी हालत इससे अलग होती है। वो या तो नसरानिया होती हैं या यहूदिया या कम्यूनिस्ट वग़ैरह। उनका दीन व मजहब और तरीक़ा इस्लाम के ख़िलाफ़ होता है। लेकिन अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने तुमको मुस्लिमा की हैसियत से पैदा किया है। और तुमको अपने आख़िरी रसूल मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (ﷺ) की उम्मत में से बनाया है जिनकी पैरवी और इक़्तिदा करने वालियों में हज़रत ख़दीजा, हज़रत आइशा और हज़रत फ़ातिमा (رضي الله عنهن) थीं। तुम बहुत ही मुबारकबाद की हक़दार हो कि तुम पाँच वक़्त नमाज़ अदा करती हो, रमज़ानुल मुबारक के रोजे रखती हो, बैतुल्लाह का हज करती हो और अपने चेहरे को हिजाबे शरई से छिपाती हो। मुबारकबाद! तुम अल्लाह के रब होने पर, इस्लाम के दीन होने पर और हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के रसूल होने पर दिल से राज़ी और ख़ुश हो।

तुम्हारी दीनदारी ही सोना-चाँदी है, तुम्हारा अख़्लाक़ ही तुम्हारा जेवर है और तुम्हारे आदाब ही तुम्हारे माल व मताअ हैं।

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿١٧٣﴾

हमारे लिये अल्लाह काफ़ी है और वही बेहतरीन कारसाज है। (सूरह आले इमरान 3 : 173)

मोमिना और काफ़िरा कभी बराबर नहीं हो सकती

नहीं सुरूर न मसरूर को दवाम यहाँ
न हुज्न को दिले महजूँ के है क़ियाम यहाँ

तुम यक़ीनी तौर पर ख़ुद को ख़ुशनसीब तसव्वुर करोगी जब तुम मामले के एक पहलू पर नज़र डालोगी। एक मोमिना की हालत मुस्लिम दुनिया में और एक काफ़िरा की हालत काफ़िरों के मुल्क में।

एक मुसलमान औरत इस्लामी मुल्क में मोमिना, सादिक़ा, रोजेदार, नमाज क़ायम करने वाली, पर्दा नशीन और अपने शौहर की इताअत शआर होती है। वो अपने रब से डरने वाली, अपनी पड़ौसनों पर फ़ज़्ल व एहसान करने वाली, अपनी औलाद पर बेहद मेहरबान, अल्लाह तआला के अज्रे अज़ीम पर मुबारकबाद की मुस्तहिक़, मुत्मइन और पुरसुकून आजादाना जिंदगी के साथ होती है।

इसके बरअक्स एक काफ़िरा काफ़िरों के मुल्क में नुमूद व नुमाइश की दिलदादा (शौकीन), जाहिलियत नवाज और बेवक़ूफ़, घटिया और हर जगह ख़ुद को पेश करने वाली, जिसकी कोई क़द्रो-क़ीमत नहीं, उसके लिये न कोई शर्फ़ व फ़ज़ीलत है और न इज्जत व नामूस और न दयानतदारी। इन दोनों की तुलना करो हालांकि इन दोनों के दरम्यान मुक़ाबला और मुवाज़ना की गुंजाइश नहीं।

इन दोनों की ज़ाहिरी हालत और सूरतों का मुवाज़ना (कम्प्रिजन) करोगी तो तुम अल्लाह तआला का शुक्र अदा करोगी इसलिये कि तुम ख़ुद को उनसे कहीं ज्यादा ख़ुशनसीब, अर्फ़अ और आला पाओगी। अल्लाह तआला फ़र्माता है, **'दिल शिकस्ता न हो, ग़म न करो, तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम मोमिन हो।'** (सूरह आले इमरान 3 : 139)

तमाम इंसान सुकूनत पजीर हैं कोई क़स्रे सुल्तानी में और कोई मामूली झोंपड़ी में। तुम्हारा क्या ख़्याल है कौन ज्यादा ख़ुश है?

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'अल्लाह मेरा रब है और मैं उसके साथ किसी को शरीक नहीं करती।'

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल वित्र, बाब फ़िल्इस्तिग़फ़ार : 1525, सुनन इब्ने माजह, किताबुद्दुआ, बाब अद्दुआउ इ़न्दल करब : 3882, सुननुल कुबरा लिन्नसाई : 10408, अल्बानी ने इसे सहीह कहा है।)

काहिली और नाकामी दोनों में गहरी दोस्ती है

दोस्त बेहतर तो बस किताबें हैं
जाये इ़ज्जत जहाँ पे हो तस्बीह

मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि तुम अपने आपको हमेशा मशग़ूल रखो, सुस्ती और काहिली को अपने क़रीब भी न फटकने दो, अपने घर, घरेलू कुतुबख़ाने की हिफ़ाज़त करो, अपने फ़राइज़ और अपनी जिम्मेदारियों को अदा करो, नमाज पढ़ो, तिलावत करो या मुफ़ीद किताबों का मुतालआ करो, फ़ायदेमंद टेपरिकॉर्ड सुनो, अपनी पड़ौसनों के साथ अच्छी बातचीत करो और उनसे उस क़िस्म की बातें करो जो अल्लाह तआला से क़रीब करे। उस वक़्त तुम अल्लाह अ़ज्ज व जल्ल के हुक्म व इजाजत से ख़ुशबख़्ती, फ़रहत व इम्बिसात और इन्शिराहे सद्र हासिल करोगी।

ख़बरदार! ख़रबदार! यूंही फ़ारिग़ और बेकार न बैठना। क्योंकि ये चीजें तुमको हुज्न व मलाल, ग़म व अन्दौह, शुकूक व शुब्हात और रंज व कदूरत में मुब्तला कर देंगी और उनसे निजात की कोई और सूरत नहीं कि तुम ख़ुद को मुफ़ीद कामों में मशग़ूल रखो।

तुम अपनी ज़ाहिरी हैसियत और वज़अ को ख़ूबसूरत बनाने पर ख़ुसूसी तवज्जह दो। अपने घर को आरास्ता करने और अपने डाइंग रूम को सलीक़े से तर्तीब देने वाला और शौहर, बच्चे अ़जीजो-अक़ारिब और हमजोलियों और सहेलियों के साथ हुस्ने सुलूक करने का ख़ूब एहतिमाम करो। उनके साथ ख़न्दा पेशानी और ख़ुश मिजाजी से पेश आओ और अपने दिल में उनके लिये फ़राख़ी पैदा करो।

मैं तुम्हें गुनाहों से बचने की तल्क़ीन करता हूँ इसलिये कि गुनाह हुज्न व मलाल का सबब बनते हैं। ख़ास तौर पर उन गुनाहों से बचने की कोशिश करो जिनमें अक्सर ख़्वातीन मुब्तला हैं। ग़ैर महरमों को देखना, नुमूद व नुमाइश, ग़ैर महरमों के साथ अकेले में बैठना, लअ़न-तअ़न, ग़ीबत, बदकलामी और शौहर की नाशुक्री और उसके हुक़ूक़ से रूगर्दानी और उसके हुस्ने सुलूक का अ़द्मे एतराफ़। ये ऐसे गुनाह हैं जिनमें हमारे समाज की अक्सर औ़रतें शामिल हैं इल्ला मा शाअल्लाह जिन पर अल्लाह की ख़ुसूसी रहमत है। बारी तआला के ग़ज़ब से बचो जिसकी शान बुलंद व बरतर है। अल्लाह अ़ज्ज व जल्ल का तक़वा इख़्तियार करो क्योंकि अल्लाह तआला का तक़वा ही ख़ुशबख़्ती लाता है और रोशन ज़मीरी अ़ता करता है। जब ग़म का सामना हो और पे-दर्पे ग़म् टूट पड़ें तो उस वक़्त तुम कलिमए तय्यिबा का विर्द करो ला इला-ह इल्लल्लाह अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।

Scanned by CamScanner

किरणें

فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ

'सब्र ही बेहतरीन है।' (सूरह यूसुफ़ 12 : 18)

तुम लाखों से बेहतर हो

ग़म तुम्हें पापोश का है देखते इसको नहीं
हाथ जिसका कट चुका जो पांव से मजबूर है

दुनिया पर एक ताइराना (सरसरी) निगाह डालो, यहाँ तुम्हें अस्पतालों में हजारों मरीज़ मिलेंगे जो बीमारी और मुसीबतों के शिकार हैं और सालों-साल से इस मुसीबत में मुब्तला हैं। यहाँ जेलों को देखो, उनमें हजारों लोग तंग सलाख़ों के पीछे क़ैदी बने जिंदगी के बाक़ी बचे दिन गुजार रहे हैं और उनकी जिंदगियाँ बर्बाद और ख़ुशियाँ तबाह हो चुकी हैं। दिमाग़ी अस्पतालों में हजारों लोग ऐसे हैं जो अपना जहनी तवाजुन खो बैठे हैं, उनकी अक़्ल काम नहीं करती और वो पागल क़रार दिये जा चुके हैं। क्या यहाँ बहुत से गुरबा व मसाकीन ऐसे नहीं हैं जो ख़ैमों, झुगियों और झोंपड़ियों में रहते हैं और जिनको खाने के लिये रोटी का एक लुक़्मा भी मुयस्सर नहीं है? क्या दुनिया में ऐसी औरतें नहीं हैं जिनके बच्चे एक साथ हादसे का शिकार होकर दाग़े मुफ़ारक़त दे गये? क्या ऐसी औरतें नहीं हैं जिनकी बीनाई हमेशा के लिये चली गई, या जिनकी समाअत जाती रही, या जिनके हाथ और पांव मफ़्लूज (पैरालाइसिस) हो गये, या जिनका दिमाग़ काम करना बंद हो गया, या जिनको निहायत मुहलिक बीमारी जैसे कैंसर वग़ैरह हो गया हो?

लेकिन तुम्हारा जिस्म सहीह सलामत है और तुम्हारी सेहत अच्छी है। तुम अमन, सलामती, ख़ुशी और सुकून के साथ जिंदगी गुजार रही हो, तुम उन नेमतों पर अल्लाह के सामने सज्दए शुक्र बजा लाओ और अपने अवक़ात को ऐसी बातों में ज़ाएअ (बर्बाद) मत करो जिनसे अल्लाह सुब्हानहू व तआला ख़ुश नहीं होता। टेलीविज़न के उन चैनलों को खोलकर घण्टों उनके सामने मत बैठो जिनमें बेहूदा, फ़ोहश और बेवक़ूफ़ाना प्रोग्राम पेश किये जाते हैं। जो रूह को बीमार करने वाले हैं, जिनसे हुज्न व मलाल में इज़ाफ़ा ही होता है और जिनकी वजह से इंसान इतना काहिल हो जाता है कि वो अपने काम को अंजाम देने से कतराता है। हाँ उनके मुक़ाबले में मुफ़ीद और नफ़ाबख़्श चीजों को इख़्तियार करो जैसे लेक्चर, कॉन्फ्रेंस और तिब्बी प्रोग्राम और उम्मते मुस्लिमा से जुड़ी ख़बरें और इसी तरह की चीजें। बेकार और रुतबो-याबिस (बेमतलब) फ़ोहश प्रोग्राम देखने से बचो जो अक्सर नश्र होते रहते हैं जिनसे शर्म व हया, इफ़्फ़त व वक़ार और दीनदारी जाती रहती है।

Scanned by CamScanner

किरणें

'एक घड़ी के बाद दूसरी ही घड़ी में मुश्किलात हल होने वाली हैं।'

अपने लिये जन्नत में एक क़स्र (महल) तामीर कर लो

बस कि हिर्स व आज से इंसाँ हुआ ख़्वार व गुलाम
है क़नाअत ही अगर समझो तो आजादी का नाम

देखो! कितनी नस्ले इंसानी गुजर गई? क्या लोग अपने माल व दौलत साथ ले गये? क्या वो अपने ख़ूबसूरत महल साथ ले गये? क्या वो अपने बुलंद मन्सब के साथ गये? क्या वो अपने चाँदी और सोने के जख़ीरे क़ब्रों में ले गये? क्या अपनी कारें और हवाईजहाज आख़िरत में ले गये? नहीं! हर्गिज नहीं! वो अपने कपड़े और मल्बूसात तक छोड़ गये। सिर्फ़ कफ़न में लपेटकर क़ब्रों में दफ़न कर दिये गये और वहाँ उनसे सवालात किये गये हैं, 'तुम्हारा रब कौन है? तुम्हारे नबी कौन हैं? और तुम्हारा दीन क्या है?' इसलिये उस दिन की तैयारी करो और दुनिया के माल व मताअ पर ग़म और अफ़सोस न करो क्योंकि ये सब हक़ीर और आख़िरकार ख़त्म होने वाले हैं और नेक आमाल ही बाक़ी रहने वाले हैं। अल्लाह सुब्हानहू व तआला का इर्शाद है,

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾

'जो शख़्स भी नेक अमल करेगा, चाहे वो मर्द हो या औरत, बशर्तेकि हो वो मोमिन, उसे हम दुनिया में पाकीजा जिंदगी बसर करायेंगे और (आख़िरत में) ऐसे लोगों को उनके अज्र उनसे बेहतरीन आमाल के मुताबिक़ बख़्शेंगे।' (सूरह नहल 16 : 97)

मर्ज़ एक ख़ुशी का पयाम लेकर आता है, आफ़ियत एक जेवर है जिसकी क़ीमत देनी पड़ती है।

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ

'नहीं है कोई इलाह मगर तू, पाक है तेरी जात, बेशक मैंने क़ुसूर किया।'

(सूरह अम्बिया 21 : 87)

अपने हाथों अपने दिल को बर्बाद न करो

अहानत के अस्बाब, अहले करम के!
जमाना! ये सामाँ, ये सब कुछ दिये जा

ऐसी तमाम चीजों से बचो जो तुम्हारे वक़्तों (समय) को बर्बाद करने वाली हैं। ग़ैर अख़्लाक़ी मज़ामीन और मवाद पर मुश्तमिल रसाइल, नंगी तस्वीरें, बुरे अफ़्कार, फ़ोहश लिटेचर, ग़ैर अख़्लाक़ी अफ़साने और नाविल वग़ैरह। तुम पर वाजिब है कि मुफ़ीद और नफ़ाबख़्श चीजों को इख़्तियार करो, जैसे इस्लामी मजल्लात मुफ़ीद किताबें और कार आमद मज़ामीन और ऐसे मक़ालात जो बन्दे को दुनिया और आख़िरत दोनों में नफ़ा पहुँचायें। इसलिये कि कुछ किताबें और मक़ालात इंसान के दिमाग़ में शक पैदा करते हैं और दिलों में शुब्हात और इन्हिराफ़ को जन्म देते हैं। ये बेदीन तमद्दुन और मुन्हरिफ़ स़क़ाफ़त (कल्चर) के अस़रात हैं जो आ़लमे कुफ़्र से हमारे यहाँ दर आमद हुई है और जिसने पूरे आ़लमे इस्लाम को अपनी लपेट में ले लिया है।

याद रखो! बेशक अल्लाह अ़ज्ज व जल्ल के पास ग़ैब के ख़ज़ानों की कुन्जियाँ हैं और वही है जो हुज़्न व मलाल और ग़म व अन्दोह को दूर करता है। वो जिंदा जावेद और दुआओं को सुनने वाला है। उसके सामने दुआ के लिये हाथ फैलाओ और बार-बार और हर वक़्त ये दुआ करती रहो, **अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ुबि-क मिनल् हम्मि वल्हुजनि व अऊ़ज़ुबि-क मिनल् अ़ज्जि वल्कसलि व अऊ़ज़ुबि-क मिनल बुख़्लि वल्जुब्नि वल्बुख़्लि व अऊ़ज़ुबि-क मिन ग़-ल-बतिद्दैनि व क़हरिरिंजाल। 'ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह तलब करती हूँ ग़म और परेशानी से, कमजोरी और काहिली से और कन्जूसी और बुजदिली से और क़र्ज़ के बोझ और लोगों के अत्याचार से।'** (सहीह बुख़ारी : 6369)

तुम जब इन अल्फ़ाज़ को बार-बार दोहराओगी और इसके मअ़ना पर ग़ौर करोगी तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे रंज व ग़म, मुसीबतें और परेशानियाँ दूर फ़र्मा देगा और अल्लाह के हुक्म से तुम्हारी हालत अच्छी हो जायेगी। एक लम्हे में अल्लाह की तस्बीह, एक मिनट में कोई अच्छी फ़िक्र और एक घण्टे में कोई अच्छे अ़मल की बुनियाद डाल दो।

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ

'कौन है जो बेक़रार की दुआ सुनता है? जबकि वो उसे पुकारे।' (सूरह नमल 27 : 62)

तुम्हारा मामला उस रब के साथ है

करके पामाले हवादिस़, ये जमाना एक दिन
हम सभों को पार के माहौल में लायेगा फिर

ख़ैर की बशारत दो, क्योंकि अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिये अज्रे अ़ज़ीम तैयार कर रखा है। अल्लाह सुब्हानहू व तआला का इर्शाद है, **'जवाब में उनके रब ने फ़र्माया, मैं तुममें से किसी का अ़मल ज़ाएअ़ (बर्बाद) करने वाला नहीं हूँ ख़्वाह मर्द हो या औ़रत।'** (सूरह आले इमरान 3 : 195)

अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने जिस तरह का वादा मर्दों से किया है उसी तरह का अज्रो-स़वाब का वादा औ़रतों से भी फ़र्माया है और उसने जिस तरह मोमिन मर्दों की तारीफ़ फ़र्माई है उसी तरह मोमिन औ़रतों की भी तारीफ़ की है, **'यक़ीनन जो मर्द और जो औ़रतें मुस्लिम हैं, मोमिन हैं, मुतीअ़ फ़र्मान हैं, रास्तबाज (सच्चे) हैं, साबिर हैं, अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं, अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं और अल्लाह को कस़रत से याद करने वाले हैं, अल्लाह ने उनके लिये मग़्फ़िरत और बड़ा अज्र तैयार कर रखा है।'** (सूरह अहज़ाब 33 : 35)

ये आयतें इस बात की तरफ़ इशारा करती हैं कि औ़रत मर्द की साथी और उसकी दोस्त और शरीके हयात है और उसका अज्र अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहाँ महफ़ूज़ है। लिहाजा तुम्हारे लिये वाजिब है कि घर और मुआशरे में ऐसे आ़माल का एहतिमाम करो जो अल्लाह अ़ज्ज व जल्ल की ख़ुश्नूदी का जरिया हों। तुम मुआ़शरे में एक अच्छी मिस़ाल क़ायम करो और उम्मत के नौ निहालों के लिये मीनारे नूर और एक आ़ला नमूना बन जाओ।

अपने लिये हज़रत आसिया, मरयम, ख़दीजा, आइशा और फ़ातिमा (रज़ि.) के उस्वए हसना को नमूना व आइडियल बनाओ। (अल्लाह उन सबसे राज़ी और ख़ुश हो) ये दुनिया की बरगुज़ीदा ख़्वातीन हैं जो पाकीजा मोमिनात थीं। दिन को रोजे रखती और रातों में क़ियाम करती थीं। अल्लाह उनसे राज़ी और ख़ुश हो और उनको अज्रे अ़ज़ीम से नवाजे। उनके नक़्शे क़दम पर चलो और उनकी सीरत को इख़्तियार करो। अल्लाह अ़ज्ज व जल्ल तुमको ख़ैर व आफ़ियत और इत्मीनान व सुकून अ़ता फ़र्माये।

यतीम के आँसू पौंछों, अल्लाह रहमान व रहीम अपने रिज़वान से सरफ़राज़ और जन्नत में तुम्हारी सुकूनत का सामान करेगा।

Scanned by CamScanner

किरणें

'क्या सुबह क़रीब नहीं है?' (सूरह हूद 11 : 81)

तुम हर हाल में फ़ायदे में हो

मत दिला तू आर मुझको गर्दिशे अय्याम से
आर आता है तुझे शायद मगर अंजाम से

तुम अल्लाह ही से अज्र व सवाब की उम्मीद रखो। अगर तुम पर रंज व ग़म और हुज़्न व मलाल का पहाड़ टूटे तो यक़ीन करो कि ये गुनाहों का कफ़्फ़ारा है। और अगर तुम अपनी औलाद में से किसी को खो दो तो जान लो कि वो अल्लाह वाहिद के हुज़ूर में तुम्हारी शफ़ाअत करने वाला है। और तुम्हारे जिस्म को कोई मर्ज़ या तकलीफ़ पहुँचे तो यक़ीन करो, इस पर तुमको अल्लाह के यहाँ अज्र मिलने वाला है और ये अज्र व सवाब अल्लाह अज्ज व जल्ल के यहाँ महफ़ूज़ है। अल्लाह के यहाँ फ़क़्रो-फ़ाक़ा, मर्ज़ और बीमारी पर अज्र है और उन मुसीबतों पर सब्र करने वालों के लिये अज्रे अज़ीम का वादा है। अल्लाह वह्दहू ला शरीक के यहाँ कोई चीज ज़ाएअ नहीं होती और अल्लाह अज्ज व जल्ल उसकी हिफ़ाज़त फ़र्माता है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहाँ अज्र व सवाब की हिफ़ाज़त की जाती है और यक़ीनन ये उन्हें आख़िरत में लौटाया जायेगा।

नमाज दिलों के खोलने की ज़मानत है और ग़म को दूर करने का जरिया है।

*****

वाय नाकामी मताअे कारवाँ जाता रहा
कारवाँ के दिल से एहसासे ज़ियाँ जाता रहा

इक़बाल

Scanned by CamScanner

दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब औरत

(2)

मोतियों के हार

Scanned by CamScanner

किरणें

'तो जो कुछ तुमको मैंने अ़ता किया है उसको लो और शुक्र करो।' (सूरह आ़राफ़ 7 : 144)

जरा उन नेमतों का शुमार करो जो अल्लाह ने तुमको दे रखी हैं

ख़ुदा से रख उम्मीदें अपनी वाबस्ता
जमीले सब्र का फिर देख तू सदक़ा

जब सुबह नमूदार हो तो जरा इस पर ग़ौर करो कि आज का सूरज ऐसे हजारों लोगों पर तुलूअ हुआ है जो परेशान हाल हैं लेकिन तुम बेशुमार नेमतों से बहरावर हो। आफ़ताब सैंकड़ों ऐसी औ़रतों पर भी तुलूअ हुआ है जो भूखी हैं लेकिन तुम्हारे पास खाने की चीजें वाफ़िर मिक़्दार में हैं। ये मुहरे ताबाँ हजारों ऐसी औ़रतों पर तुलूअ हुआ है जो क़ैद व बंद में जकड़ी हुई हैं लेकिन तुम आजाद और ख़ुद मुख़्तार हो। ये आफ़ताब हजारों ऐसी मस्तूरात पर रोशनी फैला रहा है जो मुसीबत जदा और ग़म की मारी हुई हैं लेकिन तुम ख़ुशनसीबी और सलामती के साथ हो। कितनी ऐसी औ़रतें हैं जिनके रुख़्सार आँसूओं से तर हैं, कितनी हैं जिनके दिल रंज व अलम से लख़्त-लख़्त हैं, कितनी हव्वा की बच्चियाँ हैं जिनके हलक़ से चीख़ने की आवाजें निकल रही हैं, लेकिन तुम ख़ुश व ख़ुर्रम हो और तुम्हारे लबों पर मुस्कुराहट सजी हुई है। अल्लाह का शुक्र अदा करो कि उसका करम और उसकी इनायतें और मेहरबानियाँ तुम पर बेहिसाब व बेशुमार हैं। आओ बैठो! थोड़ी देर अपना जायजा लो, गिनती और शुमार की मदद से मुहासबा (Self Care) करो। तुम्हारे पास चीजें, अम्वाल और नेमतें कितनी हैं? तुम्हारे पास कितनी मिक़्दार में ख़ुशियों के वसाइल और आसाइश के अस्बाब मौजूद हैं जिनसे तुम लुत्फ़ अंदोज होती हो? हुस्न, दौलत, औलाद, बुजुर्गों का साया, घर, वतन और ख़ुशगवार चीजें, रोशनी, हवा, मीठा पानी और ग़िज़ा और दवा? ख़ुश रहो! शादो-आबाद रहो और सारे ग़म भूल जाओ। चंद सिक्कों से फ़ुक़रा व मसाकीन की दुआ़यें और मुहब्बतें हासिल कर लो।

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'अल्लाह की लिखी हुई क़िस्मत पर राज़ी रहो और लोगों से बेनियाज हो जाओ।'

क़लील (कम) बेहतर है जो तुमको ख़ुशियों से हमकिनार करे उस कसीर (ज़्यादा) के मुक़ाबले में जो बाइसे रंज हो

भूली बिसरी फ़ज़ीलत की तशहीर का
हो गई हासिदों की जबाँ वास्ता

तुम्हारी जिंदगी का वो हिस्सा क़ाबिले क़द्र है जिसमें फ़रहत व सुरूर, ख़ुशी और सुकूने क़ल्ब है। वो जिंदगी जो क़नाअत के साथ बसर हुई है, उम्र का वो हिस्सा जो हिर्स व हवस, लालच और दुनिया तलबी में गुजरा बेकार है। वो तुम्हारी सेहत, आराम व सुकून और हुस्न व जमाल के लिये मुज़िर (नुक़सानदेह) भी है। क़नाअत की ज़िंदगी जो अल्लाह को पसंद है उसको इख़्तियार करो। अल्लाह की तक़दीर पर राज़ी रहो और उसकी लिखी हुई क़िस्मत पर हमेशा मुतमइन रहो। अपने मुस्तक़बिल के सिलसिले में पुर उम्मीद रहो। तितली की तरह रहो जो कितनी हल्की-फुल्की होती है लेकिन किस क़द्र ख़ुशनुमा और ख़ूबसूरत है। ग़ैर मुताल्लिक़ चीजों से बहुत कम सरोकार रखती है। एक फूल से दूसरे फूल पर उड़ती फिरती है। एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी तक, एक गुलिस्तान से दूसरे चमनिस्तान तक सैर करती फिरती है। या फिर शहद की रानी नहला बन जाओ जो फूलों का शफ़्फ़ाफ़ रस चूसती है और लजीज और शिफ़ाबख़्श चीज बनाती है। जब वो ऊद की शाख़ों पर बैठती है तो उसको तोड़ती नहीं, वो लजीज शरबत लेती है, लेकिन अजियत नहीं पहुँचाती, मुहब्बत के साथ मण्डलाती और उल्फ़त का मुजाहिरा करती है, ख़ुशियाँ बिखेरती और मसर्रतें लुटाती है। गोया वो एक जन्नती मख़्लूक़ है जो आसमान से जमीन पर मुहब्बत की मिठास बाँटने के लिये आई है।

अल्लाह तबारक व तआला तौबा करने वालों को पसंद फ़र्माता है, इसलिये कि वो अल्लाह तआला की तरफ़ पलटने और रुजूअ करने वाले हैं और हर हाल में उसका शुक्र अदा करते हैं।

*****

Scanned by CamScanner

'अल्लाह रब्बुल इज्जत का शुक्र व एहसान है जिसने मेरी परेशानियाँ दूर कर दीं।'

बादलों की तरफ़ देखो! जमीन में उड़ती हुई धूल की तरफ़ न देखो

मुसीबत में ही तेरे जोहरे मर्दाना खिलते हैं
जलाते ऊ़द व अ़म्बर को हैं तब ख़ुश्बू बिखरती है

बुलंद हिम्मती और हौसलामंदी इख़्तियार करो, ऊपर ऊँचाई पर चढ़ती जाओ और हमेशा पुर उम्मीद रहो। नाकामी का ख़्याल कभी दिल में न लाओ और मायूसी की बातों को जहन से यकलख़्त झटक दो। तुम्हें मालूम होना चाहिये कि जिंदगी लम्हों और मिनटों का मज्मूआ ही तो है। चींटी की तरह जांफ़िशानी करो और सब्र व स़बात इख़्तियार करो, अपनी कोशिश में हमेशा लगी रहो और तौबा भी करती रहो। अगर एक बार गुनाह हो जाये तो सौ बार तौबा करो। कुर्आन पाक हिफ़्ज करो और अगर एक बार भूल जाओ तो बार-बार याद करो। दो मर्तबा, तीन मर्तबा, दसियों मर्तबा। अहम बात ये है कि तुम किसी भी मरहले में ख़ुद को नाउम्मीद और नाकाम महसूस न करो। क्योंकि तारीख़ हर्फ़े आख़िर को नहीं जानती और अ़क़्ल किसी चीज के इख़्तिताम को तस्लीम नहीं करती बल्कि इस्लाह और तस्हीह की गुंजाइश हमेशा रहती है। तजुर्बा करना और ठोकरें खाना और अपनी ग़लतियों से सबक़ लेना, ये इंसान के साथ लगा हुआ है। जिंदगी एक जिस्म की तरह है अगर उसमें कोई ख़राबी हो जाये तो ऑपरेशान के जरिये से ठीक किया जा सकता है। इसी तरह जिंदगी एक इमारत की तरह है। अगर इमारत ख़स्ता हाल हो जाये तो उसकी मरम्मत, इस्लाह और तज्ईन मुम्किन है और उसको रंग व रोग़न के जरिये से नया रूप दिया जा सकता है।

नाकामी का ख़्याल दिल से निकाल दो, मर्ज़ का तसव्वुर जहन से झटक दो, परेशानी और मुसीबत के बारे में सोचना छोड़ दो। अल्लाह तबारक व तआ़ला का इर्शाद है, 'अल्लाह पर तवक्कल रखो, अगर तुम (वाक़ई) मोमिन हो।' (सूरह माएदा 5 : 23)

'गुनाह को तर्क करना जिहाद है और उस पर मुदावमत हक़ से इनाद (दुश्मनी) है।'

Scanned by CamScanner

किरणें

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

'तुम अहले ईमान को बशारत दे दो।' (सूरह बक़रा 2 : 25)

ईमान के साथ एक झोंपड़ी, सरकशी के साथ एक महल से बेहतर है

क्या ज़रूरत हासिदों की हम मलामत भी करें
उनके ग़म के वास्ते महम्मूद की अस्मत है बस

एक मोमिना जो झोंपड़ी में रहती है, अपने रब की इबादत करती है, नमाजे पंजगाना अदा करती है, रमज़ानुल मुबारक के रोजे रखती है, उस बेदीन ख़ातून से बेहतर है जो शानदार महल में रहती है और उसके पास ख़ुद्दाम और ऐश व इशरत की तमाम चीजें मौजूद हैं। लेकिन मोमिना जो एक ख़ेमे में रहती है, जौ की रोटी खाती है, मिट्टी के घड़े से पानी पीती है मगर उसके पास क़ुर्आन पाक, मुसल्ला और तस्बीह है उस औरत से बहुत बेहतर है जो बुलंद व बाला इमारत में मख़्मली बिस्तरों पर सोती है लेकिन कम नसीब अपने रब को नहीं जानती और न अपने मौला को याद करती है और न अपने प्यारे नबी (ﷺ) की पैरवी करती है। तुम्हें मालूम होना चाहिये कि ख़ुशबख़्ती की हक़ीक़त क्या है और सच्ची ख़ुशी किन बातों में है। ख़ुशी का मफ़्हूम वो नहीं है जो अक्सर लोग समझते हैं। अक्सर लोग उसको तंग और महदूद मआनी में इस्तेमाल करते हैं। वो ख़ुशबख़्ती को डॉलरों, दीनारों, रियालों और रूपयों से नापते हैं। वो क़ीमती कपड़ों, फ़र्शों, खाना-पीना, ख़ूबसूरत मकानों, चमकती कारों और इसी क़िस्म की दीगर चीजों में ख़ुशी तलाश करते हैं। हर्गिज नहीं! हजार बार हर्गिज नहीं! बल्कि सच्ची ख़ुशी तो दिल की ख़ुशी और ज़मीर (आत्मा) का इत्मीनान और रूहानी इम्बिसात है। हक़ीक़ी ख़ुशी दिल और दिमाग़ के सुकून और इत्मीनाने नफ़्स में है। एक मोमिना के लिये अमले सालेह, हुस्ने अख़्लाक़, क़नाअत और इस्तिक़ामत का एहतिमाम और बक़द्रे ज़रूरत सामाने जिंदगी पर ख़ुशी और इत्मीनान काफ़ी है।

'वो आदमी कैसे ख़ुश और मुत्मइन रह सकता है जो किसी बन्दए ख़ुदा या एक मुसलमान को सताता है।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ

'और तुम उस जात पर तवक्कल (भरोसा) करो जो जिन्दा जावेद है और जिसे मौत नहीं।'

(सूरह फ़ुरक़ान 25 : 58)

कामयाब जिंदगी के लिये औक़ात की तन्जीम करो

बहुत मुम्किन है शामे ग़म के पीछे
मेरी सुबहे बहाराँ आ रही हो

कोई अच्छी किताब पढ़ो या कोई अच्छे से लेक्चर का टेप सुनो। अल्लाह रब्बुल इज्जत के कलामे पाक की तिलावत सुनो। मुम्किन है कि एक आयत ही तुम्हारे दिल की गहराइयों में उतर जाये और तुम्हारे ज़मीर को बेदार कर दे और तुम को हिदायत के नूर से बहरावर कर दे और तुम्हारे दिल में जो शुकूक व शुब्हात के जाले हैं, वो ख़त्म हो जायें। या फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुन्नत जानने के लिये अहादीसे नबविया के मज्मूए जैसे **'रियाज़ुस्सालिहीन'** का मुतालआ करो। तुम उसमें अपनी रूहानी बीमारियों का सहीह इलाज पाओगी और अपने मसाइल का मुनासिब हल तुम्हें इसमें मिल जायेगा। इस किताब से हासिलशुदा मुफ़ीद मालूमात तुमको ख़ताओं और लग़्जिशों से दूर रखेगी और तुम्हारे मसाइल का हल पेश करेंगी। क़ुर्आन पाक और अहादीसे नबविया (ﷺ) का मुतालआ तुम्हारी रूहानी बीमारियों का इलाज है। तुम्हारे लिये ईमान की राहत और आँखों की ठण्डक नमाज में है और क़ल्ब की सलामती राज़ी-बरज़ा रहने में है। तुम्हारा सुकूने क़ल्ब क़नाअत में है और तुम्हारे चेहरे का हुस्न ख़न्दा पेशानी में है। तुम्हारे वक़ार की हिफ़ाजत पर्दे में है और तमानियते क़ल्ब अल्लाह तआला के ज़िक्र में है।

'मज्लूम की बद्दुआ से और महरूम के आँसू से बचो।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ

'जो कुछ भी नुक़सान तुम्हें हुआ उस पर तुम दिल शिकस्ता न हो और जो कुछ अल्लाह तुम्हें अता फ़र्माये उस पर फूल न जाओ।' (सूरह हदीद 57 : 23)

हमारी मसर्रत दूसरों के सामाने फ़रहत से मुख़्तलिफ़ (अलग) है

बिछड़े हुए को लायेगा लौटा के घर वही
टूटे हुए मरीज़ को देगा शिफ़ा वही

तुमसे किसने कहा कि तख़रीबी मूसीक़ी, मुख़र्रब अख़्लाक़ गाने, घटिया ड्रामे, बेकार क़िस्म के रसाइल और फ़ोहश फ़िल्में मसर्रत और सुरूर पैदा करती हैं? जिसने भी कहा, सरासर झूठ कहा है। ये सारे वसाइल बदबख़्ती के अस्बाब व दाई हैं, बुराई के रास्ते हैं और रंज व ग़म और हुज्न व मलाल के दरवाजे हैं। जैसाकि उन लोगों ने इसका ऐतराफ़ किया है जिनकी जिंदगी इस दश्ते वीराँ की सय्याही में गुजरी है और वो उनसे ताइब होकर सहीह रास्ते (सिराते मुस्तक़ीम) की तरफ़ पलटे हैं। तो तुम इस मायूसी और नामुरादी की जिंदगी से बचो जो फ़िज़ूलियात, बेकार और लानती चीजों का मज्मूआ (पुलिंदा) है और अल्लाह तबारक व तआला के सिराते मुस्तक़ीम से भटकाने वाली है। क़ुर्आन पाक की तरफ़ आओ और इसकी तिलावत से अल्लाह की ख़शियत हासिल करो और इसकी क़िरअत से नफ़ा उठाओ। फ़ायदेमन्द तक़रीरें , सबक़ हासिल होने वाले ख़ुत्बे और नफ़ाबख़्श सदक़ात और सच्ची तौबा से जिंदगी को संवार लो। आओ रूहानी मजालिस और रब्बानी अज्कार से ईमान को ताजा कर लो। अल्लाह की तरफ़ पलटो ताकि तुम्हारा दिल सुकून, इत्मीनान और अमन से भर जाये।

'क़ल्बे सलीम शिर्क, धोखा, फ़रेब कारी, हसद और कीने से पाक होता है।'

*****

Scanned by CamScanner

رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿٢٥﴾

'ऐ मेरे परवरदिगार! मेरा सीना खोल दे।' (सूरह ताहा 20 : 25)

सफ़ीन-ए-निजात पर सवार हो जाओ

तू ख़ुदा-ए-दो जहाँ है, मैं तेरा अ़ब्दे जलील
रहम कर मुझ पर कि कहते हैं तुझे रब्बे जलील

मैंने दर्जनों फ़िल्मी स्टारों, हिरो और हिरोइन नाचने और गाने वालों की कहानियाँ पढ़ी हैं जिन्होंने लग़्व, फ़िज़ूल और बेहूदा कामों में अपनी ज़िंदगी बर्बाद कर दी। जिनमें कुछ मर चुके हैं और कुछ अभी ज़िंदा हैं। मैंने कहा, हाय अफ़सोस! कहाँ हैं मुसलमान मर्द और औ़रतें, मोमिनीन और मोमिनात, सच्चे मर्द और सच्ची औ़रतें, रोज़ेदार मर्द और रोज़ेदार औ़रतें, इबादत गुज़ार मर्द और इबादत गुज़ार औरतें और अल्लाह से डरने वाले मर्द और डरने वाली औ़रतें? क्या ये मुख़्तसर क़ीमती ज़िंदगी ऐसे ही बेहूदा कामों में और फ़िज़ूल बातों में बर्बाद करने के लिये है? क्या ज़िंदगी सिर्फ़ इसलिये है कि उसे मअ़सियत और मुहमल क़िस्म की बातों में गुज़ार दिया जाये? क्या तुम्हारे पास इस दुनिया में इस ज़िंदगी के अ़लावा कोई ज़िंदगी है? क्या तुम्हारे पास इन दिनों के अ़लावा भी कुछ दूसरे दिन हैं? क्या तुमने अल्लाह तआ़ला से ये अ़हद व पैमान कर रखा है कि तुमको कभी मौत नहीं आयेगी? नहीं! हर्गिज़ नहीं! वल्लाह ये झूठ है, वहम व गुमान है और नाकाम तमन्नायें और आरज़ूऐं हैं।

अपने नफ़्स का मुहासबा करो और तब अपनी ज़िंदगी का एक नया क़ाबिले अ़मल मन्सूबा बनाओ, सख़्त जद्दो-जहद करो, ख़ताओं से बचो और क़ाफ़िले हक़ में शामिल होकर सफ़ीनए निजात में सवार हो जाओ।

एक अ़क़्लमंद औ़रत एक बेआब व गयाह सहरा को ख़ूबसूरत गुलिस्तान में बदल देती है।

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'आराम, परेशानियों के बाद ही है।'

(मुस्नद अहमद : 1/307, मुस्नद अब्द बिन हुमैद : 636, अस्सुन्नह लिइब्ने अबी आ़सिम : 316, मुस्तदरक हाकिम : 3/624, अल्बानी ने इसे सहीह कहा है। अस्सहीहा : 2382)

बारगाहे इलाही में सज्दा ख़ुशनसीबी की कुँजी है

सआ़दत माल की कस़रत नहीं है
सआ़दत तो हक़ीक़त में है तक़्वा

ख़ुशबख़्ती की किताब में पहला पेज और हर दिन मुक़र्ररह फ़राइज़े मन्सबी में पहला अ़मल फ़ज्र की नमाज़ है। तो अपने दिन का मुबारक इफ़्तिताह (Start) और अपनी सुबह की इब्तिदा फ़ज्र की नमाज़ बाजमाअ़त से करो। तब तुम अल्लाह की अमान में, उससे अ़हदो-पैमान के साथ उसकी हिफ़ाज़त में और उसकी इनायत के साथ उसकी ज़िम्मेदारी के तहत उसकी पनाह में आ जाओगी और उस वक़्त तुम से हर क़िस्म की बुरी बातें रोक ली जायेंगी। उस दिन में कोई ख़ैर व बरकत नहीं जिसकी इब्तिदा फ़ज्र की नमाज़ से नहीं होती। उस दिन को अल्लाह तआ़ला ज़िंदगी नहीं बख़्शता जिसकी सुबह फ़ज्र की नमाज़ से न हुई हो। ये मक़्बूलियत की पहली अ़लामत है और कामयाबी की किताब का यही उन्वान है। इ़ज़्ज़त, तम्किनत, कामयाबी, कामरानी और फ़तह व नुसरत की यही अ़लामत है। मुबारकबाद है उसके लिये जो फ़ज्र की नमाज़ पढ़ती है और ख़ुशख़बरी है उस मोमिना के लिये जो उसका एहतिमाम और मुहाफ़िज़त करती है। उसकी आँखें ठण्डी हों जो फ़ज्र की नमाज़ क़ायम करती और उसकी हिफ़ाज़त करती है और बड़ी नाकामी, बदबख़्ती और नहूसत उसके लिये जो उसको ज़ाएअ़ कर देती है।

'फ़िज़ूल बहसें और लायअ़नी (बेमतलब की) बातें सफ़ाई क़ल्ब और सुकून को ग़ारत कर देती हैं।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

اَلَمۡ نَشۡرَحۡ لَكَ صَدۡرَكَ ﴿١﴾

'क्या हमने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिये खोल नहीं दिया?' (सूरह इन्शिराह 94 : 1)

वो ख़्वातीन जिन्होंने जाँबाज़ बहादुरों को जन्म दिया

हर ग़म में तेरे साथ इआनत उसी की थी
तेरी दुआए शब की एजाबत उसी की थी

हज्जाज बिन यूसुफ़ के सामने जुरअत व हिम्मत के साथ हमकलाम होने वाली और अपने रब पर भरोसा करने वाली औरत की तरह बनो जिसके बेटे को हज्जाज ने क़ैद कर लिया था और उसने उसके सामने अल्लाह की क़सम खाकर कहा था, मैं तुम्हारे बेटे को ज़रूर क़त्ल करूँगा। जवाब में उसकी जुरअतमन्द ख़ातून ने कहा था, 'तू अगर क़त्ल न भी करे तो भी उसे एक दिन मरना ही है।'

उस औरत की तरह हो जाओ जिसको अल्लाह पर बड़ा तवक्कल था जब उसकी मुर्गियाँ अपने डरबे में उसकी नज़रों से ओझल थीं तो उसने आसमान की तरफ़ देखा और अल्लाह तआला से दुआ की, 'ऐ अल्लाह! मेरी मुर्गियों के डरबे की हिफ़ाज़त फ़रमाइयो, तू बेहतरीन हिफ़ाज़त करने वाला है।'

हज़रत असमा बिन्ते अबी बकर (रज़ि.) की तरह कुव्वते ईमानी की एक मज़बूत चट्टान बन जाओ जब उनके बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) को शहीद करने के बाद उनकी लाश को मस्लूब कर दिया गया तो उन्होंने वो मशहूर तारीख़ी जुम्ला कहा, **'आख़िर ये शहसवार कब तक नीचे नहीं उतरेगा?'** (अर्रूज़तुल फ़ैहा फ़ी आलामिन्निसाय : 1/79)

या फिर हज़रत ख़न्सा (रज़ि.) की तरह बनो, जिनके चार बेटे राहे जिहाद में शहीद हुए तो उन सब की शहादत पर उन्होंने कहा था, **'उस अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का शुक्र है जिसने मुझे अपनी राह में शहीद होने वाले बेटों की माँ होने का शर्फ़ बख़्शा।'** (अल्इस्तीआब लिइब्ने अब्दुल बर्र : 4/1829, अल इसाबा लिइब्ने हजर : 8/112, उस्दुल ग़ाबा : 7/89) उन ख़्वातीन की सीरत का मुतालआ करो और उनके शानदार तारीख़ी कारनामों पर नज़र डालो।

'नसीमे सहर से नर्म रवी, मुश्क से ख़ुश्बू और पहाड़ से मज़बूती और सबात का वस्फ़ सीखो।'

Scanned by CamScanner

किरणें

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۹﴾

'दिल शिकस्ता न हो, ग़म न करो, तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम मोमिन हो।'

(सूरह आले इमरान : 139)

इस ज़मीन की पस्तियों पर आसमान बन कर रहो

तूले ग़मे हयात से दिल क्यों हो बेक़रार
ऐसी भी कोई रात है जिसकी सह्र नहीं

तुम अपने हुस्नो-जमाल में आफ़ताब से बढ़कर हो और इत्रबेज़ी में ऊद और मुश्क व गुलाब से बेहतर, इज़्ज़त व वक़ार में चाँद से अरफ़अ व आला और अपनी शफ़क़त व रहमत में मूसलाधार बारिश से कहीं ज़्यादा। ईमान के साथ अपने जमाल की हिफ़ाज़त करो, क़नाअत के साथ अल्लाह की ख़ुश्नूदी की, हिजाब के ज़रिये से इफ़्फ़त व अस्मत की। तुम्हारा ज़ेवर सोने-चाँदी, हीरे-जवाहरात से बना हुआ नहीं है, वो तो सह्र के वक़्त नमाज़े दोगाना है, अल्लाह के लिये रोज़े रखना और पोशीदा सदक़ा जिसका इल्म अल्लाह के सिवा किसी को नहीं। गर्म आँसूओं के क़तरों से चेहरे का वुज़ू जो ख़ताओं को धो डालते हैं। बन्दगी की बिसात पर सज्द-ए-तवील और अल्लाह तबारक व तआला से शर्म व हया जब शैतान बुरे काम पर उभारे और गुनाह की तरफ़ माइल करे। क़ीमती और ख़ूबसूरत लिबास तो तक़वा का लिबास है, उसको ज़ैबतन कर लो यक़ीनी तौर पर तुम दुनिया की सबसे ख़ूबसूरत हसीना हो जाओगी ख़्वाह तुम्हारा ज़ाहिरी लिबास मामूली फटा-पुराना ही क्यों न हो। इज़्ज़त व वक़ार के अबा को पहन लो क्योंकि तुम दुनिया की सबसे क़ाबिले क़दर ख़ातून हो अगरचे बज़ाहिर तुम्हारे पांव नंगे हैं।

ख़बरदार काफ़िरा, फ़ाजिरा, साहिरा और आबरू बाख़्ता औरतों की ज़िन्दगी की ज़ाहिरी चमक-दमक तुम्हारी आँखों को चकाचोंध न करे क्योंकि वो जहन्नम की आग का ईंधन बनने वाली हैं,

لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ﴿۱۵﴾

'उस (आग) में नहीं झुलसे जायेंगे मगर बदबख़्त लोग।' (सूरह लैल : 15)

'तुम ज़िन्दगी की हर मोड़ पर तारीकी का सामना करोगी, तुम्हारे सामने इसके सिवा कोई हल नहीं कि अपनी ज़ात में हिदायत की शमअ़ रोशन कर लो।'

*****

Scanned by CamScanner

दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब औरत

(3)

अनमोल गोहर (मोती)

शामे ग़म लेकिन ख़बर देती है सुबहे ईद की

जुल्मते शब में नज़र आई किरण उम्मीद की

इक़बाल

Scanned by CamScanner

किरणें

सुबह लाई है एक नया पैग़ाम
शाम आयेगी इन्तिज़ार न कर

तुम्हारा मक़ाम बुलंद भी है और क़ाबिले एहतिराम भी

बहुत से काम ऐसे हैं कि जिनसे भागते हो तुम
नतीजा उनका देखोगे तो फिर महमूद पाओगे

ऐ मुस्लिमा सादिक़ा! ऐ मोमिना आरिफ़ा! ऐ अनाबते इलाही की जोया! सरसब्ज़ नख़्ला की तरह ज़िन्दगी गुज़ार जो शर से बुलंद होती है, अज़ियत और अज़ियत रसानी से दूर होती है, उस पर पत्थरों की बारिश होती है और वो जवाबन स़मररेज़ (फल गिरा रही) होती है। मौसमे सरमा हो या गरमा, वो हमेशा सदाबहार और सरसब्ज़ होती है। उसकी हर चीज़ कारआमद और नफ़ाबख़्श होती है। घटिया और पस्त ज़हनियत से अपने मक़ाम को बुलंद रख और हर छोटी-बड़ी नापाकी से ख़ुद को दूर रख और उन बातों से ख़ुद को महफ़ूज़ व मामून रख जो तुम से तुम्हारी शर्म व हया के ज़ेवर छीन लें।

तुम्हारी गुफ़्तगू ज़िक्र, तुम्हारी ख़ामोशी फ़िक्र और तुम्हारी नज़रे नसीहत पज़ीर हो। तब तुम सच्ची ख़ुशी और राहत पाओगी और जहाँ कहीं तुम जाओगी लोग तुम्हारा ख़ैर मक़दम करेंगे और तुम्हारी तारीफ़ में हमेशा रतबुल्लिसान रहेंगे और तुम्हारे हक़ में दुआए ख़ैर करेंगे।

अल्लाह तबारक व तआला के फ़ज़्ल से मसाइब के बादल छट जायेंगे, ख़ौफ़ के हैबतनाक देव ग़ायब हो जायेंगे और पज़मुर्दगी पैदा करने वाले फ़िक्री इन्तिशार ख़त्म हो जायेंगे। पुरसुकून नींद सो जाओ कि मोमिनीन की दुआयें तुम्हारे साथ हैं। जागो कि तुम्हारी तारीफ़ में तराने गाये जा रहे हैं।

उस वक़्त तुम्हें एहसास होगा कि सच्ची ख़ुशी इस बात में नहीं है कि तुम्हें क्या कुछ हासिल हुआ है बल्कि हक़ीक़ी (वास्तविक) मसर्रत अल्लाह की ताअत व बन्दगी में है। दिली मसर्रत न तो नये लिबासों में है और न बन्दों की चाकरी और उनके सामने हाज़िर बाशी में बल्कि हक़ीक़ी ख़ुशी तो रब्बे करीम की इताअत और बन्दगी में है।

'अपने आपसे मायूस न होना, हालात बदलते रहते हैं। लेकिन उनकी रफ़्तार सुस्त होती है। राह में हिम्मत शिक्न संगे गिराँ आयेंगे लेकिन उन्हें ख़ातिर में न लाना, अपनी राह खोटी न करना।'

'ख़बरदार! राह की दुश्वारियाँ तुम्हें मग़लूब (पराजय) न कर दें।'

Scanned by CamScanner

किरणें

ادْعُونِيٓ أَسْتَجِبْ لَكُمْ

'तुम मुझे पुकारो मैं तुम्हारी दुआयें कुबूल करूँगा।' (सूरह मोमिन 40 : 60)

ये बात कहता है बन्दों से रब्बे अर्शे अज़ीम
पुकारो मुझको मैं सबकी दुआयें सुनता हूँ

नेमतों का ऐतराफ़ करो और उसका हक़ अदा करो

मुसीबत में भी नेमतें हैं हज़ार
है वाजिब करें शुक्रे परवरदिगार

अल्लाह तआला की नेमतों से शुक्र व इताअत के साथ फ़ायदा उठाओ। पानी से प्यास बुझाओ, वुज़ू और गुस्ल करो। सूरज से रोशनी और गर्मी हासिल करो। चाँद की चाँदनी और हुस्नो-जमाल से आँखें ठण्डी करो। दरख़्तों से फल और नहरों से सैराबी हासिल करो। समुन्द्र के नज़ारे करो और सब्ज़ाज़ार मैदानों में चहल क़दमी करो। फिर उसके बाद इलाहे अज़ीज़ व ग़फ़्फ़ार और शहनशाह जब्बार व क़ह्हार का शुक्र अदा करो। अल्लाह तबारक व तआला के इस एहसाने अज़ीम और अताए करीम से जो उसने तुम्हारे साथ किया है, ख़ूब फ़ायदा उठाओ। लेकिन ख़बरदार! अल्लाह की नेमतों का इंकार न करना। वो कैसे बदनसीब हैं जो :

يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا

'वो अल्लाह की नेमतों का इदराक रखते हैं लेकिन फिर भी इंकार करते हैं।' (सूरह नहल:83)

ख़बरदार! कुफ़राने नेमत से बचो। गुलाब के काँटों पर नज़र डालने से पहले उसके हुस्नो-जमाल का मुशाहिदा कर लो। तमाज़ते आफ़ताब (सूरज की किरणों) का शिक्वा करने से पहले उसकी रोशनी से फ़ायदा उठा लो। रात की तारीकी का गिला करने से पहले उसके सुकून और ख़ामोशी का तसव्वुर करो। तुम उन चीज़ों पर मन्फ़ी और मायूसकुन गुनाह क्यों डालो? रहमतों और ज़हमतों में क्यों तब्दील करो जैसाकि कहा गया :

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللهِ كُفْرًا وَّأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾

'क्या तुमने उन लोगों के हाल पर ग़ौर नहीं किया जो अल्लाह तआला की नेमत को कुफ़राने नेमत में बदल देते हैं।' (सूरह इब्राहीम 14 : 28)

तुम उन नेमतों को हुस्ने कुबूलियत के साथ लो और उन पर अल्लाह का शुक्र अदा करो।

'ख़ता से सवाब की तरफ़ पलटना। तवील और पुरख़तर सफ़र है। लेकिन ये एक हसीन वादी की तरफ़ है।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللهِ

'अल्लाह की रहमत से मायूस न हो।' (सूरह ज़ुमर 39 : 53)

तौबा और इस्तिग़फ़ार मफ़ातीहुर्रिज़्क़ (रिज़्क़ की चाबियाँ) हैं

रहमत की घटायें छाती हैं
जब आँखें अश्क बहाती हैं
जब अश्के निदामत बहता है
फिर रिज़्क़ की बारिश होती है

एक ख़ातून ने बयान किया, मेरे शौहर का इन्तिक़ाल हो गया और उस वक़्त मैं तीस साल की हो चुकी थी। मैं पाँच बच्चों की माँ थी। दुनिया मेरी आँखों के सामने तारीक हो गई। मैं दिन-रात रोती रहती यहाँ तक कि मेरी बीनाई मुतास्सिर (प्रभावित) हो गई और मुझे आँखों की रोशनी के ख़त्म हो जाने का अन्देशा होने लगा। मैं मायूसी, पज़मुर्दगी और अफ़सुर्दगी का शिकार हो गई और अपने आपको बदनसीबों में शुमार करने लगी। मेरे बच्चे छोटे थे और मेरी आमदनी गुज़र-बसर के लिये नाकाफ़ी थी। मैं उस रक़म में से थोड़ा-थोड़ा ख़र्च कर रही थी जो मेरे वालिद मेरे लिये छोड़ गये थे। एक दिन मैंने अपने कमरे में रेडियो का स्वीच ऑन किया। उस वक़्त इशाअते कलाम मजीद का प्रोग्राम नश्र हो रहा था और उस वक़्त मेरे कानों से जो आवाज़ टकराई वो ये थी :

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, **'जो कसरत से इस्तिग़फ़ार करता है अल्लाह तबारक व तआला उसके सारे ग़म दूर कर देते हैं और हर क़िस्म की तंगी और परेशानी से निकाल देते हैं।'** (सुनन अबी दाऊद, किताबुल वित्र, बाब फ़िल्इस्तिग़फ़ार : 1518, सुनन इब्ने माजा, किताबुल अदब, बाब फ़िल्इस्तिग़फ़ार : 3819, मुस्नद अहमद : 1/248, सुननुल कुबरा लिन्नसाई : 10217, शैख़ अल्बानी रह. ने इसे ज़ईफ़ कहा है। हकम बिन मुस्अब रावी मजहूल है। ज़ईफ़ा : 705)

तो मैं उसके बाद कसरत से तौबा और इस्तिग़फ़ार करने लगी और मैंने अपने बच्चों को भी ऐसा करने की ताकीद की। अल्लाह की क़सम! अभी छः माह से ज़्यादा अरसा (वक़्त) भी नहीं गुज़रा था कि मेरा क़ानूनी मुशीर आ वारिद हुआ जिसने मेरी पुरानी जायदाद का सौदा किया था। उसने कई लाख की ख़तीर रक़म पेश की। मेरा बेटा उस सूबे का पहला तालिबे इल्म था जिसने कुरआन पाक कामिल हिफ़्ज़ किया और लोगों की तवज्जह और इनायत का मर्कज़ बन गया। मेरा घर ख़ैर व बरकत से भर गया और मैं आराम व आसाइश के साथ ख़ुशियों से भरपूर ज़िन्दगी गुज़ारने लगी। मेरे तमाम बेटे और बेटियाँ सआदतमन्द और सालेह हैं। रंज व ग़म, मुसीबत व आलाम और तंगी और तंगदस्ती सब दूर हो चुकी हैं और अब मैं अपने आपको ख़ुशनसीबों में शुमार करती हूँ।

'अगर तुमने ख़ुद को मायूसी के हवाले कर दिया तो तुम कुछ भी नहीं कर सकतीं और कभी ख़ुश बख़्ती और कामयाबी से हमकिनार नहीं हो सकतीं।'

Scanned by CamScanner

किरणें

إِنَّهُ لَا يَا۟يْـَٔسُ مِن رَّوْحِ ٱللَّهِ إِلَّا ٱلْقَوْمُ ٱلْكَٰفِرُونَ ﴿٨٧﴾

'अल्लाह की रहमत से काफ़िर लोग ही मायूस होते हैं।' (सूरह यूसुफ़ 12 : 87)

दुआयें, बलायें दूर करती हैं

बलायें भेजता है दोस्तों पर
कभी है आज़माता नेमतों से

मेरे एक आबिद व ज़ाहिद और नेक तीनत दोस्त हैं जिनकी अहलिया को कैंसर की बीमारी लाहिक़ हो गई। उनके तीन बेटे थे। वो मायूसी का शिकार हो गये और दुनिया उनकी आँखों के सामने तारीक हो गई। किसी आलिमे दीन ने उनको मशवरा दिया कि वो अपनी बीवी के लिये रातों में क़ियाम का एहतिमाम करें और दुआए सहरगाही और इस्तिग़फ़ार का सहारा लें और क़ुरआन पाक पढ़कर आबे ज़मज़म पर दम करें। चुनाँचे वो बराबर ये अमल करते रहे। अल्लाह तआला ने उनकी दुआ के लिये क़ुबूलियत के दरवाज़े खोल दिये। उन्होंने ज़मज़म से अपनी अहलिया को गुस्ल दिया और उस पर दम किया हुआ पानी पिलाते रहे। वो फ़ज्र की नमाज़ के बाद से इशराक़ तक अपनी अहलिया के साथ ज़िक्र करने के लिये बैठते और मग़रिब की नमाज़ के बाद से इशा तक साथ-साथ ज़िक्र में मशग़ूल होते, तौबा व इस्तिग़फ़ार और दुआओं का एहतिमाम करते। अल्लाह तबारक व तआला ने उनकी दुआयें सुन लीं और जो मर्ज़ था अल्लाह तआला ने उसे दूर कर दिया। अल्लाह तआला ने उनको शिफ़ायाब कर दिया और कैंसर के मुहलिक मर्ज़ (जानलेवा बीमारी) से आफ़ियत दी। उनकी चमड़ी और बालों को पहले से ज़्यादा हसीन व जमील बना दिया। उसके बाद तौबा और इस्तिग़फ़ार और क़ियामुल्लैल उनकी ज़िन्दगी का एक लाज़िमी जुज़ (हिस्सा) बन गया।

सुब्हान अल्लाह! सारी हम्द व सना उसी के लिये है जो बीमारी से शिफ़ा देता है और सेहत व तवानाई अता करता है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं और उसके सिवा कोई पालनहार नहीं।

तो ऐ मेरी बहन! जब तू बीमार हो तो उसकी तरफ़ रुजूअ कर और दुआ, तौबा और इस्तिग़फ़ार कसरत से (ख़ूब) कर। तुम्हारे लिये बड़ी ख़ुशख़बरी है कि अल्लाह तुम्हारी दुआओं को सुन रहा है और उन्हें क़ुबूल कर रहा है, मुसीबतों को दूर कर रहा है और बुराइयों को दफ़ा (दूर) कर रहा है।

अम्मंय्-युजीबुल मुज़्तर्र इज़ा दआहु 'ज़रा सोचो तो! कौन है जो मुज़्तर (परेशानहाल) की पुकार सुनता है जब वो पुकारते हैं।'

'माज़ी (Past) और हाल (Present) का जायज़ा लो। ज़िन्दगी तजर्बात का मज्मूआ है। तो इंसान के लिये उन तजर्बात से कामयाब गुज़रना ज़रूरी है।'

Scanned by CamScanner

'बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला मेहरबान है।'

एक नाउम्मीदी हज़ार उम्मीद अस्त (है)

मायूसी और नाउम्मीदी को अपने क़रीब फटकने न दो!

तंगी और बदहाली में याद करो उस मालिक को
जिसने हर हर मौक़े पर फ़ज़्ल किया, ईनाम दिया
ज़िन्दगी में हैं जो नशीब व फ़राज़
नेमतों का ये सिलसिला है दराज़

एक नौजवान जेल की आहिनी सलाखों के पीछे डाल दिया गया। अपनी माँ का वो इकलौता बेटा था जो उसके बुढ़ापे का वाहिद सहारा था। माँ की रातों की नींद उड़ गई और दिन का सुकून ग़ारत हो गया। वो गिरया व ज़ारी करती रही जिस हद तक वो कर सकती थी। फिर अल्लाह तबारक व तआला ने उसकी इस अ़ज़ीम कलिमे की तरफ़ रहनुमाई की, **ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह 'अल्लाह के सिवा किसी मैं कोई ताक़त और कुव्वत नहीं है।'** (सहीह बुख़ारी, किताबुद्दअवात, बाब अद्दुआउ इज़ा अ़ला उक़्बा : 6384, सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़िक्र वद्दुआ, बाब इस्तिहबाब ख़फ़्ज़ुस्सौत बिज़्ज़िक्र : 2704, सुनन अबी दाऊद : 1526, सुनन तिर्मिज़ी : 3461, सुनन इब्ने माजा : 4/38) ये वो बाबरकत कलिमा है जिसे जन्नत के ख़ज़ाने से ताबीर किया गया है। वो बुज़ुर्ग ख़ातून इस मुबारक कलिमे का बार-बार विर्द करती रही। कुछ ही दिनों के बाद जबकि वो अपने बेटे की रिहाई की तरफ़ से मायूस हो चुकी थी उसके दरवाज़े पर दस्तक हुई। उसका बेटा उसके सामने था। उसका दिल ख़ुशियों से भर गया। ये ताल्लुक़ बिल्लाह और अपने उमूर को अल्लाह के हवाले करने का नतीजा था। ये दुआओं का समरा (फल) था जो वो अल्लाह तबारक व तआला से माँगा करती थी।

तुम्हारे लिये ये ज़रूरी है कि **ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह** की तस्बीह कसरत से पढ़ा करो। ये एक अ़ज़ीम कलिमा है। इसमें ख़ुशबख़्ती और कामयाबी का राज़ पोशीदा है। बार-बार इसका विर्द करो, उसके ज़रिये से ग़म व अन्दोह को दूर भगा दो, अल्लाह तबारक व तआला की तरफ़ से सुरूर व निशात का तोहफ़ा और रंज व ग़म से निजात का मुज़दा वसूल करो।

ख़बरदार! कभी मायूसी इख़्तियार न करना और नाउम्मीदी को क़रीब न फटकने देना। क्योंकि हर तंगी के बाद फ़राख़ी है और हर बदहाली के बाद ख़ुशहाली। इसलिये कभी उम्मीद का दामन हाथ से न जाने देना। ये हमेशा से होता आया है और आइन्दा भी ऐसा ही होगा। इस पर बहस व मुबाहिसा फ़िज़ूल है। वल्लाह! अल्लाह तबारक व तआला बन्दे के तवक्कल और हुस्ने ज़न्न के मुताबिक़ फ़ैसला फ़रमाते हैं। उसी से माँगो क्योंकि उसी के पास सब कुछ है और उसकी रहमत का इन्तिज़ार करो क्योंकि वही दुश्वारियाँ दूर करके राहें हमवार करता है।

रंज व ग़म अपने सब नहाँ रखिये, लोग सुनकर हँसी उड़ायेंगे
अपनी बातों से दिल के ज़ख़्मों पर वो नमक ही छिड़कने आयेंगे

Scanned by CamScanner

किरणें

إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ

'बेशक तेरा रब बड़ा मग़्फ़िरत वाला है।'

(सूरह नज्म 53 : 32)

तुम्हारा घर क़स्रे मुहब्बत व इज़्ज़त है

रहमान के हम सब बन्दे हैं, ईमान उसी पर लाते हैं
हैं खत्मे रुसुल (ﷺ) हादी अपने, जो सीधी राह दिखाते हैं

अज़ीज़-ए-गिरामी क़दर! घर की पनाहगाह में रहो, सिवाय ज़रूरी उमूर के घर की देहलीज़ से बाहर क़दम न निकालो। तुम्हारी ख़ुशबख़्ती का राज़ घर के आँगन की चार दीवारी में पोशीदा है (और तुम अपने घरों में क़रार रहो) तुम अपनी इफ़्फ़त व अस्मत, इज़्ज़त व नामूस और हश्मत व शराफ़त की हिफ़ाज़त उसी मज़बूत क़िले में रहकर ही कर सकती हो। वो औरतें बेवक़्अत हैं जो बाज़ारों में बिला ज़रूरत इधर-उधर मारी-मारी फिरती हैं। उनकी ग़र्ज़ महज़ नये फैशन और नये डिजाइन का मुशाहिदा करना होता है। वो तिजारती मराकिज़ और सुपर मार्केट में सिर्फ़ इसलिये जाती हैं कि नये और अनोखे सामाने ज़ेबाइश के बारे में इस्तिफ़्सार (मालूम) करें। इन ऊपरी सोच रखने वाली ख़्वातीन के सामने न तो दीन की अहमियत है और न दावते दीन की और न पैग़ामे हिदायत को लोगों तक पहुँचाने में उनकी कोई दिलचस्पी है, न तो उनके अंदर इल्म व मअरिफ़त और सक़ाफ़ते इस्लामिया के हुसूल का अज़्म है। बल्कि वो फ़िज़ूल ख़र्ची करने वाली और माल वज़र उड़ाने वाली बेगमात हैं। उनकी तमन्नायें और आरज़ूयें बस लज़ीज़ ग़िज़ाओं और जदीद तर्ज़ के क़ीमती मल्बूसात तक महदूद हैं। ख़बरदार! अपने घर का ख़्याल रहे, क्योंकि यही ख़ुशियों का मम्बअ और पनाहगाह है, अमन व राहत की जगह, कन्ज़े आफ़ियत और गोशाए उन्सियत है। यही तो सलामती का कअबा है जो इंसानों के तसर्रुफ़े बेजा से महफ़ूज़ रखता है। अपने घर को मर्कज़े मुहब्बत, मेहवरे उल्फ़त, उम्दा और मुबारक अता व बख़्शिश का तौशाए ख़ाना बनाओ।

'अपनी परेशानियाँ किसी पर ज़ाहिर न कर। मगर उस ग़मगुसार के सामने जो फ़िक्रो-ख़्याल से, अपनी हमदर्दाना बातों से, हिम्मत अफ़ज़ा कलिमात, नसीहतों और मशवरों से तुम्हारे दुखदर्द में शरीक हो। जो तुम्हारे रंज को ख़ुशियों में, ग़म को राहतों में और नामुरादियों को ख़ुशबख़्तियों में बदल दे।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'मोमिन का मामला भी अजीब है, उसके तमाम मामलात में उसके लिये ख़ैर है।'

(सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अल्मुअ्मिनु अम्रुहू कुल्लुहू ख़ैर : 2999, मुस्नद अहमद : 4/332, सहीह इब्ने हिब्बान : 2896, सुनन दारमी : 2777)

बेकार बातों के लिये तुम्हारे पास वक़्त कहाँ है?

यूँ भी रात काटी है ज़िन्दगी के मारों ने
चाँद ने जला डाला डस लिया सितारों ने

(कैफ़ भोपाली)

बेकार बहस व मुबाहिसे में न उलझो, लायअनी (बेमतलब) फ़िज़ूल बातों में अपना क़ीमती वक़्त ज़ाएअ (बर्बाद) न करो। क्योंकि ये बातें दिल में तंगी और कदूरत का सबब बनती हैं। जिन उमूर में लोगों के दरम्यान इख़्तिलाफ़ पाया जाता है उन पर किसी को क़ाइल करने और अपनी राय थोपने की कोशिश न करो। अपना नुक़्त-ए-नज़र निहायत सादगी से बयान कर दो, मुँह से झाग निकाले बग़ैर। गले फाड़ कर, चिल्ला कर, धोंस जमा कर अपनी बात मनवाने की कोशिश करना फ़िज़ूल है। दूसरों को हर्फ़े तन्क़ीद बनाकर और उन पर कीचड़ उछाल कर उनके दिलों में अपने बारे में ग़लत राय क़ायम न करो क्योंकि इससे तुम अपना सुकून खो दोगी। इन बातों से परहेज़ ही बेहतर है।

तुम्हें जो कुछ कहना है नर्म और प्यार भरे लहजे में शरीफ़ाना तौर पर कह डालो। इस तरह तुम लोगों के दिलों पर हुक्मरानी करोगी और उनके फ़िक्रो-ख़्याल पर छा जाओगी। इसके बरअक्स लोगों की ग़ीबत, हुज़्न व मलाल और रंज व ग़म का पेश ख़ैमा होती है। दूसरों की ऐबजूई, उनको हक़ीर समझना और उन पर तअ़न करना, अज्र की बर्बादी और बारे गुनाह से गिराँ बारी का सबब बनते हैं और इत्मीनाने क़ल्ब जाता रहता है। अपने उयूब की इस्लाह की कोशिश करो और अगर लोगों के उयूब पर नज़र जाये तो उससे नसीहत हासिल करो और इस बात की कोशिश करो कि वो उयूब तुममें न पाये जायें। अल्लाह तबारक व तआला ने हमें कामिल और मासूम नहीं बनाया है बल्कि हम सब गुनाहगार, ख़ता और निस्यान के पुतले हैं। ख़ुशख़बरी है उनके लिये जिनकी निगाहें अपने उयूब पर पड़ती हैं और दूसरों के उयूब से वो चश्मपोशी करती हैं।

न थी हाल की जब हमें अपने ख़बर, रहे देखते औरों के ऐब व हुनर
पड़ी अपनी बुराइयों पे जो नज़र, तो निगाह में कोई बुरा न रहा

ज़फ़र

'एक माँ जिसका बेटा ऊँचाई से गिरकर ज़ख़्मी हो गया, रोने-धोने से अपना वक़्त बर्बाद नहीं करती बल्कि वो उसके ज़ख़्मों के मरहम-पट्टी पर तवज्जह देती है।'

Scanned by CamScanner

किरणें

'जान लो जो कुछ तुम्हारे साथ हुआ उससे छुटकारे की सूरत नहीं थी।'

(सुनन अबी दाऊद, किताबुस्सुन्नह, बाब फ़िल्क़दर : 4699, सुनन इब्ने माजा, मुक़द्दमा, बाब फ़िल्कुदूर : 77, मुस्नद अहमद : 5/182, मुस्नद अबी शैबा : 1/130, अल्बानी रह. ने इसे सहीह कहा है 1/:105)

रोशन ज़मीर बनो, तुम्हें हयाते जावेदाँ बख़्शी जायेगी

ग़म हासिले हयात है ग़म जाने कायनात
वो दिल ही क्या निशात जिसे ग़म मिला नहीं

दाऊद निशात

ज़िन्दगी पर प्यार भरी निगाह डालो, वालिहाना मुहब्बत की नज़र, क्योंकि ज़िन्दगी इंसान के लिये अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का अ़तिया है। उस यकता और बेमिस्ल का तोहफ़ा कुबूल करो और निहायत ख़ुश दिली, फ़रहत और सुरूर व इम्बिसात के साथ और उसे ले लो सुबह को उसकी रोशन किरणों के साथ और रात को उसके वक़ार और ख़ामोशी के साथ दिन को उसकी रोशनी और बड़ाई के साथ अपना लो। साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ पानी, अल्लाह की हम्द बयान करते और उसका शुक्र अदा करते हुए पियो। साफ़ और ताज़ा हवा में साँस लेते हुए ख़ुशी और फ़रहत महसूस करो। कलियों की ताज़गी और फूलों की ख़ुश्बू से मशामे जान मुअत्तर करो। फिर उसके बनाने वाले की पाकी बयान करो। कायनात पर इबरत की निगाह डालो और उसकी तख़्लीक़ पर ग़ौर व फ़िक्र करो। ज़मीन रब की एक मुबारक बख़्शिश व अ़ता है, उससे ख़ूब फ़ायदा उठाओ। बाग़ों में, बहारों में, ख़ूबसूरत कलियों, तरो-ताज़ा, हसीन व जमील फूलों और शफ़्फ़ाफ़ हवाओं में, आफ़ताब की गर्मी और चाँद की ज़ियापाशी में रब्बे करीम के बेशुमार अ़तियात हैं, उनसे भरपूर इस्तिफ़ादा करो। इस तरह कि ये नेमतें और इनायतें तुम्हारे अंदर जज़्ब-ए-शुक्र को उभार दें और तुमको ताक़ते बन्दगी पर आमादा करें। ये सब अ़ता व इन्आम अल्लाह की इताअ़त व बन्दगी पर कमर बस्ता होने में तुम्हारे मददगार व मुआविन हों। सारी तारीफ़ें और सारा शुक्र उसी ज़ाते बारी तआ़ला के लिये हैं जिसने हम पर इन नेमतों का फ़ैज़ान किया है और हमें अपने फ़ज़्लो-करम से नवाज़ा है।

ख़बरदार! तुम्हारा रंज व ग़म और तुम्हारी पज़मुर्दगी और मायूसी तुम्हें नाशुक्री पर आमादा न करे। ऐ अल्लाह की हम्द करने वाली ......! उसका शुक्र बजा लाने वाली इस हक़ीक़त को ख़ूब समझ लो, अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल जो ख़ालिक़ है उसी ने रिज़्क़ की ज़िम्मेदारी अपने ज़िम्मे ले रखी है। ये सारी नेमतें जो उसने दे रखी हैं सबकी सब उसकी ताअ़त व बन्दगी में हमारी इस्तिआनत करती हैं, जैसाकि उसने ख़ुद ही फ़रमाया है, 'ऐ पैग़म्बर! खाओ पाक चीज़ें और अ़मल करो सालेह।' (सूरह मोमिनून 23 : 51)

तवन्गारी बदिल अस्त न ब माल। सबसे बेहतर करम उनका अ़तिया है जिनके पास कुछ भी नहीं लेकिन वो प्यार भरे कलिमात और मुख़्लिसाना मुस्कुराहट की क़दरो-क़ीमत से आगाह हैं। बहुत से लोग अता व बख़्शिश करते हैं लेकिन इस तरह गोया वो एक ज़ोरदार तमाचा रसीद कर रहे हों।

Scanned by CamScanner

किरणें

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝٢

'जो भी अल्लाह से डरता है अल्लाह, उसके लिये रास्ता निकाल देता है।'

(सूरह तलाक़ 65 : 2)

किसी पर ख़ुशबख़्ती तमाम हुई और न किसी पर भलाइयों की तक्मील हुई

अल्लाह बेनियाज़ के ज़िक्रे मदाम से

हुज़्न व मलाल दूर करो उसके नाम से

तुम बहुत बड़ी ग़लतफ़हमी में मुब्तला हो, अगर तुम ये गुमान रखती हो कि हालात हमेशा सौ फीसद तुम्हारे मुवाफ़िक़ ही होंगे। ये बात जन्नत ही में मुम्किन है कि इंसान की छोटी-बड़ी हर ख़्वाहिश पूरी हो जाये। इस दुनियाए आब व गुल में ख़ुशियाँ आरिज़ी होती हैं। यहाँ तुम्हें वो सब कुछ नहीं मिल सकता जिसकी तुम ख़्वाहिश रखती हो। यहाँ हर एक मसाइल में उलझा हुआ है। बीमारियाँ, बलायें और मुसीबतें और इब्तिला व आज़माइश का एक वसीअ़ दायरा है जो इंसान को घेरे में लिये हुए है। तंगदस्ती में मत रहो। सेहत बग़ैर बीमारी के, ख़ुशहाली बग़ैर ग़ुरबत व इफ़्लास के, ख़ुशियाँ बग़ैर रंज व अन्दौह के, शौहर जिसमें कोई मन्फ़ी बात न हो, दोस्त जो ख़ताओं से मुबर्रा हो........ , ऐसी मिस़ाल के पाये जाने से अपने ज़हन को साफ कर लो और उन चीज़ों की तमन्ना न करो, उनका हुसूल मुम्किन नहीं। सीखो कि किस तरह मन्फ़ी पहलूओं पर क़ाबू पाया जा सकता है और ग़लतियों की इस्लाह किस तरह मुम्किन है। ख़ताओं, लग़्ज़िशों और मन्फ़ी मुलाहिज़ात से सर्फ़े नज़र करो। ख़ूबियों और मुस्बत (सकारात्मक) पहलूओं पर नज़र रखो। हुस्ने ज़न्न से काम लो, लोगों की मअ़ज़्रतें सुनो और भरोसा सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात पर करो क्योंकि लोग ऐतमाद के क़ाबिल नहीं होते और कोई इस क़ाबिल नहीं कि अपना मामला उसके तफ़वीज़ (सुपुर्द) कर दिया जाये।

फ़रमाने बारी तआ़ला है,

'अल्लाह के मुक़ाबले में वो तुम्हारे कुछ भी काम नहीं आ सकते।'

(सूरह जास़िया 45 : 19)

'अपनी जिन्दगी के तारीक हिस्सों पर नज़र मर्कूज़ न करो, दूसरी तरफ़ रोशनी मौजूद है तुम्हें बस उसके रुख़ को अपनी तरफ़ मोड़ देना है और रोशनी हासिल करना है।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝

'जो अल्लाह का तक़वा (डर व ख़ौफ़) इख़्तियार करता है अल्लाह तआला उसके मामलात आसान कर देते हैं।' (सूरह तलाक़ 65 : 4)

बुस्ताने मआरिफ़त में दाख़िल हो जाओ

ऐब से कब है मुबर्रा तेरी ज़ात
ऐब दोराँ से गुज़र ऐ बासिफ़ात

नेकबख़्ती के मुख़्तलिफ़ अस्बाब हैं, उनमें एक दीनी शऊर 'नफ़क़ा फ़िद्दीन' भी है। दीनी तालीम शरहे सदर (दिल खुलने) का ज़रिया और अल्लाह की ख़ुश्नूदी का वसीला है जैसाकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया है, **'अल्लाह तबारक व तआला जिसके साथ भलाई का इरादा करते हैं उसे तफ़क़्क़ोह फ़िद्दीन अता फ़रमाते हैं।'** (सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाब मंय्युरिदिल्लाहु बिही ख़ैरन : 71, सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात, बाब अन्नहयु अनिल मस्अला : 1037, सुनन इब्ने माजा : 221, मुस्नद अहमद : 4/98)

पढ़ो आसान इल्मी किताबों को जो नफ़ाबख़्श हैं, जो तुम्हारे इल्म व दानिश और फहम व अक़्ल में दीन के ताल्लुक़ से इज़ाफ़े का बाइस बनेंगी। जैसे रियाज़ुस्सालिहीन, फ़िक़्हुस्सुन्नह, फ़िक़्हुद्दलील और आसान आम फ़हम तफ़ासीर और दीगर मुफ़ीद किताबें। तुम्हें मालूम है आमाल में सबसे बेहतर अमल कौनसा है? वो अल्लाह तबारक व तआला की किताब में अल्लाह तआला के मन्शा व मुराद की मआरिफ़त है और अहादीसे नबविया में रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुन्नते मुतह्हरा और आप (ﷺ) के मन्शा और मुराद को समझना है। इसलिये तुम्हारे लिये ज़रूरी है कि अल्लाह के कलाम कुरआन पाक पर तदब्बुर (ग़ौरो-फ़िक्र) करो और अपनी बहनों के साथ इसका इज्तिमाई मुतालआ और इसको पढ़ने-पढ़ाने और समझने-समझाने की कोशिश करो। जहाँ तक बाआसानी मुम्किन हो इसे हिफ़्ज़ करने की कोशिश करो, कुरआन पाक सुनने और उस पर अमल करने का एहतिमाम करो। शरई अहकाम से अद्मे वाक़िफ़ियत क़ल्ब की तारीकी और दिल की तंगी का सबब है। तुम्हारे पास एक घरेलू लाइब्रेरी ज़रूर हो। ख़्वाह वो छोटी सी ही क्यों न हो। उसमें मुस्तनद मुफ़ीद किताबें हो, उम्दा इस्लामी ख़ुतबात और मवाइज़ पर मुश्तमिल कैसेट हों। बेहूदा गानों के सुनने में अपना क़ीमती वक़्त ज़ाएअ न करो। टीवी सीरियल देखने से परहेज़ ज़रूरी है। ज़िन्दगी का हर लम्हा क़ीमती है और उसका हिसाब अल्लाह तआला को देना है। वक़्त को अल्लाह तबारक व तआला की मर्ज़ी के मुताबिक़ इस्तेमाल करो। वक़्त एक क़ीमती सरमाया है उसको अल्लाह की ख़ुश्नूदी हासिल करने का ज़रिया बनाओ और उसकी क़दरो-क़ीमत में इज़ाफ़ा करो।

'एक ख़ुद ऐतमाद इंसान की मुस्कुराहट सख़्त से सख़्त मुश्किल को आसान बना देती है।'

Scanned by CamScanner

दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब औरत

(4)

गोहर हाय गराँ माया

शब गुरैज़ाँ होगी आख़िर जल्वए ख़ुरशीद से

ये चमन मअ़मूर होगा नग़मए तौहीद से

Scanned by CamScanner

किरणें

لَا تَدْرِىْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ①

'मुम्किन है अल्लाह उसके बाद कोई नई सूरत पैदा कर दे।' (सूरह तलाक़ 65 : 1)

शिकस्ता दिलों और अश्क बार आँखों को याद करो

नवीदे सुबहे दरख़्शाँ, नसीमे बादे बहार
शबे सियाह व फ़स्ले ख़िज़ाँ के बाद तो है

अदीबों में से एक ने लिखा है : अगर तुम समझती हो कि ज़माने से तुमने ये अहद व पैमान कर रखा है कि तुम्हारे लिये वही कुछ होगा जो तुम चाहती हो, तुम्हारी ज़िन्दगी के हर शौबा और हर मामले में वही होगा जो तुम्हारी पसंद है या जो तुम्हारी देरीना (मुद्दतों से पाली हुई) आरज़ू है, ये ख़्याल तुम्हारे अंदर एक ऐसे एहसास को जन्म देगा जो हर लम्हा तुम्हें दुखी रखेगा। तुम अपने आप पर हुक्मरानी करती रहीं लेकिन तुमने वो कुछ हासिल नहीं किया जो तुम चाहती थीं। ख़ास तौर पर जब रुकावटें तुम्हारे अ़ज़ाइम का रास्ता रोकेंगी। लेकिन अगर तुमने इस हक़ीक़त को मान लिया कि ज़माने की रविश यही है कि कभी दिया जाता है और कभी छीन लिया जाता है, कभी अ़ता व करम की बारिश होती है और कभी रोक लिया जाता है। ज़िन्दगी जब तुम्हें कोई चीज़ बख़्शती है तो अपनी बख़्शिश को भूलती नहीं, वो उसका बदला कभी न कभी वसूल कर लेती है। ज़िन्दगी का ये रवैया कुछ तुम्हारे साथ ख़ास नहीं, ये तो औलादे आदम का मुक़द्दर है, ख़्वाह महलों में रहती हों या झोंपड़ियों में, ख़्वाह वो आसमान की हुदूद को छू रही हों या फ़र्शे ज़मीन उनका बिस्तर हो। तो अपने ग़म को हलका करने की कोशिश करो और अपने आँसूओं को पोंछ डालो क्योंकि तुम तनहा नहीं जिसको ज़माने के तीर ने ज़ख़्मी किया है। जरीदए हस्ती पर एक तुम ही नहीं हो जिससे रंज व अलम की इब्तिदा हुई है। तुम्हारे मसाइल और तुम्हारे रंज व अलम कोई अनहोनी और अनोखी बात नहीं है।

'अपने गुनाहों पर ग़ौर व फ़िक्र करके ख़ुद को मायूसी का शिकार न बनाओ बल्कि उन नेकियों के बारे में सोचो जो उन बुराइयों को मिटाकर उनकी जगह ले लेंगी।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'मुसीबत में एक अल्लाह ही याद आता है।'

ये लोग शादमाँ (ख़ुश) नहीं हैं!

दिन जिनके गुज़रते हैं यहाँ ऐश व तरब में
वो ख़्वाबे परेशाँ से, परेशान बहुत हैं

ऐश व इशरत, माद्दी आसाइश और दौलत को पानी की तरह बहाने वालों की ज़िन्दगी की तरफ़ हसरत भरी निगाह न डालो। वो क़ाबिले रहम हैं, क़ाबिले रश्क नहीं। ऐसे लोग जो अपनी ज़ात पर बेतहाशा ख़र्च करते हैं और मसर्रत के हुसूल में अपनी हर ख़्वाहिश, हर तमन्ना और हर लज़्ज़त व शहवत की तक्मील चाहते हैं। इससे कोई ग़र्ज़ नहीं कि उनकी ये ख़्वाहिश जाइज़ है या नाजाइज़, हलाल है या हराम। हर्गिज़ नहीं, ये लोग न तो ख़ुश हैं और न ख़ुशबख़्त। ये लोग तो हक़ीक़तन रंज व अलम की दलदल में धँसते जा रहे हैं। क्योंकि जो लोग अल्लाह तबारक व तआला के बताये तरीक़े से मुन्हरिफ़ हैं और जो अल्लाह तआला की नाफ़रमानी करते हैं वो कभी शादमाँ नहीं रह सकते, कभी ख़ुश नहीं रह सकते। इसलिये हर्गिज़ ये गुमान न करना कि फ़िज़ूलख़र्ची करने वाले और ऐश व इशरत की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले शादमाँ और मुतमइन हैं। नहीं हर्गिज़ नहीं। ऐसी ग़रीब ख़्वातीन जो मिट्टी के बने झोंपड़ों में रहती हैं उनसे ज़्यादा ख़ुश व ख़ुर्रम व शादमाँ हैं जो नर्म व मुलायम, आरास्ता व पैरास्ता आरामदेह बिस्तरों पर सोती हैं और अतलस व कमख़्वाब, हरीर व अबरेशम उनका ओढ़ना बिछौना है और जो मख़्मली लिबासों में क़स्र नशीं हैं। बेशक एक मिस्कीन मोमिना, आबिदा और ज़ाहिदा ख़ुशबख़्त और ख़ुश व ख़ुर्रम है उन कम नसीब औरतों के मुक़ाबले में जो अल्लाह की राह से भटकी हुई हैं।

'ख़ुशबख़्ती तुम्हारे अंदर ही कहीं छुपी है, इसलिये अपनी ज़ात को अपनी जद्दो-जहद का मेहवर (केन्द्र) बनाओ।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

'ख़ूब जान लो, माबूदे हक़ीक़ी तो सिर्फ़ अल्लाह है।' (सूरह मुहम्मद 47 : 19)

सबसे अच्छा रास्ता, अल्लाह का रास्ता है

ग़म की हर आहट से डर जाना नहीं मर्दानगी
दफ़अ़े मुश्किल गरचे आसाँ हो तुम्हारे बस का हो

नेक बख़्ती क्या है? क्या ख़ुशबख़्ती माल व ज़र से है? क्या वो हसब व नसब और जाह व मन्सब से है? इस सवाल के कई जवाब हो सकते हैं। लेकिन हमें इस ख़ातून की शादमानी पर ग़ौर करना चाहिये।

एक शौहर ने अपनी बीवी से बहस़ व मुबाहिसे के दौरान कहा, मैं तुमको मशक़्क़त में डालने वाला हूँ। बीवी ने नर्म लहजे में अ़र्ज़ किया, तुम ऐसा नहीं कर सकते। शौहर ने कहा, वो कैसे? बीवी ने जवाब दिया, अगर मसर्रत व शादमानी माल से वाबस्ता होती तो तुम मुझे इससे महरूम कर देते या हक़ीक़ी ख़ुशी ज़ेवरात से वाबस्ता होती तो तुम उन्हें छीन लेते। लेकिन तुम और सारे इंसान किसी चीज़ के मालिक नहीं हैं। मैं मसर्रत व शादमानी अपने ईमान में पाती हूँ और ईमान मेरे दिल में है और दिल पर सिवाय रब्बुल आ़लमीन के किसी का इख़्तियार नहीं।

यही सच्ची ख़ुशी और हक़ीक़ी ख़ुशबख़्ती है यानी ईमानी शादमानी और इस ईमानी मसर्रत और हलावत को सिर्फ़ वही महसूस कर सकता है जिसका दिल व दिमाग़ और ज़हन व फ़िक्र अल्लाह की मुहब्बत से सरशार है। वही हक़ीक़ी मसर्रत से हमकिनार है। वो जो यकता और बेमिस्ल है उसी से सआ़दत व नेकबख़्ती तलब करो और उसकी बन्दगी में ज़िन्दगी की हक़ीक़ी मसर्रत हासिल कर लो।

हक़ीक़ी मसर्रत और ख़ुशबख़्ती के हुसूल का बस एक ही तरीक़ा है, अपने सच्चे दीन की मअ़रिफ़त जिसके साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) भेजे गये। एक बार जिसकी लज़्ज़त आश्नाई इस ईमानी मसर्रत से हो गई उसके लिये इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि वो झोंपड़ी में सोता है या फ़ुटपाथ पर। वो रोटी के एक मामूली टुकड़े पर क़ानेअ़ व साबिर हो सकता है और वो दुनिया का सबसे ख़ुशबख़्त इंसान बन सकता है। लेकिन जो इस राहे मुस्तक़ीम से भटक गया वो महसूस करेगा कि उसकी पूरी ज़िन्दगी रंज व अलम से भरी है। उसकी दौलत उसकी महरूमी का बाइस़, उसके आ़माल ख़ुसरान और घाटे का सौदा और उसका अंजाम ज़िल्लत व रुस्वाई है।

'माल व दौलत ज़िन्दगी की आसाइशों के लिये है, ज़िन्दगी महज़ माल व दौलत के हुसूल के लिये नहीं है।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'ऐ अल्लाह! मैं तुझसे अफ़्व व दरगुज़र और आफ़ियत की तलबगार हूँ।'

(सुनन अबी दाऊद, किताबुल अदब, बाब मिम्मा यक़ूलु इज़ा अस्बह : 4705, सुनन इब्ने माजा, किताबुद्दुआ, बाब मा यदऊ बिहिर्रजुलु इज़ा अस्बह : 1783, सुननुल कुबरा लिन्नसाई : 52301, मुस्नद अहमद : 52/2, अल्बानी रह. ने इस हदीस को सहीह कहा है।)

जब मुश्किलात बढ़ जायें तो मुश्किलकुशा (मुश्किलों को दूर करने वाले) से मदद तलब करो

रास्ते मसदूद हैं तो ग़म न कर
पढ़ अलम नशरह करेंगे शरहे सदर

अल्लामा इब्ने जौज़ी (रह.) फ़रमाते हैं, एक मामला ऐसा पेश आया कि जिसने मुझे तंगी में मुब्तला कर दिया। मेरे ऊपर एक ऐसा ग़म मुसल्लत हो गया जो दाइमी था। मैंने हर मुम्किन तदबीर कर डाली कि रंज व अलम से निजात हासिल करूँ और तमाम तरीक़े आज़मा लिये लेकिन गुलू ख़ुलासी (छुटकारे) की कोई सूरत नज़र न आई। अचानक क़ुरआन पाक की इस आयत पर मेरी नज़र गई,

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝٢

'जो अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करेगा अल्लाह उसके लिये राह निकाल देगा।'

(सूरह तलाक़ 65 : 2)

तो मुझे इस बात का इदराक (नॉलेज) हुआ कि तक़वा ख़ौफ़े इलाही ही हर क़िस्म के ग़म से निकलने का ज़रिया है। तो मैंने तक़वा की हक़ीक़त पर ग़ौर किया और मैंने ग़म से निजात का रास्ता ढूण्ढ लिया।

तो मैं इसे अलल ऐलान कहता हूँ कि तक़वा ही दानिशमन्दों के नज़दीक तमाम भलाइयों का सरचश्मा है। मुसीबत गुनाहों के पादाश में आती है और वो तौबा के नतीजे में दूर कर दी जाती है। हुज़्न व मलाल, परेशानी और परेशान हाली और तंगी और बदहाली शामते आमाल (बुरे आमाल) का नतीजा ही तो हैं। इनमें नमाज़ में कोताही और कमी, मोमिनात की ग़ीबत और पर्दे के मामले में तसाहुल (सुस्ती) या हराम कामों का इर्तिकाब हो सकता है। क्योंकि जो कोई अल्लाह तबारक व तआला के तरीक़े से इन्हिराफ़ (हटना) करता है लाज़िमन उसको अपनी कोताहियों की क़ीमत चुकानी पड़ती है और शरीअते इलाही को नज़र अन्दाज़ करने का बिल अदा करना पड़ता है। जो ख़ुशी और ख़ुशबख़्ती का ख़ालिक़ है वो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है। तो तुम किसी दूसरे से सच्ची ख़ुशी की कैसे तलबगार हो सकती हो? ख़ुशबख़्ती अगर हर इंसान के अपने इख़्तियार में होती तो फिर रूए ज़मीन पर कोई ग़मज़दा, महरूम और मग़मूम शायद ही होता।

'तमाम मायूसकुन मस्नूई यासियत (नाउम्मीदी) से ख़ुद को दूर रखो और उनके वजूद को फ़रामोश कर दो और नज़र को कामयाबी पर मर्कूज़ (केन्द्रित) कर लो, फिर कभी तुम को नाकामी का मुँह नहीं देखना पड़ेगा।'

Scanned by CamScanner

किरणें 'मैं अपने बन्दे की तवक़्क़ुअ (उम्मीद) के मुताबिक़ हूँ।'
(सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला व्युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सह : 7405, सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़िक्र वद्दुआ, बाब अल्हस्सु अला ज़िक्रिल्लाहि तआला : 2675, सुनन तिर्मिज़ी : 2388, सुनन इब्ने माजा : 3822)

हर दिन एक नई ज़िन्दगी का आग़ाज़ करो

क़दम राहे मजद व शरफ़ में जो रखो
सितारों से भी चन्दे आगे निकल जा

अल्लाह से दूरी, समरे हयात में तलख़ी पैदा करती है। इल्म, अज़्हान, फ़हम व फ़रासत, कुव्वत व जमाल और मआरिफ़ते हक़ में ख़ूबियाँ ज़ाएअ (बर्बाद) हो जाती हैं और सबकी सब बदबख़्ती और नामुरादी में बदल जाती हैं। जब एक इंसान तौफ़ीक़े इलाही से आरी (ख़ाली) और उसकी बरकत से महरूम हो जाता है। इसलिये अल्लाह तबारक व तआला ने इंसानों को इस बात से मुतनब्बह (अटेन्शन) फ़रमा दिया कि उससे दूरी और वहशत के नताइज कितने भयानक और कैसे संगीन होंगे। तुम एक सड़क से गुज़र रही हो और एक इन्तिहाई तेज़ रफ़्तार कार तुम्हारी तरफ़ आ रही है और तुम महसूस करती हो कि क़रीब है कि ये कार तुमको कुचल डाले और तुमको मार डाले तो उस वक़्त तुम्हारे पास कोई रास्ता इसके सिवा नहीं कि निहायत सुरअत (तेज़ी) के साथ अपने बचाव की फ़िक्र करो और ख़ुद को कार की ज़द से बचाओ। अल्लाह तबारक व तआला अपने बन्दों को इस तबाही से बचाने के लिये मुतनब्बह करते हैं जिससे वो अल्लाह तआला से दूरी के नतीजे में दोचार हो सकते हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस बात की ताकीद फ़रमाई है कि तमाम आफ़तों से बचने के लिये हम उसकी पनाह में आ जायें,

فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ

'पस दौड़ो अल्लाह की तरफ़, मैं तुम्हारे लिये उसकी तरफ़ से साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला हूँ और न बनाओ अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद, मैं तुम्हारे लिये उसकी तरफ़ से साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला हूँ।' (सूरह ज़ारियात : 50-51)

अल्लाह तआला की तरफ़ वापसी (तौबा) इंसान से कुछ ख़ास बातों का मुताल्बा करती है। एक नई ज़िन्दगी का आग़ाज़, अपनी हयात की तन्ज़ीम, तअल्लुक़ बिल्लाह में इस्तिहकाम और नेक आमाल की तक्मील और इसी बात को इज्मालन इस दुआ में बयान किया गया है जिसे सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार कहते हैं, **'ऐ अल्लाह! तू ही मेरा रब है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ और जिस क़दर मुझसे मुम्किन है मैं तेरे साथ किये गये अहदो-पैमान का पाबन्द हूँ। मैं उन गुनाहों से तेरी पनाह तलब करता हूँ जो मुझसे सरज़द हो जायें और मैं उन नेमतों का ऐतराफ़ करता हूँ जो तूने मुझको अता फ़रमाई और मैं अपने गुनाहों का ऐतराफ़ करता हूँ। तू मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दे। बेशक तू ही वो है जो गुनाहों को माफ़ करता है।'** (सहीह बुख़ारी, किताबुद्दअवात, बाब अफ़ज़लुल इस्तिग़फ़ार : 6306, सुनन तिर्मिज़ी : 3393, सुनन नसाई : 5522)

'जब तुम किसी काम को अंजाम देने में नाकाम रहो तो ये ख़्याल न करना कि तुम उन मुश्किलात को हल न कर सकोगी।'

Scanned by CamScanner

किरणें

'तुम्हारी मुस्कुराहट अपनी बहनों के सामने एक नेकी है।'

औरतें आसमाने ज़िन्दगी की दरख़्शाँ कहकशायें हैं

ज़माना लाख सही दुश्मनी पे आमादा
मदद को आयेंगे रब के मलक फ़रिस्तादा

एक मोमिना सालेहा सादिक़ा वो है जो शौहर के साथ हुस्ने सुलूक में अपना जवाब नहीं रखती और जो अल्लाह की इताअत और बन्दगी के साथ भलाई के कामों में शौहर की इताअत शिआरी इख़्तियार करती है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ऐसी ही ख़्वातीन की तारीफ़ फ़रमाई है और ऐसी ख़्वातीन को मिसाली क़रार दिया है जैसाकि मर्द तलाश करते हैं। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) से दरयाफ़्त किया गया कि कैसी औरत बेहतरीन बीवी है? तो आप (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'जब शौहर उसकी तरफ़ देखे तो वो उसको ख़ुश कर दे, जब उसको हुक्म दिया जाये तो वो उसकी इताअत करे और अपनी ज़ात और शौहर के माल के सिलसिले में शौहर की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई क़दम न उठाये, जिसे वो पसंद नहीं करता।'** (सुनन नसाई, किताबुन्निकाह, बाब अय्युन्निसाइ ख़ैर: 3231, मुस्नद अहमद :2/251, मुस्तदरक हाकिम :2/175, सुननुल कुबरा लिल्बैहक़ी :7/131, शैख़ अल्बानी रह. ने इस हदीस़ को हसन सहीह कहा है।) जब अल्लाह तबारक व तआला ने ये आयत नाज़िल फ़रमाई,

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ

'दर्दनाक सज़ा की ख़ुशख़बरी सुना दो उन लोगों को जो सोना-चाँदी जमा करके रखते हैं और उन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते।' (सूरह तौबा 9 : 34)

हज़रत उमर (रज़ि.) बाहर तशरीफ़ लाये और हज़रत स़ोबान (रज़ि.) भी आपके साथ थे। हज़रत उमर (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, 'ऐ अल्लाह के नबी! ये आयत आपके अस्हाब पर बड़ी गिराँ है।' आप (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'क्या मैं तुमको उस भलाई की बात न बताऊँ जो इससे कहीं बेहतर है जो लोग माल जमा करते हैं, एक नेक बीवी। जब वो उसकी तरफ़ देखे तो ख़ुश कर दे और जब वो उसको किसी बात का हुक्म दे तो उसकी इताअत करे और ग़ायबाना में वो उस (की नामूस) की हिफ़ाज़त करे।'** (सुनन अबी दाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब फ़ी हुक़ूक़िल माल : 1664, मुस्नद अबी यअला : 2499, मुस्तदरक हाकिम : 567, सुननुल कुबरा लिल्बैहक़ी : 4/140, अल्बानी रह. ने इसे ज़ईफ़ कहा है। ग़ीलान और जाफ़र बिन अयास के दरम्यान उस़मान अबू यक़तान रावी का वास्ता है और वो मजहूल है। अज़्ज़ईफ़ा : 1319)

नबी (ﷺ) ने औरत का जन्नत में दाख़िला उसके शौहर की ख़ुश्नूदी से मशरूत क़रार दिया है। हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) से रिवायत है वो फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'जब कोई औरत इस हालत में वफ़ात पाती है कि उसका शौहर उससे राज़ी और ख़ुश था तो वो जन्नत में दाख़िल हो जाती है।'** (सुनन तिर्मिज़ी, किताबुर्रज़ाअ, बाब मा जाअ फ़ी हक़्क़िज़्ज़ौज अलल मरअति:1161, सुनन इब्ने माजा, किताबुन्निकाह, बाब हक़्क़िज़्ज़ौज अलल मरअति : 1854, मुस्नद अबी यअला : 6903, मुस्तदरक हाकिम : 7328, शैख़ अल्बानी रह. ने इसे ज़ईफ़ कहा है। मुसाविर और उसकी वालिदा दोनों रावी मजहूल हैं। अज़्ज़ईफ़ा : 1436)

Scanned by CamScanner

सफ़े अव्वल में जगह तेरी, बहुत ऊँचा तेरा मकान है

इन्ही मोमिनाना सिफ़ात में तेरी रिफ़अतों का निशान है

Scanned by CamScanner

किरणें

'रात दिन गर्दिश में हैं सात आसमाँ
हो रहेगा कुछ न कुछ घबरायें क्या।'

ग़ालिब

मौत, कारे हराम से बेहतर है

एक दिन तंगी हुई तो आह वावेला न कर
एक ज़माना ऐश का है मुन्तज़िर, तू ग़म न कर

हदीसे नबवी में, जिसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने रिवायत किया है एक क़िस्सा बयान हुआ है कि तीन आदमी एक ग़ार में पनाह लेने के लिये ठहरे थे कि अचानक पहाड़ पर से एक चट्टान लुढ़कती हुई आई और ग़ार का दहाना बंद हो गया, तो उन तीनों ने अल्लाह तबारक व तआला से अपने आमाले सालेहा को वसीला बनाकर दुआ की कि वो ज़ात उनको इस मुसीबत से निजात दिलाये। तो उनमें से दूसरे ने कहा, **'ऐ अल्लाह! मेरे चाचा की एक लड़की थी जो लोगों में मुझे सबसे ज़्यादा महबूब थी।'** एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़, **'मैं उससे इतनी शदीद मुहब्बत करता था जितनी मुहब्बत एक मर्द औरत से करता है। मैंने उसको अपने क़ाबू में करने का इरादा किया लेकिन वो आमादा न हुई। यहाँ तक कि वो एक साल में मआशी तंगी का शिकार हो गई और मेरे पास आई। मैंने उसको एक सौ बीस दीनार इस शर्त पर दिये कि वो तन्हाई में मुझसे मुलाक़ात करे। तो उसने ऐसा ही किया। यहाँ तक कि मैंने उस पर क़ाबू पा लिया।'** और एक रिवायत के मुताबिक़, **'जब मैं उसकी दो टांगों के दरम्यान बैठा तो उसने कहा, अल्लाह से डरो! मेरी दोशीज़गी को नाजाइज़ तौर पर पामाल मत करो।'**

वो लड़की मुत्तक़ी और परहेज़गार थी और शुरू में वो इसके लिये आमादा न थी लेकिन गुरबत व इफ़्लास ने उसको बेहद कमज़ोर कर दिया और ज़रूरत ने उसे हालते इज़्तिरारी में ऐसा करने पर मजबूर और आमादा कर दिया। तो उसने मुझे अल्लाह तबारक व तआला की याद दिलाई, उसने मेरे दिल में अल्लाह के तक़वा का ख़्याल उभारा और ईमानी शऊरी को बेदार किया और उसको एहसास दिलाया कि अगर वो उसको चाहता है तो जाइज़ तरीक़े से निकाह करके हासिल करे और ज़िनाकारी से बचे। इस बात ने उसको बाज़ रखा और उसने अल्लाह तबारक व तआला से तौबा की और ये नेकी उसकी निजात का सबब बनी कि उसकी वजह से ग़ार का दहाना थोड़ा सा खुल गया जबकि ग़ार का दहाना चट्टान ने बंद कर दिया था। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब फ़ी हदीसिल ग़ार : 3465, सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़िक्र वद्दुआ, बाब क़िस्सतु अस्हाबुल ग़ार : 2734, सुननुल कुबरा लिन्नसाई : 8461, मुस्नद अहमद 2/116)

'याद रखो. . . . . .! अगर तुम ख़ौफ़ के साथ जी रही हो तो अन्क़रीब तुम फ़ना हो जाओगी।'

*****

'तुम्हारी ज़िन्दगी तुम्हारे अफ़्कार (सोचों) की तामीर करदा है।'

रोशन आयात

तजुर्बे से मैंने देखा है यहाँ
सब्र का सबको मिला अच्छा सिला

अल्लाह तबारक व तआला का इरशाद है,

سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۝

'अन्क़रीब अल्लाह तंगी के बाद आसानी पैदा कर देगा।' (सूरह तलाक़ 65 : 7)

और फ़रमाया,

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

'ऐ लोगो! जो ईमान लाये हो! सब्र से काम लो, बातिल परस्तों के मुक़ाबले में पामरदी दिखाओ, हक़ की ख़िदमत के लिये कमरबस्ता रहो और अल्लाह से डरते रहो, उम्मीद है कि फ़लाह पाओगे।' (सूरह आले इमरान 3 : 200)

मज़ीद फ़रमाया,

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ۗ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝

'और हम तुमको ज़रूर बज़रूर आज़मायेंगे ख़ौफ़ से, भूख से, माल की कमी से, जान से और फलों की कमी से इन हालात में जो सब्र करें और जो कोई मुसीबत पड़े तो कहें कि हम अल्लाह ही के हैं और अल्लाह की तरफ़ हमें पलटकर जाना है, उन्हें ख़ुशख़बरी दे दो।'

Scanned by CamScanner

(सूरह बक़रा 2 : 155-156)

وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ۭ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ۝۲۸

'वही है जो लोगों के मायूस हो जाने के बाद मेंह (बारिश) बरसाता है और अपनी रहमत फैला देता है और वह बेहतरीन मददगार और तारीफ़ वाला है।' (सूरह शूरा 42 : 28)

اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۱۰

'सब्र करने वालों को तो उनका अज्र बेहिसाब दिया जायेगा।' (सूरह ज़ुमर 39 : 10)

لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ڰ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝۸۷

'नहीं है कोई माबूदे बरहक़ मगर तू, पाक है तेरी ज़ात, बेशक मैंने क़ुसूर किया।'

(सूरह अम्बिया 21 : 87)

ये क़ुरआनी आयात हैं जो हमें ख़ुशी और इत्मीनाने क़ल्ब की तरफ़ बुलाती हैं और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त पर हमारे ऐतिक़ाद व ऐतमाद को मुस्तहकम करती हैं। इस बात पर कि अल्लाह तबारक व तआला का वादा सच्चा है। ये आयतें हमें शरहे सदर अ़ता करती हैं। अल्लाह तबारक व तआला ने अपनी मख़्लूक़ को अ़ज़ाब देने के लिये पैदा नहीं किया है बल्कि उसने अपनी मख़्लूक़ात को आज़माने, पाक करने और मुअद्दब व मुहज़्ज़ब करने के लिये वजूद बख़्शा है। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त माँ-बाप से कहीं ज़्यादा मेहरबान है। लिहाज़ा अल्लाह ही से उसकी रहमत, ख़ुश्नूदी और इनायत तलब करो, उसकी अ़ज़मत का ऐलान करो, उसकी किब्रियाई का ऐतराफ़ करो, उसके एहसान को याद करो और उस पर उसका शुक्र अदा करो, उसकी किताब की तिलावत और उसके रसूल (ﷺ) की सुन्नत की इत्तिबाअ़ करो।

'बदतरीन सूरते हाल के लिये तैयार हो, तब तुम महसूस करोगी कि तुम बेहतर हालत में हो।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'औरत के लिये ये शर्फ़ काफ़ी है कि मुहम्मद (ﷺ) की माँ भी औरत थी।'

रब्बे ज़ुल्जलाल की मअरिफ़त दिल से हुज़्न व मलाल को ख़त्म कर देती है

मुहब्बत में पिनहाँ है फ़ौज़ व फ़लाह
नहीं तू जो है ख़ाक पर ख़ाक है

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त बख़्शिश करने वालों में सबसे ज़्यादा बख़्शिश करने वाला और करम करने वालों में सबसे ज़्यादा करम करने वाला है। अपने बन्दों को माँगने से पहले उम्मीद से ज़्यादा अ़ता करता है। वो छोटे-छोटे आ़माल की क़दर अफ़ज़ाई फ़रमाता है और बढ़ा-चढ़ाकर अज्र अ़ता फ़रमाता है, बहुत सारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा देता है और नामाए आ़माल से उसको महव (मिटाना) कर देता है।

'ज़मीन और आसमानों में जो भी हैं सब अपनी हाजतें उसी से माँग रहे हैं, हर आन वो इक नई शान में है।' (सूरह रहमान 55 : 29)

वो मालिके हक़ीक़ी एक ही वक़्त में सबकी सुनता है और उसकी समाअ़त पर किसी की बात गिराँ बार नहीं होती और बेशुमार मसाइल उसके सामने पेश होते हैं और उनसे उसको ज़र्रा भर भी मुग़ालता नहीं होता। पुकारने वालों की पुकार से वो बेज़ार नहीं होता बल्कि वो गिरया व ज़ारी के साथ दुआ़ करने वाले को पसंद करता है। बल्कि वो दुआ़ करने वालों को चाहता है और दुआ़ न करने वालों से नाराज़ होता है। वो अपने बन्दों का बड़ा ख़्याल रखता है जबकि बन्दे अक्सर उससे ग़ाफ़िल रहते हैं। वो बन्दों की सतरपोशी करता है जबकि बन्दे ख़ुद अपनी सतरपोशी नहीं करते। वो इन पर रहम फ़रमाता है जबकि बन्दे ख़ुद अपने आप पर रहम नहीं करते और हमारा दिल भला कैसे उसकी मुहब्बत से सरशार न हो जो तमामतर ख़ैर और भलाई का सरचश्मा है और बुराइयों और आफ़तों को दूर करने वाला है। उसके सिवा और कौन है जो दुआओं को सुनता है और ख़ताओं से चश्मपोशी करता है, गुनाहों को माफ़ करता है और परेशानियाँ दूर करता है, मायूसी के आ़लम में मदद करता है और रहमतों और नेमतों से मालामाल करता है. . . . . .?

अल्लाह जल्ले शानुहू अ़ता करने वालों में सबसे ज़्यादा अ़ता फ़रमाने वाला, रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाला, सबसे ज़्यादा करम करने वाला और पनाह देने वालों में सबसे ज़्यादा क़वी और ताक़तवर मलजा (शरण लेने की जगह) है। बन्दे जिन पर तवक्कल करते हैं वो उनमें सबसे ज़्यादा ख़्याल रखने वाला है। अपने बन्दों पर माँ-बाप से ज़्यादा मेहरबान। बन्दों की तौबा से उससे ज़्यादा ख़ुश होने वाला जिसकी सवारी, खाना-पीना और अस्बाब के साथ बेआबो-ग्याह सहरा (रेगिस्तान) में खो जाये और उस वक़्त मिले जब वो अपनी ज़िन्दगी से मायूस हो गया हो।

Scanned by CamScanner

किरणें

وَضَرَبَ اللهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ

'अहले ईमान के लिये अल्लाह तआ़ला फ़िरऔन की बीवी की मिसाल देता है।'

(सूरह तहरीम 66 : 11)

मुबारक दिन

सब्र का ये सिला वो पायेगा
ऐश के दिन ख़ुदा दिखायेगा

तुम एक तजुर्बा करके देखो, फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद थोड़ी देर ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ के साथ क़िब्ला रू (की तरफ़) होकर बैठो, दस या पन्द्रह मिनट और इस वक़्फ़े में कसरत से ज़िक्र व दुआ का एहतिमाम करो। अल्लाह तबारक व तआ़ला से उस दिन के बाबरकत होने की दुआ करो। ख़ूबसूरत, मुबारक और पाक दिन। एक ऐसा दिन जो सईद हो जिसमें तमामतर फ़लाह और सलाह और वो मुश्किलात, हादसात और बदबख़्तियों से पाक हो। एक ऐसा दिन जिसमें रिज़्क़ की फ़रावानी हो, जिसके ख़ैर व बरकात वाफ़िर (ख़ूब) हों और जिसमें हिफ़्ज़ व अमान हो। एक ऐसा दिन जिसमें ग़म व अन्दौह, हुज़्न व मलाल और करब न हो। इसलिये कि वही है जिससे मसर्रत तलब की जा सकती है और जिससे रिज़्क़ में कुशादगी का सवाल किया जा सकता है और जिससे ख़ैर और भलाई तलब की जा सकती है। वो बड़ी अ़ज़मत व इ़ज़्ज़त वाला और बड़ी शान वाला है। तेरी शान जल्ल जलालुहू!

ये थोड़ी देर की नशिस्त, अल्लाह के हुक्म से उस दिन को मुबारक, नफ़ाबख़्श, निहायत उम्दा और ख़ुशियों से मामूर दिन बना सकती है।

अगर आप काम से फ़ारिग़ होकर यूंही बैठी हैं तो आपके लिये एक क़ीमती मशवरा है। आप टेप रिकॉर्ड की मदद से क़ुरआन पाक के कैसेट सुन सकती हैं रेडियो से नश्र होने वाली तिलावत से लुत्फ़ अन्दोज़ हो सकती हैं। एक नर्म व शीरीं और ख़ूबसूरत आवाज़ में अल्लाह तबारक व तआ़ला के कलाम की समाअ़त से अपने क़ल्ब (दिल) को ईमान से मुनव्वर कर सकती हैं। क़ुरआनी आयात की समाअ़त से अल्लाह की ख़शियत को दिल पर तारी कर सकती हैं जो आपके दिल से गुनाहों गर्दो ग़ुबार को साफ़ करके, शुकूक व शुबहात के जाले को मिटाकर आपके ईमान को ताज़गी बख़्शेंगी और आपको शरहे सदर अ़ता करके आपके अहवाल को पहले से कहीं बेहतर बना देंगी।

'उन उमूर के बारे में फिक्रमन्द होने की कोई ज़रूरत नहीं जो आप अंजाम न दे सकें। अपनी कारकर्दगी में इज़ाफ़ा करें जिस हद तक भी आप कर सकती हैं।'

Scanned by CamScanner

वो सज्दा, रूहे ज़मीन जिससे काँप जाती थी

उसी को आज तरसते हैं मिम्बर व मेहराब

Scanned by CamScanner

दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब औरत

(5)

गोहरे दरख़्शाँ

तेरे ज़मीर पे जब तक न हो नुज़ूले किताब
गिरह कुशा है राज़ी न साहिबे कश्शाफ़

इक़बाल

Scanned by CamScanner

اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾

'यक़ीनी तौर पर अल्लाह की मदद क़रीब है।' (सूरह बक़रा 2 : 214)

हिदायत याफ़्ता बीवी बाबरकत ज़िन्दगी की ज़ामिन (Guaranter) है

रातें, चमकते तारों से पुरनूर करेंगे
ऐ दिल तुझे ये मुज़दा (ख़ुशख़बरी) कि ग़म दूर करेंगे

ये बीवी के फ़राइज़ में से है कि वो शौहर का इस्तक़बाल वालिहाना अन्दाज़ में बेहतर से बेहतर तौर पर करे। जब वो बाहर से आये तो उसका थका मान्दा चेहरा देखकर तंगदिली का मुज़ाहिरा न करे। इसके बरअक्स वो उसकी ज़रूरतों की तकमील में जल्दी करे। ये दरयाफ़्त किये बग़ैर कि उसकी परेशानी और इज़्मेहलाल के अस्बाब क्या हैं जैसे ही वो घर आये उसको राहत पहुँचाये। वो जैसे ही लिबास तब्दील कर लेगा और ख़ुद को पुरसुकून महसूस करेगा ख़ुद ही अपनी परेशानियों के अस्बाब ज़ाहिर कर देगा। लेकिन उस वक़्त वो कुछ न बताये तो अब उससे परेशानी के अस्बाब मालूम करने में कोई हर्ज नहीं है। जब उसकी ख़ैरियत दरयाफ़्त करे तो इस अन्दाज़ में कि उसे महसूस हो कि वो उसकी शरीके हयात और उसकी सच्ची ग़मगुसार है और उसकी परेशानी का उसको बेहद ख़्याल है। उसकी इस हालते ज़ार और उसकी इस कैफ़ियत से वो ख़ुद बेहद मुतास्सिर है। अगर बीवी ये महसूस करती हो कि शौहर जिन मसाइल से दोचार है उनको वो हल करने में मददगार साबित हो सकती है तो ऐसा करने में वो जल्दी करे। अगर वो ऐसा करती है तो यक़ीनी तौर पर शौहर के सर से एक बहुत बड़ा बोझ कम करती है और शौहर उस वक़्त महसूस करेगा कि उसके घर में बेश क़ीमत लाल व जवाहिर मौजूद हैं। बल्कि दुनिया के तमाम जवाहरात से कहीं ज़्यादा क़ीमती दौलत उसे हासिल है।

'इस बात से ग़मज़दा और परेशान होने की ज़रूरत नहीं कि तुमने दुनिया के बहुत से उमूर अंजाम नहीं दिये। बल्कि तुम्हें ये ख़्याल रखना चाहिये कि अक्सर बड़े लोगों के काम भी पाये तक्मील को नहीं पहुँचे।'

***

Scanned by CamScanner

किरणें

'अल्लाह तआला जिस क़ौम से मुहब्बत फ़रमाते हैं उसे आज़माइश में डालते हैं।'

(सुनन तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब मा जाअ फ़िस्सब्र अलल बला : 6932, सुनन इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन, बाब अस्सबरु अलल बला : 1304, मुस्नद अश्शिहाब लिल्क़ज़ाई : 1211, शौबुल ईमान लिल्बैहक़ी : 5239, शैख़ अल्बानी रह. ने इसे हसन कहा है।)

आज का दिन ही बस तुम्हारा है

दुश्मनों पर गुलों की बारिश है
दोस्त की राह में बिछायें ख़ार (काँटा)

किसी ख़ुशनसीब ने क्या ख़ूब कहा है, वो दिन मेरे लिये निहायत मुबारक है जिस दिन मामलात मेरे क़ाबू में रहें न कि मैं अपने मामलात के क़ब्ज़े में रहूँ। वो दिन ऐसा है कि मैं अपनी शहवतों पर क़ाबू रखता हूँ और लज़्ज़तों और ख़्वाहिशात का मैं गुलाम नहीं होता।

उन ख़ुशगवार दिनों में कुछ ऐसे हैं जिन्हें मैं हमेशा याद रखता हूँ और कभी भुला नहीं सकता। हर वो दिन जिस दिन मैं अपने नफ़्से अम्मारा (बुराई पर आमादा करने वाला नफ़्स) पर क़ाबू पा लेता हूँ और उसके बुरे असर से ख़ुद को बचा लेता हूँ और शुकूक व शुब्हात की परेशानी से बाहर निकल आता हूँ तो वो दिन यक़ीनी तौर पर मेरे लिये कामयाब तरीन और हसीन व जमील दिन होता है।

क्या ही ख़ुशगवार दिन है वो जिस दिन मैं कोई नेक काम उससे बुलंद होकर करता हूँ कि लोग उस काम को सराहेंगे या उसको नापसन्दीदा निगाहों से देखेंगे। लोगों में उसका चर्चा होगा या किसी को उस नेक काम की इत्तिलाअ तक न होगी। मैं लोगों की मदह व सताइश से बेपरवा होकर वो नेक काम कर डालता हूँ जिसकी ख़ुशगवार याद मेरी ज़िन्दगी में बाक़ी रह जाती है लेकिन जिसके बारे में किसी को कोई इल्म नहीं होता।

वो दिन भी क्या है कि जिस दिन मेरी जेब सिक्कों से भरी हो और मेरी रूह ख़ाली ख़ाली हो। इसके बरअक्स मैं उस दिन को तरजीह देता हूँ कि जिस दिन मेरी जेब ख़ाली हो लेकिन मेरे ज़मीर पर किसी तरह का बोझ न हो।

वो दिन कितने ख़ुशगवार और मुबारक हैं जिनमें माद्दी ऐतबार से मेरा हिस्सा ज़्यादा नहीं है लेकिन अपने नफ़्स पर इक़्तिदार के लिहाज़ से और आमाल के ऐतबार से उस दिन मैंने बहुत कुछ हासिल किया है और अल्लाह तबारक व तआला का शुक्र व एहसान कि यही याफ़्त मेरा सबसे क़ीमती सरमाया है।

'जो कुछ मुयस्सर है उस पर ख़ुश हो जाओ और उन नेमतों पर अल्लाह तबारक व तआला के शुक्रगुज़ार बन जाओ। आलमे बेदारी में ख़्वाब देखना छोड़ दो और उन चीज़ों की तमन्ना में अपना वक़्त बर्बाद न करो जो तुम्हारी कोशिशों और सलाहियतों से हम आहंग नहीं हैं।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ

'अल्लाह रब्बुल आलमीन ने अपने फ़ज़्ल से गुज़िश्ता ख़ताओं को माफ़ फ़रमा दिया है।'

(सूरह माएदा 5 : 95)

ये मत सोचो कि तुमको दबाया और कुचला जा रहा है

ख़ुशियों में इतराना क्या है, ग़म से है घबराना क्या
जिन जिन की हिदायत होती है उन सब की निहायत होती है

ये एक निहायत उम्दा सिफ़त है जो परेशानियों पर क़ाबू पाने और कामयाबी से हमकिनार होने में मुआविन (मददगार) साबित होती है। दोस्ताना ताल्लुक़ात की हिफ़ाज़त और अहले ख़ानदान के साथ ख़ुशगवार ज़िन्दगी का राज़ उसी में छिपा है। क्योंकि जिन लोगों का ज़हनी उफ़ुक़ वसीअ और फ़हम व बसीरत गहरी है वो लोगों की फ़ितरत को समझते हैं, तब्दीलियों को महसूस करते हैं और ख़ुद को दूसरों की जगह पररखकर उनके एहसासात को समझने की कोशिश करते हैं और उनके ज़ाहिर और बातिन के अहवाल व कैफ़ियात का अन्दाज़ा करते हैं।

जहाँ तक रंज व अलम का ताल्लुक़ है, फ़हम व बसीरत का हामिल इंसान तमाम मामलात का सहीह इदराक रखता है और उसको मालूम है कि कभी भी उसको मुश्किलात का सामना होगा और वो जो कुछ चाहता है वैसा नतीजा बरामद न होगा क्योंकि ये हयाते इंसानी की ऐन फ़ितरत है। दुनिया में कोई इंसान ऐसा नहीं जिसको वो सब कुछ मिल गया हो जो वो चाहता था। कई बार इंसान एक बात नापसन्द करता है और उसी में उसके लिये भलाई छिपी होती है और कई बार आदमी किसी मामले में फ़रहत महसूस करता है और हक़ीक़त में उसमें शर छिपा होता है। ख़ैर व आफ़ियत तो उसी में है जो अल्लाह तआला ने उसके लिये पसंद फ़रमाया है।

वसीअ ज़हनी उफ़ुक़ और फ़हम व फ़रासत का हामिल इंसान महसूस करता है कि वो इस वसीअ कायनात का एक निहायत छोटा सा हिस्सा है और वो रंज व अलम में बराबर का शरीक है और इसी तरह वो यहाँ की ख़ुशियों और ख़ुशबख़्तियों में भी शामिल है। वो इन बातों से ख़ुद को लाताल्लुक़ नहीं रख सकता और इसी तरह वो ये महसूस नहीं कर सकता कि तनहा वही रंजम व अलम में मुब्तला है जैसाकि वो लोग समझते हैं जो फ़हम व बसीरत से आरी होते हैं कि वो तनहा मसाइल से दोचार हैं और लोग उन्हें मश्क़े सितम बना रहे हैं और बदनसीबी उनका मुक़द्दर बन चुकी है।

जो लोग फ़हम व बसीरत के हामिल हैं, जिनका ज़हनी उफ़ुक़ वसीअ है, वो ऐसा कभी नहीं सोचते। इसके बरअक्स वो ये महसूस करते हैं कि ज़िन्दगी का वतीरा यही है और रंज व अलम उसका एक जुज़्वे लायन्फ़क (अखंड पार्ट) है। ज़िन्दगी में कभी धूप और कभी छांव, कभी ख़िज़ाँ और कभी बहार आती ही रहती है। इसलिये वो इस हक़ीक़त को क़ुबूल कर लेते हैं और अपनी तमामतर कोशिश ख़ूब से ख़ूब तर के लिये सर्फ़ करते हैं।

'अभी इस वक़्त दिल को ख़ुश रखो, कल क्या होगा इस फ़िक्र में ग़मज़दा मत रहो।'

Scanned by CamScanner

किरणें

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ

'सलामती हो तुम पर उसकी वजह से जो तुमने सब्र किया।' (सूरह रअ़द 13 : 24)

मशक़्क़त के बाद कामयाबी ज़्यादा पुर मसर्रत है

शादी व ग़म तो साथी हैं, बस आगे-पीछे चलते हैं

सुबह को जीता दौड़ में इक तो शाम को आख़िर हार गया

एक कामयाब इंसान ने अपनी आपबीती में लिखा है, 'मैंने एक मिस्कीन इंसान की हैसियत से दुनिया में आँखें खोलीं और पालने ही से फ़ाक़े के मज़े चखता रहा। मैं रोटी के एक टुकड़े के लिये माँ से ज़िद करने की तकलीफ़ से वाक़िफ़ हूँ जबकि उसके पास सूखी चपाती का टुकड़ा भी नहीं हुआ करता था। मैंने घर को उस वक़्त ख़ैरबाद कहा जब दस साल का था और मेहनत मज़दूरी शुरू की जब ग्यारह साल का था। मैं हर साल सिर्फ़ एक माह तालीम जारी रखता था। ग्यारह साल की मुसलसल मशक़्क़त के बाद मैं दो बैल और छः भेड़ों का मालिक बन सका। जिनकी क़ीमत सिर्फ़ चौरासी डॉलर थी। मैंने एक पीनी भी अपनी लज़्ज़त काम व दहन के लिये ख़र्च नहीं की। मैंने जिस दिन से कमाना शुरू किया था उस दिन से इक्कीस साल की उम्र तक एक-एक पैसा जमा करता रहा। मैं हक़ीक़ी थकान से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ। मैंने काम की तलाश में मीलों पैदल सफ़र किये हैं ताकि मैं अपने साथियों से अपने लिये काम की बाबत दरयाफ़्त कर सकूँ और मैं अपनी साँस की आमद व रफ़्त को जारी रख सकूँ। इक्कीसवें साल के पहले महीने में, मैंने जंगलात की ख़ाक छानी और बैलगाड़ी के ज़रिये से वहाँ से जलाने की लकड़ियाँ लाने का काम भी किया। मैं तुलूअे फ़ज्र से लेकर रात का अंधेरा फैलने तक मुसलसल मशक़्क़त करता था जिसका मुआवज़ा मुझे माहाना सिर्फ़ छः डॉलर मिला करता था और मुझे हर डॉलर ज़िन्दगी की तारीक रातों में चौधवीं के चाँद की मानिन्द चमकदार दिखाई देता था।'

'तुमसे माज़ी में कोई ग़लती सरज़द हुई है तो उससे सबक़ हासिल करो और उससे इबरत हासिल करने के बाद उसको ज़हन से निकाल दो।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'कह दीजिये, अल्लाह तआला तुम्हें इससे और हर क़िस्म के कर्ब (परेशानी) से निजात देगा।' (सूरह अन्‌आम 6 : 64)

अपने हालात को अपना लो और फिर उस पर क़ाबू पा लो

साथ देते हौसला ज़ाग़ व ज़ग़न में था कहाँ
मैं सूए मंज़िल चला शाहीं सिफ़त तनहा रहा

मैं एक ऐसे जवान मर्द को जानाता हूँ जिसके पांव ज़ख़्मी होने के सबब काट दिये गये थे। मैं उसके पास गया ताकि उसकी दिलजूई करूँ। वो दानिशमन्द और अहले इल्म इंसान था। मैंने चाहा कि उससे अर्ज़ करूँ,

'क़ौम आपसे ये उम्मीद नहीं रखती कि आप तेज़ दौड़ने में चेम्पियन होंगे या एक फ्री स्टाइल पहलवान बनेंगे। इसके बरख़िलाफ़ क़ौम आपसे ये उम्मीद वाबस्ता किये हुए है कि आप उनको अपनी फ़िक्र अंगेज़ दानिशमन्दाना बातों से रहनुमाई फ़रमायेंगे और अल्हम्दुलिल्लाह कि आप ये सब कुछ कर सकते हैं।'

जब मैं उसकी मिज़ाज पुर्सी के लिये हाज़िर हुआ तो उसने कहा, 'अल्हम्दुलिल्लाह! मेरे पांव कई दहाइयों तक मेरे साथ रहे और वो बड़े अच्छे साथी थे। मेरा ईमान व यक़ीन सलामत और दिल उस पर मुतमइन है।'

एक दानिशमन्द का क़ौल है, हमारा ज़हनी व क़ल्बी सुकून उस वक़्त तक बरक़रार रहता है जब तक हम बदतरीन सूरते हाल को क़ुबूल करने के लिये तैयार रहते हैं।

इसकी एक बड़ी नफ़्सियाती वजह ये है कि सूरते हाल को तस्लीम कर लेने से निशात व शादमानी तमाम हुदूद व कुयूद से आज़ाद हो जाती है। लेकिन उसके बावजूद हज़ारों-हज़ार अश्ख़ास ऐसे हैं जो मग़लूबुल ग़ज़ब होकर अपनी ज़िन्दगियाँ तबाह कर लेते हैं क्योंकि वो तल्ख़ हक़ाइक़ को क़ुबूल करने से गुरेज़ करते हैं और जो बाक़ी मान्दा है उसे बचाने की फ़िक्र नहीं करते। इसके बजाय कि वो अपनी आरज़ूओं का महल दोबारा तामीर करें अपने माज़ी की तल्ख़ियों से मअरका आराई में उलझे रहते हैं। लिहाज़ा वो अपने आपको ऐसी मशक़्क़त में डाल लेते हैं जिसका कोई नतीजा बरामद नहीं होता।

इस्लामी नुक़्त-ए-नज़र से माज़ी की नाकामियों पर मातम करना और आँसू बहाना और माज़ी की अलम नाकियों और शिकस्त पर रोना-धोना, नाशुक्रेपन की दलील है और इस क़िस्म की मायूसी कुफ़्र और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तक़दीर से इंकार और इन्हिराफ़ है।

'मायूसी बदतरीन दुश्मन है जो तुम्हारे क़ल्बी सुकून को ग़ारत कर देती है।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'हमने तुमको मोअ़तदिल (बीच की) उम्मत बनाया है।' (सूरह बक़रा 2 : 143)

अक़्लमन्द माँ की अहम और मुफ़ीद नसीहतें

मुसीबत के मारे जो कल तक यहाँ थे
वही आज हैं ऐश व इ़शरत में डूबे

अ़रब की ख़्वातीन में से एक अ़क़्लमन्द माँ की अहम और चन्द मुफ़ीद नसीहतें हैं जो निहायत मुख़्तसर और जामेअ़ हैं। ये वसियत उमामा बिन्ते हारिस़ की है जो उसने अपनी बेटी उम्मे अयास बिन्ते औफ़ से की थी जब वो शादी के बाद हजला उरूसी (पालकी) में बैठी थी। ये नसीहतें इस तरह हैं :

ऐ मेरी प्यारी बेटी! अ़न्क़रीब तुम उस घर को ख़ैरबाद कहने वाली हो जिसमें तुमने परवरिश पाई, जहाँ तुमने पांव-पांव चलना सीखा। अगर औ़रत बाप की दौलत और हाजत रवाई की वजह से शौहर से बेनियाज़ होती तो तुम सबसे ज़्यादा ग़नी होतीं। लेकिन औ़रतें मर्दों के लिये और मर्द औ़रतों के लिये पैदा किये गये हैं।

पहली और दूसरी बात : अपने शरीके हयात के साथ क़नाअ़त के साथ बसर करना और उसकी बातें तवज्जह से सुनना और उसकी इताअ़त करना।

तीसरी और चौथी बात : इसका ख़्याल रखना कि तुम अच्छी नज़र आओ और तुम्हारे जिस्म से अच्छी ख़ुश्बू आये। उसकी निगाह तुम्हारे जिस्म की किसी ऐसी चीज़ पर न पड़े जो बद हैयत (शक्ल) नज़र आये और उसकी नाक में तुम्हारे जिस्म की ख़ुश्बू ही जाये।

पाँचवीं और छठी बात : उसके खाने और सोने के अवक़ात का लिहाज़ करना। शदीद भूख शौला ग़ज़ब को भड़कायेगा और बेसुकूनी के अंदर शदीद गुस्से को उभारेगी।

सातवीं और आठवीं बात : उसके ख़ादिमों और बच्चों का ख़्याल रखना और उसकी दौलत की हिफ़ाज़त करना। उसके माल की हिफ़ाज़त इस बात की दलील समझी जायेगी कि तुम उसको चाहती हो और ख़ादिमों और बच्चों का ख़्याल इस बात की तरफ़ इशारा है कि तुम में तन्ज़ीमी सलाहियत भरपूर है।

नवीं और दसवीं बात : न तो उसके किसी राज़ (भेद) को फ़ाश करना और न कभी उसके किसी हुक्म को टालना। क्योंकि राज़ फ़ाश कर देने की वजह से तुम उसकी सर्द महरी से महफ़ूज़ नहीं रह पाओगी और तुम उसकी नाफ़रमानी करोगी तो उसके दिल में तुम्हारी तरफ़ से नफ़रत बैठ जायेगी। मेरी बेटी! ख़बरदार उसके सामने अपनी ख़ुशी ज़ाहिर न करना जब वो पज़मुरदा और उदास हो और कभी अपना चेहरा उसके सामने मग़मूम न बनाना जब वो ख़ुश हो। (सैदुल ख़ातिर लिइब्ने जौज़ी, पेज नम्बर : 217)

'तुम्हारी ख़ुशबख़्ती कहीं और नहीं बल्कि ख़ुद तुम्हारे हाथों में है।'

Scanned by CamScanner

किरणें

'कल सूरज तुलूअ होगा और रूह मसर्रत से हमकिनार होगी।'

उसने अपनी रूह को बालीदा किया और अपने रब को राज़ी कर लिया

कुफ़्र हैं मायूसियाँ अल्लाह से उम्मीद रख
आज ग़म तो कल ख़ुशी, दुनिया का ये दस्तूर है

क्या तुमने क़बीला जुहैना की एक ख़ातून का वाक़िया सुना है। उस जन्नत मकानी से एक लग़्ज़िश सरज़द हुई कि उससे ज़िना का इर्तिकाब हो गया। उसने अल्लाह तआला को याद किया और उससे तौबा की और उसकी तरफ पलटी। वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में इस ग़र्ज़ से हाज़िर हुई कि उसको संगसार करके पाक कर दिया जाये। वो इस हाल में हाज़िर हुई कि वो हामिला थी। उसने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने ऐसे जुर्म का इर्तिकाब किया है जिस पर हद जारी की जाती है। इसलिये मुझ पर हद जारी फ़रमाइये।

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसके वली को बुलवाया और फ़रमाया, **'इसको अच्छी तरह रखो, जब विलादत से फ़ारिग़ हो जाये तो मेरे पास लाओ।'** उसके वली ने ऐसा ही किया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हुक्म दिया कि इसको अच्छी तरह कपड़े में छिपाकर बांध दो। फिर आप (ﷺ) ने उसको संगसार करने का हुक्म दिया। फिर आप (ﷺ) ने उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! आप इसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ा रहे हैं जबकि इसने ज़िना का इर्तिकाब किया है? रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'इसने ऐसी तौबा की है कि अगर इसकी तौबा मदीना के सत्तर लोगों में तक़सीम कर दी जाये तो उनकी मग़्फ़िरत के लिये काफ़ी होगी। क्या तुमने किसी ऐसे को देखा है जो उससे बेहतर हो जिसने अल्लाह की ख़ुश्नूदी के लिये अपनी जान क़ुर्बान कर दी हो?'** (सहीह मुस्लिम, किताबुल हुदूद, बाब मन इअतरफ़ अला नफ़्सिही बिज़्ज़िना : 6961, सुनन अबी दाऊद : 2444, सुनन तिर्मिज़ी : 5341, सुनन नसाई : 7591, मुस्नद अहमद : 4/924)

ये उसके ईमान व यक़ीन की मज़बूती थी कि उसने अपने आपको पाक करने के लिये आमादा किया और दुनिया पर आख़िरत को तरजीह दी। अगर उसका ईमान इस क़दर मज़बूत न होता तो वो हर्गिज़ संगसारी के ज़रिये से मौत को तरजीह न देती। कोई ये ऐतराज़ कर सकता है कि आख़िर उसने ज़िना का इर्तिकाब क्यों किया? क्या ये उसके कमज़ोर ईमान की दलील नहीं है? उसका जवाब ये है कि एक इंसान कमज़ोर हो सकता है और उससे गुनाह का इर्तिकाब हो सकता है क्योंकि इंसान तबअन कमज़ोर पैदा किया गया है और उससे लग़्ज़िश हो सकती हैं क्योंकि वो उजलत पसंद वाक़ेअ हुआ है और वो एक लम्हे के लिये गुमराह भी हो सकता है क्योंकि उसमें नुक़्स (कमी) मौजूद है लेकिन जब ईमान की तख़ुम रेज़ी उसके दिल में होती है और उसका पेड़ फलदार होता है तो उस वक़्त उसका असल जौहर और ईमान की मज़बूती उभरकर सामने आ जाती है और यही सबब है कि उस औरत ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पाक करने की दरख़्वास्त में जल्दी की और अल्लाह तबारक व तआला की ख़ुश्नूदी, उसकी रहमत और मग़्फ़िरत के हुसूल के लिये अपनी जान, जाने आफ़रीं के सुपुर्द कर दी।

'शिकवा कुनाँ (शिकायत करने वाली) मत रहो और हमेशा शिकायत का दफ़्तर मत खोलो।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'ग़म व अन्दौह की शिद्दत उसके ख़ातमे का ऐलान है।'

उसने दीन की हिफ़ाज़त की, अल्लाह तआला ने उसकी जान की हिफ़ाज़त फ़रमाई

हाँ! नहीं कुछ आर गर हो आदमी महरूमे माल
आर है इन्साँ का होना बेतजम्मुल बदख़िसाल

एक हसीन व जमील औरत की कहानी है जो अपने माल व दौलत और ख़ुदम व हशम के साथ घर में महसूर रह गई और उसे उस वक़्त भागने का मौक़ा नहीं मिला। जब इस्कन्दरिया पर सलीबियों ने हमला किया था। फिरंगी उसके मकान में नंगी तलवार हाथों में लिये दाख़िल हुए और उनमें से एक ने सवाल किया, माल कहाँ है?

उसने ख़ौफ़ज़दा होकर जवाब दिया, माल कमरे के अंदर टंक में हैं और उसने उन टंकों की तरफ़ इशारा किया जो उस कमरे में रखे हुए थे जिसमें वो बैठी हुई थी। ख़ौफ़ से उसके बदन पर लरज़ा तारी हो गया। उनमें से एक ने कहा, ख़ौफ़ मत करो, तुम मेरे साथ रहोगी और मेरी दौलत और मेरी नज़रे इनायत की मुस्तहिक़ होगी। वो समझ गई कि वो उसको पसंद करता है और अपने लिये मख़्सूस करना चाहता है। इसलिये वो उसकी तरफ़ क़दरे माइल हुई और कहा, मैं बैतुल ख़ला जाना चाहती हूँ और उसने अपनी बात में नर्मी पैदा की।

उसने समझा कि वो भी उसको चाहती है इसलिये उसको बैतुल ख़ला जाने और रफ़ए हाजत करने की इजाज़त दे दी। वो अंदर चली गई और वो लोग टंक ले जाने में मशग़ूल हो गये। ख़ातून घर से फ़रार होने और ख़ुद को एक स्टोर रूम में छिपाने में कामयाब हो गई जहाँ बेकार चीज़ पड़ी थीं। फिरंगियों ने घर लूटने के बाद उसको तलाश किया लेकिन उसको नहीं पा सके। उन्होंने लूट का माल उठाया और चले गये। औरत अपने इस हीले की वजह से क़ैदी बनने से बच गई और महफ़ूज़ रही। उसके गुलाम भी छत पर छिप गये और बच गये। औरत ने उस मौक़े पर कहा, अपने ईमान व यक़ीन और इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त माल व ज़र और हीरे-जवाहरात की हिफ़ाज़त से बेहतर है जिसे जाँबाज़ लोग महज़ इसी ग़र्ज़ के लिये बहिफ़ाज़त रखते हैं। गुरबत व इफ़्लास इससे कहीं बेहतर है कि इंसान को क़ैदी बनना पड़े और अपने दीन को बदलने के लिये मजबूर होना पड़े।

तुम्हारे लिये इन नागुज़ीर हालात व मसाइब को क़ुबूल करने के सिवा चारा नहीं जिनका सामना तुमको अपनी ज़िन्दगी में बहरहाल करना है और जिनको बदल डालना तुम्हारे इख़्तियार में नहीं है। लेकिन उन नामसाइद हालात (विपरित परिस्थितियों) का मुक़ाबला तुम अपनी ईमानी क़ुव्वत और सब्र की मदद से कर सकती हो।

*****

Scanned by CamScanner

'माँ ही एक मर्दे मैदान, बहादुर और रिजाले कार को जन्म देती है।'

आँखों में वो क़तरा है जो गोहर न हुआ था

ज़िन्दगी कसबे सआदत के लिये वजहे जमील
अज़ दियारे ख़ैर से है ज़िन्दगी ख़ैरे कसीर

अल्लाह तबारक व तआला तौबा करने और पाकीज़गी इख़्तियार करने वालों को महबूब रखते हैं। वो अपने बन्दों की तौबा पर उससे कहीं ज़्यादा ख़ुशी का इज़हार फ़रमाते हैं जितना कि वो इंसान ख़ुशी महसूस करता है जिसका ऊँट, जिस पर उसका ज़ादे राह, खाना-पानी लदा हुआ था और वो ऊँट गुम हो जाये जबकि वो ख़ुद एक बेआबो-ग्याह चटियल मैदान में हो और उसकी आँख लग जाये और जब आँख खुले तो उसकी सवारी सारे अस्बाब यानी खाना-पानी के साथ उसके सिरहाने मौजूद हो। वो खड़ा हो और उसकी रस्सी थाम ले और फ़र्ते मसर्रत से उसकी ज़बान से ये अल्फ़ाज़ निकलें (बेइन्तिहाई ख़ुशी की वजह से अल्फ़ाज़ की तर्तीब उलट दे) ऐ अल्लाह! तू मेरा बन्दा है और मैं तेरा रब हूँ.....! (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तौबा, बाब फ़िल्हज़्ज़ि अलत्तौबा : 2747, शौबुल ईमान लिल्बैहक़ी : 6703)

सुब्हानअल्लाह! सबसे बुलंद उसकी शान है और उसकी रहमत इतनी वसीअ कि हर चीज़ पर छाई हुई है। अपने बन्दों की तौबा से वो किस क़दर ख़ुश होता है कि उन्हें अपनी जन्नत और ख़ुश्नूदी से नवाज़ता है।

अल्लाह तबारक व तआला अपने मोमिन बन्दों को पुकार कर कहता है,

وَتُوبُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ ٱلْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣١﴾

'और ऐ मोमिनो! तुम सब मिलकर अल्लाह से तौबा करो, उम्मीद है कि तुम फ़लाह पाओगे।'

(सूरह नूर 24 : 31)

तौबा के आँसूओं से दिल की सफ़ाई है और ये एक आतिशे नदामत है जो दिल में रोशन होती है और एक एहसासे शर्मिन्दगी है जो आँखों से सैले इन्फ़िआल को रवाँ कर देती है। ये अल्लाह की राह में पहला क़दम है और आख़िरत की कामयाबी हासिल करने वालों का सरमायाए हयात है। अल्लाह की तरफ़ इरादा करने वालों का पहला मरहला है। अल्लाह की तरफ़ माइल होने वालों की इस्तिक़ामत की कुँजी है। ताइब रोता है, गिड़गिड़ाता है और अल्लाह से मग़्फ़िरत की दुआयें करता है। जब लोग पुरसुकून नींद के मज़े ले रहे होते हैं, ताइब का दिल ख़ौफ़े इलाही से बेचैन होता है। जब ख़ल्क़े इलाही आराम करती है। ताइब ऐश व आराम से महरूम होता है। वो ग़मज़दा और शिकस्ता होकर अपने रब के सामने खड़ा होता है और उसका सर बारे निदामत से झुका होता है और वो अपने गुनाहों और ख़ताओं को याद करके लरज़ा बरअन्दाम होता है। उस पर हुज़्न व मलाल की कैफ़ियत तारी होती है। उसके दिल में एक चिंगारी सी लगी होती है और आँखों से आँसूओं का सैलाब उमड़ता है। उसका दिल कल की कामयाबी का मुन्तज़िर रहता है क्योंकि बारे गुनाह (गुनाह के बोझ) से उसने ख़ुद को सुबुकदोश कर लिया है ताकि वो पुल सिरात को आसानी से तय कर ले।

'मुस्बत (सकारात्मक) तौर पर सोचो, ख़ासकर जिस दिन तुम्हें नाकामियों का मुँह देखना पड़े। मुम्किन है कि उसके बाद का दिन तुम्हारे लिये ख़ुशियों और कामयाबियों का मुज़दा (ख़ुशख़बरी) लेकर आये।'

Scanned by CamScanner

حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ

'मर्दों के पीछे अल्लाह की हिफ़ाज़त व निगरानी में उनके हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त करती हैं।'

(सूरह निसा 4 : 34)

अल्लाह की राह में जान देने वाली ख़ातूने आलम

अक्सर ऐसा भी ये देखा है जहाँ में दोस्तो!
जिसको समझा था बुरा, अंजाम से अच्छा रहा!!

वो अपने ज़माने के सबसे अज़ीमुश्शान महल में रहती थी। अपने बेशुमार गुलामों और बान्दियों के साथ जो उसके इशारे पर हरकत करते थे। उसकी ज़िन्दगी ऐश व इशरत और नाज़ व नेमत से इबारत थी।

ये ख़ातूने आलम सय्यिदा आसिया बिन्ते मज़ाहिम (रज़ि.) हैं जो फ़िरऔन की ज़ौजियत में थीं। एक औरत, सिन्फ़े नाज़ुक अपने महल में महफ़ूज़ और मुतमइन। उसके दिल में नूरे हिदायत तुलूअ हुआ। उसने जाहिली निज़ाम को चैलेंज कर डाला जो उसके शौहर फ़िरऔने वक़्त की सरबराही में क़ायम था।

वो ईमानी बसीरत से मुनव्वर थी। उसने ऐश व इशरत की ज़िन्दगी में ख़ुदम व हशम की परवा नहीं की। वो इस अज़ीम मर्तबे की हामिल थी कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपनी किताब कुरआन मजीद में इसका ज़िक्र किया है और उसको अहले ईमान के लिये एक नमूना बनाकर पेश फ़रमाया है,

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۱﴾

'और अहले ईमान के मामले में अल्लाह फ़िरऔन की बीवी की मिसाल पेश करता है जब कि उसने दुआ की ऐ मेरे रब! मेरे लिये अपने यहाँ जन्नत में एक घर बना दे और मुझे फ़िरऔन और उसके अमल से बचा ले और ज़ालिम क़ौम से मुझको निजात दे।' (सूरह तहरीम 66 : 11)

मुफ़स्सिरीन इस आयत की तफ़्सीर बयान करते हुए लिखते हैं, 'सय्यिदा आसिया (रज़ि.) ने दुनिया पर आख़िरत को तरजीह दी और वो इस बात की मुस्तहिक़ थीं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उनका ज़िक्र उन औरतों के साथ करें जिन्होंने अपने ईमान की तक्मील की। रसूलुल्लाह (ﷺ) का इरशादे गिरामी है, **'बहुत से मर्द ऐसे हैं जो दर्जे-ए-कमाल को पहुँचे (अम्बिया अलै.) लेकिन औरतों में किसी को दर्ज-ए-कमाल हासिल नहीं हुआ सिवाय आसिया फ़िरऔन की बीवी और मरयम बिन्ते इमरान और आइशा की फ़ज़ीलत औरतों पर ऐसी है जैसे कि सरीद को दूसरे खानों पर।'** (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब ज़रबल्लाहु मसला : 1143, सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइलुस्सहाबा, बाब फ़ज़ाइले ख़दीजा उम्मुल मुअमिनीन : 1342, सुनन तिर्मिज़ी : 4381, सुनन इब्ने माजा : 208)

ये हैं सय्यिदा आसिया (रज़ि.) मोमिना, सादिक़ा, क़स्रे फ़िरऔन की तारीकी में एक रोशन चिराग़। कौन है जो हमारे लिये ऐसी शमअे हिदायत को मुनव्वर करे जो सब्र व सबात और दावते इलल्लाह की हामिल हो।

'अपने फ़िक्र व ख़्याल और तफ़्फ़ुकरात पर क़ाबू पाओ और ख़ुश रहो।'

Scanned by CamScanner

दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब औरत

(6)

नवादिरात

सूरते शमशीर है दस्ते क़ज़ा में वो क़ौम
करती है जो हर ज़माँ अपने अमल का हिसाब

इक़बाल

Scanned by CamScanner

किरणें

إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

'बिला शुब्हा अल्लाह की रहमत नेकोकारों से क़रीब है।' (सूरह आराफ़ 7 : 56)

अपने रब पर तवक्कल करो और पुरसुकून नींद सो जाओ

दर्दो-अलम से देता है ख़िल्क़त को जो निजात
जूदो करम भी हैं उसी रहमान की सिफ़त

उस ख़ातून के नाम जो अपने रब की ख़ुश्नूदी के साथ और उसकी तक़दीर पर राज़ी बरिज़ा होकर गहरी पुरसुकून नींद सो चुकी है, अपने इर्द-गिर्द के सुलगते मसाइल और हालात से बेपरवा और महफ़ूज़ (सुरक्षित) है। जिसने हुज़्न व मलाल को कभी दिल में दाख़िल होने की इजाज़त नहीं दी और कभी उसकी आँखें अश्क बार नहीं हुईं।

हर उस औरत के नाम जिसने अपनी औलाद को खोया है और अपनी सहेलियों, हमजोलियों और वालिदैन का मातम कर चुकी है। हर उस ग़मज़दा मोमिना के नाम जो इब्तिला और आज़माइशों से दोचार हुज़्न व मलाल की चादर में लिपटी हुई है।

अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिये अज्रे अज़ीम का वादा कर रखा है और तुम्हारे दर्जात बुलंद फ़रमा दिये हैं और तुम्हारे ख़सारे की तलाफ़ी फ़रमा दी है। अल्लाह तबारक व तआला का इरशाद है, **'सब्र और नमाज़ से मदद लो बेशक नमाज़ एक सख़्त मुश्किल काम है, मगर फ़रमांबरदार बन्दों के लिये मुश्किल नहीं है।'**

(सूरह बक़रा 2 : 45)

हज़रत अली (रज़ि.) का इरशाद है, 'सब्र ईमान का हिस्सा है और उसकी हैसियत दीन में ऐसी है जैसे जिस्म में सिर।' (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा : 1/172, मुसन्नफ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 21031)

तो ऐ मुसीबत पर सब्र करने वाली! तुम्हारे लिये बड़ी ख़ुशख़बरी है। उख़रवी सवाब, जन्नतुल फ़िरदौस, हमेशा रहने वाली जन्नत में इलाहे वाहिद का कुर्ब जो सिद्दीक़ीन का मक़ाम है। ये बदला है उन नेक आमाल का जो तुमने दुनिया की ज़िन्दगी में रहकर किया और अपने रब के पास भेजा है और उन कोशिशों का जो तुमने दीने हक़ के लिये की हैं। मुबारकबाद! तुम्हारे सब्र व सबात पर और ईमान व यक़ीन की दौलत पर और इस ईक़ान पर कि जो कुछ तुम कर रही हो उस पर अल्लाह तबारक व तआला जरूर अज्रे अज़ीम से नवाज़ेंगे। अन्क़रीब तुम जान लोगी कि हर हाल में तुम बड़े फ़ायदे में हो। (शरह उसूलुल ऐतक़ाद लिल्लालकाई : 1569, हिल्यतुल औलिया 1/75)

अल्लाह तआला फ़रमाता है,

وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٥﴾

'और सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी दो।' (सूरह बक़रा 2 : 155)

'ख़ुद ऐतमादी उम्र के हर हिस्से में ज़िन्दगी की मअनवियत की तलाश है और ख़ुद को इस क़ाबिल बनाना कि ज़िन्दगी से मज़ीद तवानाई हासिल करें।'

Scanned by CamScanner

'अल्लाह अपने बन्दों के हालात से निहायत बाख़बर है।' (सूरह शूरा 42 : 42)

असल कोर चश्मी (अंधापन) दिल की बेबसीरती है

हर रात की भयानक ज़ुल्मत में उम्मीद की सुबह ख़न्दाँ है
ये ग़म, ये अलम, ये रंज व मेहन, कुछ देर का सारा मेहमाँ है

एक अन्धा आदमी था जो अपनी 'मुख़्लिस और मुहब्बत करने वाली बीवी, सआदतमन्द औलाद और वफ़ाशिआर' दोस्तों के साथ ख़ुश व ख़ुर्रम ज़िन्दगी बसर कर रहा था। कोई चीज़ अगर उसके लिये परेशानकुन थी वो तारीकी जिसमें वो जी रहा था। उसकी इन्तिहाई आरज़ू यही थी कि चीज़ों को अपनी आँखों के नूर से देखे जो उसकी ख़ुशियों को दोबाला कर दे।

एक माहिर डॉक्टर उस शहर में वारिद हुआ जिसमें ये अन्धा रहता था। वो डॉक्टर के पास गया और ऐसी दवा की फ़रमाइश की जो उसकी बीनाई के लौटने में मुआविन साबित हो। डॉक्टर ने उसे आँखों में डालने के लिये दवायें दीं और उसे समझाया कि उनको कैसे इस्तेमाल करना है और उसको मुतनब्बह कर दिया कि उसकी बीनाई किसी वक़्त भी अचानक लौट सकती है।

उस कोरे चश्म इंसान ने उन दवाओं को इस्तेमाल करना शुरू किया जबकि कोई आदमी ऐसी हालत पर यक़ीन नहीं कर सकते कि उसकी बीनाई लौट सकती है। एक दिन जब वो बाग़ में बैठा था कि अचानक उसके आँखों की रोशनी लौट आई। वो ख़ुशी से दीवानावार घर की तरफ़ भागा कि वो अपनी प्यारी बीवी को ये ख़ुशख़बरी सुनाये कि उसकी आँखें ठीक हो गई हैं। लेकिन उसने बीवी को देखा कि वो उसके दोस्त के साथ रंगरिलियाँ मना रही है। उसको अपनी आँखों पर ऐतबार न आया और वो दूसरे कमरे में गया। वहाँ उसने अपने बेटे को देखा कि वो उसकी तिजोरी से रूपये चुरा रहा है। अन्धे ने तेज़ी से सीढ़ियाँ तय कीं और वो चीख़-चीख़ कर कहने लगा, 'ये डॉक्टर नहीं, मल्ऊन जादूगर है।'

तब उसने एक सूई ली और अपनी आँखें फोड़ ली और इस तरह घबराहट में उस अज़ीम ख़ुशबख़्ती से महरूम हो गया जो उसे हासिल हो चुकी थी।

'रूहानी बीमारियाँ और नफ़्सियाती उलझनें जिस्मानी आरिज़े से कहीं बढ़कर हैं।'

Scanned by CamScanner

किरणें

قَالَ كَلَّا ۚ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٦٢﴾

'उसने कहा, हर्गिज़ नहीं, मेरे साथ मेरा रब है वो जरूर मेरी रहनुमाई फ़रमायेगा।'

(सूरह शुअ़रा 26 : 62)

इन्तिक़ाम के दरपे मत रहो!

किफ़ालत रही कल तलक जिसकी तुमको
वही कल तुम्हारी किफ़ालत करेगा

कुछ लोग आसान पसंद होते हैं और इस बात को ज़्यादा अहमियत नहीं देते कि अपने तमाम हुक़ूक़ का मुताल्बा करें। वो बहुत सारे उमूर से सर्फ़े नज़र करते हैं और कभी-कभी वो ख़ाली ज़हन रहते हैं और आम तौर पर वो सहूलत पसंद होते हैं और बहुत ज़्यादा खोज बीन में नहीं पड़ते। इबारत के पीछे क्या है और इसके बैनस्सुतूर क्या बातें हैं उन्हें जानने के दरपे नहीं होते और उन उमूर में बहुत ज़्यादा दिमाग़ सोज़ी नहीं करते।

कुछ दूसरे क़िस्म के लोग हैं जिनके मिज़ाज में बर्दाश्त करने की सलाहियत बिल्कुल नहीं होती और वो किसी चीज़ को नज़र अन्दाज़ नहीं कर सकते और अपने ज़र्रा बराबर हुक़ूक़ से दस्तबरदार नहीं हो सकते। वो हमेशा दूसरों के साथ दस्त व गिरेबान रहते हैं और चाहते हैं कि अपना पूरा-पूरा हक़ वसूल कर लें और अक्सर वो हक़ से ज़्यादा के तलबगार होते हैं और उस पर भी वो ख़ुश नहीं होते।

फ़ितरी तौर पर वो इंसान जिसके मिज़ाज में अंगेज़ करने और नज़र अन्दाज़ करने की सलाहियत है वो क़ल्बी सुकून के साथ मुतमइन और ख़ुश और परेशानियों से दूर होगा और इसी तरह वो लोगों के दिलों में अपने लिये जगह बना लेगा, लोगों की मुहब्बत और तवज्जह का मर्कज़ बन जायेगा और उसके सामने कामयाबी का दरवाज़ा खुल जायेगा और वो उनसे ज़्यादा हासिल कर लेगा जो लोग अल्लाह के बन्दों से जंगो-जिदाल करके हासिल करते हैं। जो बाल की खाल उतारते हैं और बदनियती को जानने के लिये सूरते हाल का तजज़िया करते रहते हैं और इसी तरह वो अपनी ज़ात के लिये हर तरह की परेशानियाँ मोल लेते रहते हैं। लोग उससे नफ़रत करते हैं और उससे दूर भागते हैं। आख़िरकार उसके सामने कामयाबी का दरवाज़ा बंद हो जाता है। इसीलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) दो उमूर में से ज़्यादा आसान अम्र को इख़्तियार करते थे बशर्तेकि वो गुनाह के काम न हों और लोग उसकी वजह से दूर न जायें। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'अल्लाह तआ़ला ऐसे बन्दे पर रहम फ़रमाता है जो सहूलत पसंद है जब वो ख़रीदारी करता है और जब बेचता है और जब वो किसी से अपने हक़ का तक़ाज़ा करता है।'** (सहीह बुखारी, किताबुल बुयूअ, बाब अस्सुहूलतु वस्समाहतु फ़िश्शरा : 2076, सुनन इब्ने माजा : 2203, सहीह इब्ने हिब्बान : 4903, शौबुल ईमान लिल्बैहक़ी : 7758)

'तुम जो कुछ करना चाहती हो अभी कर डालो और कल के बारे में सोच-सोच कर परेशान मत रहो।'

Scanned by CamScanner

مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى

'हमने ये क़ुरआन तुम पर इसलिये नहीं नाज़िल किया कि तुम मुसीबत में पड़ जाओ।'

(सूरह ताहा 20 : 2)

इम्तियाज़ी शान हुसूल व याफ़्त से मुतअय्यन की जाती है

न हासिल हो ताईदे ग़ैबी जिसे याँ

तो फ़िक्र व नज़र उसकी सब नासवाब

एक मालदार ने बयान किया, 'दुनिया का मालदार तरीन इंसान होने के नाते दौलत के बारे में मेरा कोई मख़्सूस नज़रिया या एहसास नहीं है। मैं एक फ्लेट में अपनी बीवी के साथ मामूली इंसान की तरह ज़िन्दगी गुज़ारता हूँ। मैं न शराब पीता हूँ और न सिगरेट पीता हूँ और न एक खरबपती आदमी की तरह रिहाइश इख़्तियार करता हूँ जिसकी तस्वीर अख़बारों में मिलती है। ख़ूबसूरत आरामदेह शिकारा, शहर से दूर आलीशान महल, दावतों के हंगामे और कमसिन ख़ूबसूरत लड़कियों से शादियाँ जो तलाक़ पर मुन्तज होती हैं और जिनके हुक़ूक़ की अदायगी में लाखों-लाख अदा करने पड़ते हैं।

मुझे काम से इश्क़ है और मैं उसमें ख़ुशी महसूस करता हूँ। मैं बिल्उमूम काम के दौरान दफ़्तर में खाना खाता हूँ। मुझे इससे कोई मसर्रत हासिल नहीं होती कि मैं अरबों और खरबों का मालिक हूँ। मुझे तो बस इस तस्वीर से खुशी मिलती है कि मेरा आबाई शहर टोकियो किस तरह एक हक़ीर छोटे क़स्बे से एक अज़ीमुश्शान शहर और दारुस्सलतनत में तब्दील हुआ। इस जदीद तर्ज़े तामीर की वजह से जिसमें मेरा भी हिस्सा है, ये तिजारती मर्कज़ पूरी दुनिया के लोगों की तवज्जह का मर्कज़ बन गया है.....। मुख़्तसरन ये कि मेरी ख़ुशी मेरी याफ़्त में छिपी है।'

'हसरत व यास एक कश्ती को समुन्द्र की तह से ऊपर नहीं ला सकती।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ط

'क्या अल्लाह अपने बन्दों के लिये काफ़ी नहीं है?' (सूरह ज़ुमर 39 : 36)

आलमे कुफ़्र, हालते कर्ब व बला में कराह रहा है

ख़ुलूदो बक़ा गर जो होती जहाँ को

अकेला मैं रहता जहाँ में अबद तक

डॉक्टर हारवर्ल्डसीन हाबिनीन ने जो मायो अस्पताल में हैं, एक गश्ती मुरासला तमाम डॉक्टरों, माहिरीने अमराज़ और सर्जरी अस्पतालों और सन्अती इदारों में काम करने वालों के पास भेजा जिसमें उन्होंने ये इन्किशाफ़ किया कि उन्होंने 176 लोग जो तिजारत के शौबे से ताल्लुक़ रखते हैं और जिनकी उम्र 45 साल के आस-पास है, का जायज़ा लिया तो ये बात सामने आई कि उनमें हर तीसरा आदमी तीन बीमारियों में से एक में मुब्तला है जो महज़ ज़हनी तनाव का नतीजा है, अमराज़े क़ल्ब, मेअ़दे का अल्सर और हाई ब्लड प्रेशर। ये सारे लोग 45 साल की उम्र तक पहुँचने से पहले ही इनमें से किसी एक मर्ज़ के शिकार हो चुके हैं। क्या हम उन ताजिरों को कामयाब इंसान कह सकते हैं जिन्होंने दुनियावी कामयाबी की क़ीमत मेअ़दे के अल्सर या दिल की बीमारी की शक्ल में अदा की है? उसे मर्ज़ क्या नफ़ा पहुँचा सकता है जब कोई इंसान पूरी दुनिया का मालिक बन जाये और अपनी सेहत गंवा बैठे। कोई इंसान पूरी दुनिया का मालिक बन भी जाये तो ज़्यादा से ज़्यादा एक बिस्तर पर सो सकता है और तीन वक़्त खा सकता है। इसमें और एक मामूली ज़मीन पर फावड़ा चलाने वाले मज़ूदर में क्या फ़र्क़ है? एक मज़दूर ग़ालिबन ज़्यादा गहरी नींद सोता है और ख़ूब डटकर खाना खाता है बनिस्बत उस आदमी के जो आ़ला ओ़हदे (ऊँची पोस्ट) पर फ़ाइज़ और जाह व मन्सब के लिहाज़ से हिमालय की चोटी पर है।

डॉक्टर डब्ल्यू. एस. अल्वारीज़ कहते हैं, 'हर पाँच में से चार बीमारी की वजह जिस्मानी नहीं बल्कि ख़ौफ़, बुग़ज़, ख़ुदग़र्ज़ी और ज़हनी परेशानी हुआ करते हैं और उनके असरात मुस्तहकम हैं। ऐसे लोग अपनी ज़िन्दगी और अपने ज़मीर के दरम्यान हम आहंगी पैदा करने में नाकाम रहते हैं।'

'हम न माज़ी को बदल सकते हैं और न मुस्तक़बिल (भविष्य) को अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ तामीर कर सकते हैं। उन चीज़ों की हसरत में अपनी ज़िन्दगी क्यों तबाह करें जो हमारे इख़्तियार से बाहर हैं।'

Scanned by CamScanner

'गुस्सा न करो, गुस्सा न करो, गुस्सा न करो।'
(सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब अल्हज़रु मिनल ग़ज़ब : 6116, सुनन तिर्मिज़ी : 2020, मुस्नद अहमद : 2/362)

शरीके हयात और हुस्ने अख़्लाक़

ड़सरत की ज़ीस्त (ज़िन्दगी) को मेरी, इशरत से बदल दे
ज़हमत की ज़ीस्त को मेरी, रहमत से बदल दे

एक मोमिना सालेहा अपने शरीके हयात को बहुत ज़्यादा फ़रमाइशों और मुताल्बात से दिल बर्दाश्ता नहीं करती। बल्कि वो उस पर क़नाअत करती है जो अल्लाह तआला ने उसका हिस्सा मुक़र्रर कर दिया है। हमारे लिये इस मामले में रसूलुल्लाह (ﷺ) के अहले बैत का उस्व-ए-हसना मिसाली है। सय्यदना उरवा (रह.) अपनी ख़ाला सय्यिदा आइशा (रज़ि.) से रिवायत करते हैं। वो फ़रमाया करती थीं, ऐ मेरी बहन के बेटे! अल्लाह की क़सम हम महीने का नया चाँद देखते, फिर दूसरा देखते, फिर तीसरा देखते, इस तरह चाँद के तीन माह गुज़र जाते और रसूलुल्लाह (ﷺ) के घरों में आग नहीं जलती। सय्यदना उरवा (रह.) ने पूछा, ख़ालाजान! आप लोग किस चीज़ पर ज़िन्दा रहती थीं? सय्यिदा आइशा (रज़ि.) ने जवाब दिया, 'दो स्याह चीज़ों पर यानी खजूर और पानी। रसूलुल्लाह (ﷺ) के कुछ अन्सार पड़ौसी थे जिनके पास कुछ बकरियाँ थीं। वो उनका दूध रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास भिजवा देते जिन्हें हम पी लिया करते थे।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल हिबा, बाब अल्हिबतु व फ़ज़्लुहा : 2567, सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अद्दुन्या सिजनुन लिल्मुअ्मिन : 2972, सुनन इब्ने माजा : 4145)

'लम्हे से लम्हे जुड़ा हुआ है और हर लम्हा अपनी क़दरो-क़ीमत रखता है, ज़िन्दगी का तक़ाज़ा यही है कि हर लम्हे को कारआमद बनाया जाये।'

*****

Scanned by CamScanner

'अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नम भी।'

अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिये जो कुछ पसंद फ़रमाया है उस पर राज़ी रहो

तौबा तौबा बदगुमानी और फिर अल्लाह से

मेहरबानी शान उसकी, मेहरबाँ वो ज़ात है

हज़रत इब्राहीम (अलै.) की बीवी और हज़रत इस्माईल (अलै.) की वालिदा, बीबी हाजरा (की ये बातें कितनी मुतास्सिर करने वाली हैं जब वो अपने शौहर के पीछे-पीछे जा रही थीं जब वो उनको अपने बेटे हज़रत इस्माईल (अलै.) को वादी ग़ैर ज़ी ज़रअ (मक्का मुकर्रमा) में छोड़कर सफ़र पर रवाना हो रहे थे। वो बार-बार कह रही थीं, 'ऐ इब्राहीम! आप हमें एक ऐसी वादी में छोड़कर जहाँ न कोई मुनिस व ग़मख़्वार है और न कोई सामाने ज़ीस्त है, कहाँ जा रहे हैं?' हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने कोई जवाब न दिया तो उन्होंने सवाल किया, क्या अल्लाह तआला ने आपको ऐसा करने का हुक्म दिया है?

हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने जवाब दिया, हाँ!

तब बीवी हाजरा ने फ़रमाया, तब वो हमें ज़ाएअ नहीं होने देगा। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला वत्तख़ज़ल्लाहु इब्राहीम ख़लीला : 3364, सुननुल कुबरा लिन्नसाई : 8320, मुस्नद अहमद : 1/253)

बेशक अल्लाह नेकोकारों को ज़ाएअ नहीं होने देता। अल्लाह तबारक वतआला ने सूरह कहफ़ में एक नेक जोड़े को नेअमुल बदल अता करने का ज़िक्र फ़रमाया है,

وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ﴿٨٠﴾ فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا

رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾

'रहा वो लड़का तो उसके वालिदैन मोमिन थे हमें ये अन्देशा हुआ कि ये लड़का अपनी सरकशी और कुफ़्र से उनको तंग करेगा। इसलिये हमने चाहा कि उनका रब उसके बदले उनको ऐसी औलाद दे जो अख़्लाक़ में भी उससे बेहतर हो और जिससे सिला रहमी की भी ज़्यादा उम्मीद हो।' (सूरह कहफ़ 18 : 80-81)

क्या अल्लाह तआला ने उस मर्दे सालेह के ख़ज़ाने की हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम नहीं फ़रमाया जो उसने अपने बेटे के लिये रख छोड़ा था ताकि वो बड़ा होकर हासिल कर ले। इसीलिये अल्लाह तआला के हुक्म से हज़रत मूसा (अलै.) के साथी ने हज़रत मूसा (अलै.) के साथ मिलकर दीवार की तामीरे नौ की जिसमें मर्दे सालेह का ख़ज़ाना छिपा था। चुनाँचे अल्लाह तआला ने फ़रमाया,

'और उस दीवार का मामला ये है कि ये दो यतीम लड़कों की है जो इस शहर में रहते हैं। इस दीवार के नीचे उन बच्चों के लिये एक ख़ज़ाना मदफ़ून है और उनका बाप एक नेक आदमी था इसलिये तुम्हारे रब ने चाहा कि ये दोनों बच्चे बालिग़ हों और अपना ख़ज़ाना निकाल लें। ये तुम्हारे रब की रहमत की बिना पर किया गया है।' (सूरह कहफ़ 18 : 82)

'माज़ी जिस पे हमारा इख़्तियार नहीं, उसके बारे में हुज़्न व मलाल से क्या फ़ायदा और मुस्तक़बिल के अन्देशे हाय दूर-दराज़ से क्या हासिल?'

Scanned by CamScanner

किरणें

'अल्लाह की नुसरत, सब्र व इस्तिक़ामत से मशरूत है।'
(मुस्नद अहमद : 1/307, मुस्नद अ़ब्द बिन हुमेद : 636, अल्क़दरु लिल्फ़रयाबी : 154, मुअ़जम अल्कबीर लित्तबरानी : 11243)

दुनिया से मुहब्बत और उसके न मिलने का ग़म क्यों करें?

शौख़ व बेपरवा है कितना आदमी
कुफ़्र और इंकार फिर ये सरकशी

जो कोई हयाते मुस्तआ़र की हक़ीक़त जानता है कि वो किस क़द्र मुख़्तसर है और जिसको अपनी बेबज़ाअ़ती (नाचीज़ होने) का एहसास है और जो इस बात को महसूस करता है कि दुनिया किस तरह अपना रंग बदलती है और दुनिया खुद अहले दुनिया के साथ किस तरह पेश आती है, तो इंसान दुनिया की तलब में न हसरत व यास में मुब्तला होगा न उसके खोने पर हुज़्न व मलाल का शिकार। हमारे लिये दारुल आख़िरत ही बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है। आख़िरत दुनिया से कहीं अज्र व सवाब के लिहाज़ से अ़ज़ीम और बेहतर है। अल्लाह का शुक्र है कि तुम मुसलमान हो। तुमको अल्लाह वाहिद से मुलाक़ात का यक़ीन है। लेकिन तुम्हारे सिवा जो ग़ैर मुस्लिम औ़रतें हैं वो तो इस वादे के दिन का इंकार कर रही हैं। मुबारकबाद की मुस्तहिक़ हैं वो जो यौमे आख़िरत पर ईमान रखती हैं और उस दिन की तैयारी करती हैं। तबाही है उनके लिये जिनका ईमान कमज़ोर है और जो आख़िरत फ़रामोशी में मुब्तिला हैं। जो अपने महलों, घरों, ख़ज़ानों और मामूली माल व मताअ़ में मगन हैं। ईमान के बग़ैर उन महलात, मकानात, या ज़ेवरात की अहमियत क्या है? तक़वा के बग़ैर ओ़हदे और मन्सब की हैसियत क्या है? मुल्क, इमारत और तिजारत से अगर ख़ुशबख़्ती ख़रीदी जा सकती तो फिर हम बादशाहों, अमीरों और ताजिरों को परेशानी में मुब्तला न पाते और उनको मसाइब व आलाम और हुज़्न व मलाल का शिकवा करते हुए न देखते।

'गुज़रा ज़माना एक ख़्वाब था जो ताराज कर गया और कल हसीन तमन्नाओं के धुंधल्के में है। आज ही बस हक़ीक़ते वाक़िया है।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'औरतों ने ही दुनिया की बड़ी शख़्सियतों को जन्म दिया है।'

हुस्न व जमाल रब्बे ज़ुल्जलाल की तख़्लीक़ात में है

ज़माना जो करे करने दे उसको

ख़ुदा के फ़ैसले पे तो नजर रख

इंसान को देखो और उसकी तख़्लीक़ पर ग़ौर करो। इसकी जिन्सें मुख़्तलिफ़ हैं, ज़बानें अलग-अलग हैं और इसके नगमात भी मुख़्तलिफ़ हैं। अल्लाह तबारक व तआला ने कैसी अच्छी इसकी ख़िल्क़त बनाई है और इसको हसीन व जमील शक्ल से नवाज़ा है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इसकी बेहतरीन सूरतगिरी की है जैसाकि अल्लाह सुब्हानहू वतआला ने इरशाद फ़रमाया,

وَّصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ

'जिसने तुम्हारी सूरत बनाई और बड़ी ही उम्दा बनाई।' (सूरह मोमिन 40 : 64)

और फ़रमाया,

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۝٦ الَّذِىْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۝٧

'ऐ इंसान! उस रब्बे करीम से तुझे किस चीज़ ने धोखे में रखा जिसने तुमको पैदा किया और बिल्कुल दुरुस्त बनाया।' (सूरह इन्फ़ितार 82 : 6-7)

मज़ीद फ़रमाया,

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِىْۤ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ

'हमने इंसान को बेहतरीन साख़्त पर पैदा किया।' (सूरह तीन 95 : 4)

आसमान की वुस्अत और सितारों की रिफ़अत पर ग़ौर करो। सूरज की ताबनाकी, सितारों की ज़ियापाशी और चाँद की चाँदनी पर नज़र डालो, वसीअ व बसीत फ़िज़ाओं में निगाह दौड़ाओ और ज़मीन पर नज़र डालो उसे कैसे फ़र्श की तरह बिछाया गया है। उसकी तहों से पानी निकाला गया और उसे पेड़-पौधे और रूईदगी पैदा हुई। फिर ज़रा पहाड़ की बुलन्दियों पर नज़र डालो और उनको ज़मीन

Scanned by CamScanner

किस तरह नसब किया गया है। समुन्द्रों, दरियाओं और नहरों पर निगाह करो। सुहानी रातों और सुबह की सफेदी को देखो। ये रोशनी और ये तारीकी, ये ओदे, काले और सफ़ेद बादलों के टुकड़े। उन चीज़ों पर ग़ौर करो। उनमें कैसी हेरत अंगेज़ हम आहंगी और तर्तीब पाई जाती है। ये कलियाँ, गुँचे, फूल और मीठे रसभरे जायक़े मुख़्तलिफ़ अन्वाअ व अक़्साम के फल, ये लज़ीज़ दूध और ये मीठा शहद, ये नख़्लिस्तान और ये शहद की मक्खियाँ, चींटियाँ और छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े, पानी की मछलियाँ और आसमान में उड़ते हुए तुयूर (परिन्दे) और नग़मा सरा बुलबुलें, रेंगने वाले जानदार और चौपाये जानवर। हुस्न व जमाल का एक ला मुतनाही (ना ख़त्म होने वाला) सिलसिला है। ये ख़ूबसूरत कहकशायें जो आँखों को ख़ीरह ही नहीं करतीं, ताज़गी और ठण्डक भी पहुँचाती हैं।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया,

فَسُبۡحٰنَ اللّٰهِ حِيۡنَ تُمۡسُوۡنَ وَحِيۡنَ تُصۡبِحُوۡنَ ﴿۱۷﴾ وَلَهُ الۡحَمۡدُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَعَشِيًّا وَّحِيۡنَ تُظۡهِرُوۡنَ ﴿۱۸﴾ يُخۡرِجُ الۡحَىَّ مِنَ الۡمَيِّتِ وَيُخۡرِجُ الۡمَيِّتَ مِنَ الۡحَىِّ وَيُحۡىِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا ‌ؕ وَكَذٰلِكَ تُخۡرَجُوۡنَ ﴿۱۹﴾

'पस तस्बीह करो अल्लाह की जबकि तुम शाम करते हो और जब सुबह करते हो। आसमानों और ज़मीन में उसी के लिये हम्द है और (तस्बीह करो उसकी) तीसरे पहर और जबकि तुम पर ज़ुहर का वक़्त आता है। वो ज़िन्दा को मुर्दे में से निकालता है और मुर्दे को ज़िन्दा में से निकाल लाता है और ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दगी बख़्शता है। इसी तरह तुम लोग भी (हालते मौत से) निकाल लिये जाओगे।' (सूरह रूम 30 : 17-19)

'ज़िन्दगी के मुन्फ़ी पहलू को मत देखो, कायनात में फैले हुस्न से लुत्फ़ अन्दोज़ होते रहो।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ

'तुम अपने घरों में वक़ार से रहो।' (सूरह अहज़ाब 33 : 33)

बेइन्तिहा जूदो-करम, बेहिसाब इनायतें

शाम के पीछे सुबह हो जैसे सुबह के पीछे शाम

ख़ुशी के पीछे ग़म है प्यारे, फिर ख़ुशियों का जाम

रोमियों ने चंद मुसलमान औरतों को क़ैदी बना लिया। मन्सूर बिन अम्मार तक ये इत्तिलाअ पहुँची। लोगों ने उनके पास पैग़ाम भिजवाया, 'तुम ख़लीफ़ा के पास क्यों नहीं जाते और उनके पास क्यों नहीं बैठते और लोगों को जिहाद करने पर क्यों नहीं आमादा करते?' इसलिये वो शाम में रक़्क़ा के क़रीब ख़लीफ़ा हारून रशीद के पास गये और उनके क़रीब बैठे। जिस ज़माने में मन्सूर लोगों को जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह पर उभार रहे थे उसी ज़माने में उनको एक बन्धा हुआ बण्डल मौसूल हुआ जिसके साथ एक सरबा मुहर ख़त भी मौजूद था। मन्सूर ने लिफाफा चाक किया। ख़त में लिखा था,

मैं अरब घराने की बेटी हूँ। अहले रोम ने मुस्लिम ख़्वातीन के साथ जो सुलूक किया है उसकी मुझको इत्तिलाअ मिल चुकी है। मैंने सुना है कि आप लोगों को जिहाद पर आमादा कर रहे हैं। मैंने अपने जिस्म पर निगाह डाली तो मैंने अपनी दो चोटियों को सबसे क़ाबिले क़द्र पाया। इसलिये मैंने उनको काट डाला और उनको लपेट कर आपकी ख़िदमत में भेज रही हूँ। वल्लाह! मैं आपसे दरख़्वास्त करती हूँ कि आप दोनों चोटियों से जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह में काम आने वाले घोड़े की लगाम बनायें। शायद अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मुझे इस हाल में देखे तो मुझ पर उसको रहम आ जाये।

मन्सूर अपने जज़्बात पर क़ाबू न पा सके जिस वक़्त उस ख़त की पाकीज़ा तहरीर को पढ़ रहे थे उनकी आँखें अश्कबार हो गईं और उनके साथ दूसरे लोग भी रो पड़े। हारून रशीद ने जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के लिये नफ़ीरे आम करवा दी और ख़ुद मुजाहिदीन के दोश-बदोश (कन्धे से कन्धा मिलाकर) लड़े। अल्लाह तबारक व तआला ने उनको फ़तह व नुसरत अता फ़रमाई।

'माज़ी के लिये आँसू मत बहाओ, बिला वजह रोना-धोना बंद करो इसलिये कि तुम माज़ी (गुज़रे हुए) को कभी वापस नहीं ला सकतीं।'

Scanned by CamScanner

दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब औरत

(7)

लअ़ल बदख़्शाँ

नुक़्श हैं सब नातमाम ख़ूने जिगर के बग़ैर
नग़मा है सौदाये ख़ाम ख़ूने जिगर के बग़ैर

इक़बाल

Scanned by CamScanner

किरणें

اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىِٕنُّ الْقُلُوْبُ ﴿٢٨﴾

'ख़बरदार रहो! अल्लाह की याद ही वो चीज़ है जिससे दिलों को इत्मीनान नसीब हुआ करता है।' (सूरह रअ़द : 18)

रुजूअ इलल्लाह, जिसका कोई मुतबादिल नहीं

सदाए गर्ग दरिन्दा से भी मानूस हैं गोश
मगर इन्साँ की आवाज़ों से उड़ जाते हैं होश

एक आदमी मस्जिद में दाख़िल हुआ। उस वक़्त नमाज़ का वक़्त नहीं था। उसने एक दस साला लड़के को निहायत ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ के साथ नमाज़ में मशग़ूल पाया। वो इन्तिज़ार करता रहा यहाँ तक कि लड़का नमाज़ से फ़ारिग़ हो गया। वो उसके क़रीब आया, उसको सलाम किया और उससे कहा, 'बेटे! तुम किसके साहबज़ादे हो?'

लड़के ने सर झुका लिया और आँसू के क़तरे उसके रुख़सार पर गिरे। उसने सर उठाया और कहा, चाचाजान! मैं यतीम-यसीर हूँ। मेरे माँ-बाप मर चुके हैं।

उस आदमी के दिल में उसके लिये रिक़्क़त पैदा हुई और उसने कहा, क्या तुम मेरा बेटा बनना पसंद करोगे।

लड़के ने पूछा, 'जब मैं भूखा रहूँ तो आप मुझे खाना खिलायेंगे?'

हाँ! उस आदमी ने जवाब दिया, 'जब मैं बीमार हो जाऊँ तो आप मुझे शिफ़ायाब फ़रमायेंगे?'

उस आदमी ने जवाब दिया, इस पर मेरा कोई इख़्तियार नहीं है मेरे बेटे!

तब लड़के ने जवाब दिया, 'इस पर मेरा कोई इख़्तियार नहीं।'

लड़के ने कहा, 'फिर तो मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिये, चाचाजान! जिसने मुझे पैदा किया है वो मुझे सीधी राह दिखाता है। वही मुझे खिलाता और पिलाता है। जब मैं बीमार होता हूँ तो वही शिफ़ा देता है। जिसने इत्मीनान दिलाया कि कल रोज़े जज़ा के दिन वो सारे गुनाहों को माफ़ कर देगा।'

वो आदमी ख़ामोशी से उठकर खड़ा हो गया और कहने लगा, 'मैं अल्लाह तआला पर ईमान लाया। बेशक जिसने अल्लाह तआला पर तवक्कल किया, अल्लाह उसके लिये काफ़ी है।'

Scanned by CamScanner

وَرَحْمَتِیْ وَسِعَتْ كُلَّ شَیْءٍ

'मेरी रहमत हर चीज़ पर छाई हुई है।' (सूरह आराफ़ 7 : 156)

ख़ुशबख़्ती मौजूद है लेकिन कौन उससे हमकिनार हो सकता है?

अन्देशा हाय ग़म से ऐ दिल न हो परेशाँ
बातिल हुए हैं अक्सर अन्देशा व वसाविस

इंसान ख़ुशबख़्ती को कहीं और नहीं, ख़ुद अपनी ज़ात ही में पा सकता है। बशर्तेकि वो उसके हुसूल के उम्दा तरीक़े अपनाये। वो तरीक़े हैं इख़्लास के साथ सिद्क़ और शुजाअत की सिफ़त को इख़्तियार करना और अमले ख़ैर और लोगों से मुहब्बत, हुस्न तआवुन और अन्धी ख़ुदग़र्ज़ी से एहतिराज़ और सबसे बढ़कर ये बात कि उसका ज़मीर ज़िन्दा हो। ख़ुशबख़्ती कोई मौहूम और ख़्याली चीज़ नहीं है बल्कि ये एक हक़ीक़ते वाक़ेअ है। बहुत से लोग हैं जो ख़ुशबख़्ती से हमकिनार हैं और इसका इम्कान है कि हम भी इससे मुस्तफ़ीद हों। अगर हम अपने तजुर्बात से सीखते हैं और ज़िन्दगी में हम पर जो कुछ गुज़रा है उससे इस्तिफ़ादा करते हैं और अगर हम अपनी ज़िन्दगी पर दीद-ए-इबरत निगाह डालेंगे तो उससे बहुत से नताइज अख़ज़ कर सकेंगे। इल्म व मअरिफ़त, सब्र और कुव्वते इरादी के ज़रिये से हम ख़ुद को बहुत सारे ज़हनी, नफ़्सियाती और जिस्मानी बीमारियों से महफ़ूज़ रख सकते हैं। हम इस हयाते मुस्तआर को जो अल्लाह तबारक वतआला ने हमें अता फ़रमाई है, उस ख़ुश उस्लूबी से गुज़ार सकते हैं कि उसमें तंगी, महरूमी, नाशुक्री और नाक़द्री का शायबा तक न हो।

'एक औरत के हुस्न व जमाल को जो चीज़ सबसे ज़्यादा तबाह व बर्बाद करती है वो है उसकी ज़हनी परेशानियाँ। ये परेशानियाँ तो ऐसी ग़ारतगर होती है कि बेचारी हक़ीक़ी उम्र से कहीं ज़्यादा सिन रसीदा (उम्रवाली) दिखाई देने लगती है।'

*****

Scanned by CamScanner

وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ﴿٥﴾

'अन्क़रीब तेरा रब तुझको वो कुछ अता फ़रमायेगा कि तू ख़ुश हो जायेगा।' (सूरह ज़ुहा 93 : 5)

हुस्ने अख़्लाक़ दिल में जन्नत के बाग़ात हैं

अवामुन्नास (जनता) एक इंसान के लिये आईने की तरह हैं। अगर इंसान लोगों के साथ हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आता है तो लोग भी उसके साथ हुस्ने अख़्लाक़ का मुज़ाहिरा करते हैं। उसके आसाब पर उसके ख़ुशगवार असरात मुरत्तब होंगे और वो ख़ुश व मुतमइन होगा। वो महसूस करेगा कि वो दोस्ताना ख़ुशगवार माहौल में ज़िन्दगी गुज़ार रहा है।

लेकिन जब एक इंसान दूसरों के साथ बदसुलूकी से पेश आता है और उनसे बेरुख़ी से मिलता है तो दूसरे भी उसके साथ बुरे अन्दाज़ में पेश आते हैं और सख़्ती और कज ख़ल्क़ी का मुज़ाहिरा करते हैं। जो दूसरों का अदब व एहतिराम नहीं करता उसका भी अदब व एहतिराम नहीं किया जाता। ख़ुश अख़्लाक़ इंसान तमानियते क़ल्ब से क़रीब और हर क़िस्म की तंगी, दुश्वारी और परेशानियों से दूर होता है। इसके अलावा हुस्ने अख़्लाक़ इबादत भी है जिस पर नबी (ﷺ) ने बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया है। अल्लाह सुब्हानहू वतआला का इरशाद है,

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ﴿١٩٩﴾

'नर्मी और दरगुज़र का तरीक़ा इख़्तियार करो, मारूफ़ की तल्क़ीन किये जाओ और जाहिलों से न उलझो।' (सूरह आराफ़ 7 : 199)

एक दूसरे मक़ाम पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया,

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ لِنتَ لَهُمْ ۖ وَلَوْ كُنتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ ۖ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ﴿١٥٩﴾

'(ऐ पैग़म्बर!) ये अल्लाह की बड़ी रहमत है कि तुम उन लोगों के लिये बहुत नर्म मिज़ाज वाक़ेअ हुए हो। वरना अगर कहीं तुम तन्दख़ू और संगदिल होते तो ये सब तुम्हारे गर्दो-पेश से छट जाते। उनके क़ुसूर माफ़ कर दो, उनके हक़ में दुआए मग़्फ़िरत करो और दीन के काम में उनको भी शरीके मशवरा रखो, फिर जब तुम्हारा अज़्म किसी रास्ते पर मुस्तहकम हो जाये तो अल्लाह पर भरोसा करो, अल्लाह को वो लोग पसंद हैं जो उसी के भरोसे काम करते हैं। (सूरह आले इमरान 3 : 159)

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'तुममें सबसे महबूब मेरे नज़दीक वो शख़्स है जो अख़्लाक़ में सबसे बेहतर है और जो मुन्कसिरुल मिज़ाज है और जो लोगों को चाहता है और लोग उसे चाहते हैं। मेरे नज़दीक सबसे नापसन्दीदा वो आदमी है जो लगाई-बुझाई करता है और आपस में मुहब्बत करने वालों के दरम्यान तफ़रक़ा पैदा करता है और नेक लोगों की ऐबजूई करता है।'** (मुअजमुल औसत लित्तबरानी : 7697, मुअजमुस्सग़ीर : 835, इमाली इब्ने बशरान : 513, किताबुस्सुम्त लिइब्ने अबी दुनिया : 253, शैख़ अल्बानी रह. ने इसे हसन लिग़ैरिही कहा है। सहीहुत्तरग़ीब : 2658)

'बग़ैर किसी उम्मीद के ख़ुद को मुश्किलात में डालना और तरद्दुद और परेशानियाँ इंसान को आसाब की बीमारी में मुब्तला कर देती हैं।'

Scanned by CamScanner

किरणें

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا

'अल्लाह किसी नफ़्स पर उसकी ताक़त व कुदरत से बढ़कर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालता।' (सूरह बक़रा 2 : 286)

पुरमसर्रत ज़िन्दगी का राज़ : दस रहनुमा उसूल

एक अमरीकी माहिरे नफ़्सियात (द देक्स) कहता है कि पुरमुसर्रत ज़िन्दगी गुज़ारना एक ख़ूबसूरत आर्ट है और उसके दस सुनहरे उसूल हैं :

(1) वो ज़रिय-ए-मआश (busyness) तलाश करो जिसे तुम पसंद करते हो अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते तो ऐसी मशग़ूलियत इख़्तियार करो जिससे तुम्हारे दिल को ख़ुशी मिले और उसको फारिग़ अवक़ात में अन्जाम दो फिर उसमें महारत हासिल करो।

(2) अपनी सेहत की हिफ़ाज़त करो क्योंकि ये ख़ुशियों का सरचश्मा है। सेहत की हिफ़ाज़त के लिये ज़रूरी है कि खाने-पीने में ऐतदाल हो, जिस्मानी वर्जिश की पाबन्दी की जाये और बुरी आ़दतों से बचा जाये।

(3) मक़सदे हयात का होना लाज़िम है। मक़सदे हयात से इंसान को कुव्वते अ़मल मिलती है और जज़्ब-ए-अ़मल हासिल होता है।

(4) ज़िन्दगी जैसी कुछ है वैसे ही इसको समझो। इसके तल्ख़ व शीरीं को कुबूल करो।

(5) हाल (Present) असल ज़िन्दगी है। माज़ी (Past) के हुज़्न व मलाल और मुस्तक़बिल (Future) के अन्देशे हाय दूर-दराज़ में मुब्तला होने का कोई फ़ायदा नहीं।

(6) किसी फ़ैसले या काम के बारे में ख़ूब ग़ौर व फ़िक्र करो और अपने फ़ैसले और उसके नताइज के बारे में किसी दूसरे को मौरिदे इल्ज़ाम न ठहराओ।

(7) हमेशा उन पर निगाह रखो जो (दुनियावी ऐतबार से) तुमसे कमतर हैं।

(8) मुस्कुराने की आ़दत डालो और ख़ुश व ख़ुर्रम रहो। उन लोगों की सोहबत इख़्तियार करो जो पुरउम्मीद रहते हैं।

(9) ख़ुशियाँ और प्यार बाँटते चलो, ताकि ख़ुशियों से मुअ़त्तर हवायें तुम्हारी तरफ़ पलटकर आयें।

(10) ख़ुशी और शादमानी के मौक़े पैदा करो और अपनी पुरमुसर्रत ज़िन्दगी में ताज़गी पैदा करने के लिये उसे लाज़िम क़रार दो।

'आज के दिन से ख़ूब फ़ायदा उठाओ और मुम्किना ग़ारतगिरी से बचने का ज़रिया पहले ही ढूण्ढ लो।'

Scanned by CamScanner

किरणें

كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ﴿٢٩﴾

'हर आन वो (रब्बे ज़ुल्जलाल) नई शान में है।

(सूरह रहमान 55 : 29)

हुज़्न व मलाल से बचने के लिये अल्लाह की पनाह में आ जाओ

मैं सोच भी नहीं सकता कि एक अक़्लमन्द आदमी को हँसने-मुस्कुराने से परहेज़ हो सकता है और एक मोमिन मायूसी और पज़मुर्दगी का शिकार हो सकता है। कई बार एक आदमी ऐसे हालात में घिर जाता है जो उसकी क़ल्बी इत्मीनान और ख़ुशी को छीन लेते हैं। उस वक़्त उसके लिये ज़रूरी हो जाता है कि वो अल्लाह तबारक वतआला की हिफ़ाज़त में पनाह ढूण्ढे क्योंकि मुसीबतों और परेशानियों से बचाने वाला वही है। अगर इंसान पज़मुर्दगी का शिकार हो गया तो ये उस की क़ुव्वते इरादी के ज़वाल की शुरूआत होगी और उसके सारे नेक आमाल आजिज़ी, मायूसी और नामुरादी की नज़र होकर रह जायेंगे।

इसीलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) सहाबा किराम (रज़ि.) को इस बात की तालीम देते थे कि वो आफ़तों से निजात हासिल करने के लिये अल्लाह तबारक वतआला से मदद तलब करें। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) मस्जिद में दाख़िल हुए तो अन्सार में से एक शख़्स को मस्जिद में देखा जिसका नाम अबू उमामा था। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, 'ऐ अबू उमामा! क्या बात है? मैं तुमको मस्जिद में देख रहा हूँ जबकि अभी नमाज़ का वक़्त नहीं है?' उन्होंने जवाब दिया, ऐ अल्लाह के रसूल! परेशानियों और कर्ज़ के बोझ से दबा हुआ हूँ। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, 'क्या मैं तुमको उन कलिमात की तालीम न दूँ कि जब तुम उनको कहो तो अल्लाह तआला तुम्हारी परेशानियाँ दूर फ़रमा देंगे और तुम्हारा क़र्ज़ भी अदा हो जायेगा?' (अबू उमामा रज़ि. कहते हैं) मैंने कहा, क्यों नहीं? ज़रूर, ऐ अल्लाह के रसूल! आप (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, 'सुबह व शाम ये पढ़ा करो, **अल्लाहुम्-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिनल हम्मि वल्हज़नि, व अऊज़ुबि-क मिनल् अजज़ि वल्कसलि व अऊज़ुबि-क मिनल बुख़्लि वल्जुब्नि व अऊज़ुबि-क मिन ग़-ल-बतिद्दैनि व क़हरिर्-रिजाल। (ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह तलब करता हूँ हुज़्न व मलाल से, तेरी पनाह चाहता हूँ आजिज़ी और काहिली से और तेरी पनाह माँगता हूँ बुज़दिली और बुख़ालत (कन्जूसी) से और तेरी पनाह तलब करता हूँ क़र्ज़ के बोझ से और लोगों के ग़ल्बे से।'** वो (अबू उमामा रज़ि.) कहते हैं, 'मैंने ऐसा ही किया और अल्लाह तआला ने मेरी परेशानियाँ ख़त्म कर दीं और मेरे क़र्ज़ की अदायगी का सामान फ़रमा दिया।' (सुनन अबी दाऊद, किताबुल वित्र, बाब फ़िलइस्तिआज़ा : 1555, अद्दअवातुल कबीर लिल्बैहक़ी : 305, शैख़ अल्बानी रह. ने इसे ज़ईफ़ कहा है इसमें ग़स्सान बिन औफ़ रावी ज़ईफ़ है।)

Scanned by CamScanner

وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ

'तुमको जो नेमत भी हासिल है अल्लाह ही की तरफ़ से है।'

(सूरह नहल 16 : 53)

मुसीबत के वक़्त तआवुन करने वाली शरीके हयात

गर्दिशे दौराँ से पैदा रोज़ व शब
रोज़ व शब सुबहे मुसर्रत, शामे ग़म

कुतुबे तबक़ात में है कि जिगर गोश-ए-रसूल (ﷺ) हज़रत बीबी फ़ातिमा (रज़ि.) कई-कई दिन तक फ़ाका करती थीं। एक दिन उनके शौहर हज़रत अली (रज़ि.) ने महसूस किया कि उनका चेहरा पीला पड़ रहा है। उन्होंने पूछा, ऐ फ़ातिमा! तुम्हें क्या हो गया है?

तीन दिन से घर में कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसे मैं खा सकूँ। हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) का सीधा सा जवाब था।

हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा, तुमने मुझे बताया क्यों नहीं?

उन्होंने जवाब दिया, मेरे अब्बा जान ने शादी की पहली रात को रुख़्सत करते वक़्त फ़रमाया, 'ऐ फ़ातिमा! अगर अली तुम्हारे पास कुछ खाने की चीज़ लायें तो खा लेना। अगर वो न लायें तो उनसे कोई सवाल न करना।'

लेकिन बहुत सी औरतें शौहर की जेब को ख़ाली करने में ख़ास महारत रखती हैं। जैसे ही शौहर की जेब में कोई बड़ी रक़म देखती हैं घर में एमरजेन्सी का ऐलान फ़रमा देती हैं और उस वक़्त तक चैन से नहीं बैठतीं जब तक शौहर की जेब ख़ाली नहीं हो जाती।

इसमें कोई शक नहीं कि एक मर्द एक-आध बार ही इस सूरते हाल को बर्दाश्त कर सकता है। अगर वो एक-दो बार ऐसा कर भी ले तो उससे मसाइल हल नहीं होते और धीरे-धीरे इख़्तिलाफ़ात रूनुमा होते हैं जो अक्सर व बेश्तर तलाक़ पर मुन्तज होते हैं। किसी शाइर ने क्या ख़ूब कहा है,

दाग़े मुफ़ारक़त हो कि मैं दूँ उसे तलाक़
रोता नहीं है दिल मेरा गरचे है ये फ़िराक़
वो हो गई जुदा मगर दिल है नहीं उदास
आँखें हुईं न नम, नहीं लब पे मेरी प्यास
उज़्लत पसंद नफ़्स का बिगड़ा है जब मिज़ाज
क़ल्बे हज़ीं शिकस्ता का फिर कैसे हो इलाज
वो ज़िन्दगी अजाब है जिसमें न हो विफ़ाक़
बाहम यक़ीं हो कैसे जो दिल में रहे निफ़ाक़

'ज़िन्दगी तो ख़ुद ही इस क़द्र मुख़्तसर (Short) है कि उसे मज़ीद मुख़्तसर नहीं बनाया जा सकता, इसलिये इसको मुख़्तसर करने की कोशिश न करो।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'कामयाबी का एक पैमाना ये है कि सबकी ज़बान पर तुम्हारा ज़िक्रे ख़ैर हो।'

एक ख़ातून, अहले जन्नत में से

दिल को अपने शाद रख, फ़िक्र फ़रदा से गुज़र
कल ख़बर जिसने तेरी ली, कल वही लेगा ख़बर

मशहूर ताबेई और मुफ़्तीए मक्का अ़ता बिन रिबाह (रह.) बयान करते हैं कि एक दिन हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने मुझसे कहा, 'क्या मैं तुमको अहले जन्नत में से एक ख़ातून की ज़ियारत न कराऊँ?' मैंने कहा, क्यों नहीं। उन्होंने फ़रमाया, 'ये काली औ़रत नबी (ﷺ) के पास आई और बोली, मुझ पर मिर्गी के दोरे पड़ते हैं और मेरे जिस्म का हिस्सा खुल जाता है, आप मेरे लिये दुआ फ़रमा दीजिये।' आप (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'तुम चाहो तो सब्र करो और तुम्हारे लिये (इस पर) जन्नत है और तुम चाहो तो मैं अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करूँ कि वो तुमको इससे आ़फ़ियत अ़ता फ़रमाये।'** उस ख़ातून ने कहा, मैं सब्र करूँगी। फिर उसने अ़र्ज़ किया, मेरा बदन खुल जाता है। आप अल्लाह तआ़ला से दुआ़ फ़रमा दीजिये कि मेरा जिस्म न खुले। आप (ﷺ)ने उसके लिये दुआ़ फ़रमा दी। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मरज़ा, बाब फ़ज़्ल मंय्युस्रअ मिनर्रीह : 5652, सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिलह, बाब स़वाबुल मुअ्मिन फ़ीमा युसीबुहू मिम्मरज़ : 2576, अदबुल मुफ़र्रद लिल्बुख़ारी : 505, सुननुल कुबरा लिन्नसाई : 7448, मुस्नद अहमद : 1/346)

ये परहेज़गार मोमिना इस मुसीबत को ख़ुशी-ख़ुशी क़ुबूल करती रही जो उसकी इस फ़ानी ज़िन्दगी से लगी हुई थी क्योंकि इस मुसीबत पर उसको जन्नत मिलने की उम्मीद थी। उसने इस तिजारत में ख़ूब नफ़ा हासिल किया और जन्नत की मुस्तहिक़ क़रार पाई। लेकिन ये मोमिना नहीं चाहती थी कि उसका जिस्म किसी के सामने खुल जाये और लोग उसके जिस्म के किसी हिस्से को देख लें जो किसी तरह एक नेक, तक़वा शिआ़र और बावक़ार मोमिना के लिये मुनासिब नहीं।

हम उन ख़्वातीन को क्या कहेंगे जो ऐसा लिबास ज़ेबतन करती हैं कि पर्दे में नंगी नज़र आती हैं। जो अपने जिस्मानी हुस्न को नुमायाँ करती हैं, शर्म व हया के पर्दे को हटा देना चाहती हैं और बेहिजाबी इख़्तियार करने में पेश-पेश रहती हैं?

'इज़्तिराबे क़ल्ब से बचो और हक़ीक़त का सामना करो, ज़िन्दा रहना है तो स़ाबित क़दमी के साथ अपना काम करती रहो।'

Scanned by CamScanner

देते हैं बाद-ए-ज़र्फ़ क़दह ख़्वार देखकर

सदक़ात, बलाओं से महफ़ूज़ रखते हैं

बर्गे दरख़्ताने सब्ज़ दर नज़र होशियार
हर वरक़े दफ़्तरीस्त मअरिफ़ते कर्दगार

सदक़ा, रहमत के दरवाज़ों में से एक अज़ीम बाब (दरवाज़ा) है जो शरहे सद्र (दिल खोलने) और इन्शिराहे क़ल्ब का ज़रिया है। सदक़ा नेक आमाल को फ़राख़ दिली से अन्जाम देने पर आमादा करता है इसलिये सदक़ा जैसे अमल को अन्जाम देने वाले के लिये अल्लाह तबारक वतआला दुनिया में काफ़ी हो जाता है। वो उसके बदले में उसे शरहे सद्र, नूरे ईमानी, वुस्अते क़ल्बी और ख़ुशहाली की दौलत से नवाज़ता है।

सदक़ा करो ख़्वाह वो थोड़ा ही क्यों न हो और सदक़े में दी जाने वाली चीज़ को हक़ीर न समझो, ख़्वाह एक खजूर का टुकड़ा, रोटी का एक लुक़्मा या एक घूँट पानी या थोड़ी सी छाछ। किसी मिस्कीन को हदिया दो या किसी भूखे को खाना खिला दो या किसी मरीज़ की इयादत करो। तब तुम महसूस करोगी अल्लाह तआला ने तुम्हारी परेशानियाँ ख़त्म कर दी हैं। तुम्हारे रंज व अलम और हुज़्न व मलाल को दूर फ़रमा दिया है। सदक़ा एक ऐसी आज़मूदा दवा है जो सिर्फ़ इस्लामी अत्तारख़ाने में ही दस्तयाब (Available) है।

एक आदमी ने इमामे अस्र अब्दुल्लाह बिन मुबारक (रह.) से अर्ज़ किया, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! सात बरसों से मेरे घुटने में एक ज़ख़्म है जो किसी तरह ठीक होने का नाम ही नहीं लेता। मैंने कई तबीबों (Doctors) की तरफ़ रुजूअ किया और अलग-अलग तरीक़े का इलाज करवाया लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ?

इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक (रह.) ने जवाब दिया, 'जाओ और ऐसी जगह तलाश करो जहाँ लोगों को पानी की ज़रूरत हो और उस जगह कुँआ खुदवा दो। मुझे उम्मीद है जैसे ही उससे पानी उबलेगा तुम्हारा ज़ख़्म ठीक हो जायेगा।'

उस आदमी ने ऐसा ही किया और उसे उस मुसीबत से निजात मिल गई।

मेरी क़ाबिले एहतिराम! बहन इस पर ताज्जुब न करो। क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) का इरशाद है, **'अपने मर्ज़ का इलाज सदक़े से करो।'** (मुअजमल कबीर लित्तबरानी : 10192, मुअजम अल्औसत : 1963, सुननुल कुबरा लिल्बैहक़ी : 3/536 शैख़ अल्बानी ने इसे ज़ईफ़ कहा है। ज़ईफ़ुन जिद्दा : मूसा बिन उमेर कूफ़ी रावी मतरूक है। अज़्ज़ईफ़ा : 3492)

और आप (ﷺ) ने ये भी इरशाद फ़रमाया है, **'बेशक सदक़ा रब के ग़ज़ब को ठण्डा कर देता है और सूए ख़ात्मा से बचाता है।'** (सुनन तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़कात, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लिस्सदक़ा : 664, सहीह इब्ने हिब्बान : 3309, शौबुल ईमान लिल्बैहक़ी : 3080, 536 शैख़ अल्बानी ने इसे ज़ईफ़ कहा है। अब्दुल्लाह बिन ईसा अल्ख़िज़ार रावी ज़ईफ़ और हसन बसरी मुदल्लस है। इर्वाउल ग़लील : 885)

Scanned by CamScanner

किरणें

حُوۡرٌ مَّقۡصُوۡرٰتٌ فِی الۡخِیَامِ ﴿۷۲﴾

'ख़ैमों में ठहराई हुई हूरें।'

(सूरह रहमान 55 : 72)

कायनात किस क़द्र हसीन व जमील है, तुम अपनी रूह को हसीन बनाओ

दिल पर शब ख़ून हुआ है करना क्या
ग़म न कर हादसे पे रोना क्या

आसमान में चमकते सितारे बेहद ख़ूबसूरत हैं, इसमें भला किसी को क्या शक हो सकता है। उनकी ख़ूबसूरती ख़ुद-बख़ुद दिल को अपनी तरफ़ खींचती है। वक़्त के साथ-साथ उनकी ख़ूबसूरती हर आन एक जिद्दत इख़्तियार करती जाती है। सुबह से लेकर शाम तक और सूरज के तुलूअ से लेकर गुरूब तक। रात की तारीकी में या चौधवी के चाँद की चाँदनी में। आसमान साफ़ हो या बादलों और कोहरों से भरा हो, घड़ी-घड़ी रंग बदलते लम्हों में, एक ज़ाविये से दूसरे ज़ाविये तक, एक किनारे से दूसरे किनारे तक, उनकी ख़ूबसूरती हर लम्हा बरक़रार रहती है और दिल को लुभाती है।

एक मुन्फ़रिद सितारा जो आसमान में एक ख़ूबसूरत आँख की तरह चमक रहा है। ऐसी चमकदार आँख जिससे मुहब्बत की किरणें फूटती हों और जो सदाए दिल नवाज़ देती हो। उन दो चमकदार सितारों को देखो जो ऊपर बुलंदी से फिसल कर उफ़ुक़ पर आ गये हैं और एक दूसरे से सरगोशियाँ कर रहे हैं। सितारों के इस झुरमुट पर निगाह डालो। एक दायरे की शक्ल में दोस्तों की तरह हाथ में हाथ डाले आसमान में खड़े हैं और ख़ुश गपों में मसरूफ़ हैं। ये ख़्वाबनाक चाँद, हर रात सर गर्दां और हैरान, कभी ख़ूब रोशन और चमकदार और कभी बुझा-बुझा सा, कभी नौमौलूद की तरह रात का इफ़्तिताह करता हुआ और कभी फ़ना होता हुआ आख़िर शब का हमसफ़र। ये फ़िज़ाए बसीत जिसकी सैर से निगाह कभी नहीं थकती और जिसकी इन्तिहा तक नज़र कभी नहीं जा सकती।

ये तमाम हसीन व जमील नज़ारे जिनको एक आदमी निगाहे हैरत व इस्तिअ्जाब से देखता और लुत्फ़ अन्दोज़ होता है, अपने अल्फ़ाज़ या तहरीर में उन कैफ़ियात को पेश करने से क़ासिर है।

'उन उमूर को कुबूल कर लो जो नागुज़ेर हैं, लेकिन उनसे दिल बर्दाश्ता होने की कोई ज़रूरत नहीं क्योंकि उससे कोई फ़ायदा हासिल नहीं हो सकता।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ

'और साबिक़ दौरे जाहिलियत की सी सज-धज न दिखाती फिरो।'

(सूरह अहज़ाब 33 : 33)

एक जाँबाज़ ख़ातून

गुलाबों में काँटे ही काँटे नहीं हैं
ज़रा उसके सरताजे शबनम भी देखो

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) ने रोमियों की सरकूबी के लिये, जिन्होंने मुसलमानों को ललकारा था, जिस फ़ौज को भेजने का फ़ैसला किया था उसका सिपहसालार हज़रत हबीब बिन मुस्लिमा फहरी (रज़ि.) को मुक़र्रर फ़रमाया। हज़रत हबीब (रज़ि.) की अहलिया भी फ़ौज में शामिल थीं। जंग शुरू होने से पहले उन्होंने अपनी फ़ौज का जायज़ा लेना शुरू किया। जब वो अपनी बीवी के पास पहुँचे तो बीवी ने उनसे एक सवाल किया, 'हम कहाँ मिलेंगे जब घमसान की जंग हो रही होगी और लश्कर समुन्द्र की मौजों की तरह एक-दूसरे से टकरा रहे होंगे?' सिपहसालार हज़रत हबीब बिन मुस्लिमा (रज़ि.) ने जवाब दिया, 'मुझे तुम रोमी फ़ौज के सरदार के ख़ैमे में पाओगी या फिर जन्नत में।' घमसान की जंग हुई और ख़ूब ज़ोरों का रण पड़ा। हज़रत हबीब (रज़ि.) और उनके साथी ख़ूब बहादुरी और बेजिगरी से लड़े। ऐसी जुरअतमन्दी के साथ हमला किया जैसा पहले कभी नहीं किया। अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को रोमियों पर फ़तह अ़ता फ़रमाई। हज़रत हबीब बिन मुस्लिमा (रज़ि.) तेज़ी के साथ रोमी सिपहसालार के ख़ैमे तक गये ताकि वो वहाँ अपनी बीवी का इन्तिज़ार करें। जब वो ख़ैमे के दरवाज़े पर पहुँचे तो उनकी हैरत की इन्तिहा न रही। उनकी बीवी उनसे पहले वहाँ पहुँचकर उनकी मुन्तज़िर थीं।

सिन्फ़े लतीफ़ जब बने शमशीरे बेनियाम
मर्दों से क्यों बढ़ा हुआ उसका न हो मक़ाम

'कोई काम मुश्किल या नामुम्किन नहीं जब तक तुम उसके लिये हरकत व अ़मल जारी रखने के लायक़ हो।'

Scanned by CamScanner

ये एक सज्दा जिसे तू गिराँ समझता है

हज़ार सज्दों से देता है आदमी को निजात

इक़बाल

Scanned by CamScanner

दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब औरत

(8)

जवाहिर पारे

Scanned by CamScanner

فَاذْكُرُونِيٓ أَذْكُرْكُمْ

'पस तुम मेरा ज़िक्र करो मैं तुम्हें याद करूँगा।' (सूरह बक़रा 2 : 152)

दिल को मेरी याद से आबाद रख
रोज़े महशर याद रखूँगा तुझे

वक़्त ही ज़िन्दगी है, जिसने वक़्त ज़ाएअ (बर्बाद) किया उसने ज़िन्दगी ज़ाएअ कर दी

कसरते माल व ज़र बाइसे दर्दे सर
कसरते माल व ज़र की तमन्ना न कर

नबी (ﷺ) ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) से फ़रमाया था, **'ऐ आइशा! जब तुमसे कोई भूल-चूक हो जाये तो फ़ोरन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से मग़्फ़िरत तलब कर और उसकी बारगाह में तौबा कर, इसलिये कि जब कोई बन्दा अपने गुनाह का ऐतराफ़ करते हुए नदामत के साथ अपने रब की तरफ़ पलटता है तो अल्लाह तबारक व तआला (रहमत और मग़्फ़िरत के साथ) उसकी तरफ़ मुतवज्जह होते हैं।'** (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हदीसुल इफ़्क : 4141, सहीह मुलिम, किताबुत्तौबा, बाब फ़ी हदीसिल इफ़्क : 2770, मुस्नद अहमद : 6/194-195, सुननुल कुबरा लिन्नसाई : 8882)

ज़रा तसव्वुर करो, तुम्हें वो सब कुछ हासिल हो गया जिसकी तुमने आरज़ू और तमन्ना की थी और तुम्हारी तमामतर ख़्वाहिशात और आरज़ूएँ पूरी हो गईं। फिर ऐसा हुआ कि अभी तुम उन नेमतों से अच्छी तरह मुस्तफ़ीद भी न हुई थीं कि यकायक सब ज़ाएअ हो गईं। हुज़्न व मलाल के साथ उस पर आँसू बहाओगी? कफ़े अफ़सोस मलोगी? हसरत व नदामत के साथ अपने आपको ग़म में घुला डालोगी? आह.....! सब कुछ ज़ाएअ हो गया। लेकिन तुम्हारी सबसे क़ीमती चीज़, तुम्हारी हयाते मुस्तआर, तुम्हारी ज़िन्दगी के बेश क़ीमत लम्हात ज़ाएअ हो रहे हैं, हाय अफ़सोस! तुम्हें इसका शऊर तक नहीं?

तुम्हारी उम्र, ज़िन्दगी का ये क़ीमती वो रूहानी जौहर है कि कोई क़ीमती से क़ीमती माद्दी चीज़ क़द्रो-क़ीमत में इसके बराबर नहीं हो सकती। ये ज़िन्दगी तो कुछ साँसों का मज्मूआ है। जो साँस निकलती है वो फिर वापस नहीं आ सकती। ये साँस ही तो दुनिया में तुम्हारा असल सरमाया है। हाँ इन साँसों के बदले तुम जन्नत की नेमतें ख़रीद सकती हो। अल्लाह तबारक व तआला के हुज़ूर सच्चे दिल से तौबा ही तुम्हारी उम्र को ज़ाएअ होने से बचा सकती है। तौबा और इस्तिग़फ़ार ही के ज़रिये से हर क़िस्म के नुक़सानात से महफ़ूज़ रहा जा सकता है।

* ज़िन्दगी को 'तौबतन्नसूह' के तरीक़ से ज़ाएअ होने से बचा लो।
* नेक बख़्ती और सआदत की तरफ़ एक ही रास्ता जाता है।
* जो हमारे दायरे इख़्तियार से बाहर है, जो हमारे बस में नहीं।
* हम उसके हुसूल में सरगरदाँ न हों बल्कि रुक जायें और उसकी तरफ़ क़दम न बढ़ायें।

Scanned by CamScanner

فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ

'उनके मुक़ाबले में अल्लाह तआला आपकी हिमायत के लिये काफ़ी है।'

(सूरह बक़रा 2 : 137)

ख़ुशी, दौलत से ख़रीदी नहीं जा सकती

हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी कि हर ख़्वाहिश पे दम निकले
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले

दुनिया में बहुत से लोग हैं जिन्होंने अपनी जवानी और सेहत दौलत जमा करने के पीछे गंवा दी। तब उन्होंने ख़ुशी हासिल करने के लिये अपनी ज़िन्दगी का सारा अन्दोख़्ता ख़र्च करना चाहा तो भी उन्हें मायूसी हुई। उन्होंने अपनी जवानी के दिनों को लौटाना चाहा लेकिन बुढ़ापे ने उनको अपने शिकन्जे में कस दिया। उन्होंने अपनी सेहत की बाज़याबी चाही लेकिन अमराज़ ने उनको शिकस्त दे दी।

एक मशहूर अदाकार कहता है, हम ज़िन्दगी भर जिसकी तमन्ना में सरगरदाँ रहे वो माल के सिवा कुछ और न था।

उस फ़नकार का ख़्याल था कि दौलत की वजह से वो आइन्दा सौ साल के लिये दुनिया का सबसे ज़्यादा ख़ुशनसीब इंसान हो जायेगा। उसे यक़ीने कामिल था कि अगर उसके पास दौलत है तो उससे वो अपनी हर ख़्वाहिश और हर तमन्ना पूरी कर लेगा और दुनिया की हर चीज़ उसकी दस्तरस में होगी। बीस साल के बाद उसको अल्लाह तआला ने उसकी आरज़ू से कहीं ज़्यादा बेपनाह दौलत अता फ़रमा दी। लेकिन उसकी जवानी, उसकी सेहत और उसके ख़्वाब उससे छिन गये। कहा जाता है कि वो अलल ऐलान कहा करता था, 'काश! अल्लाह तआला से मैंने कभी दौलत की दुआ न की होती। काश मैंने उससे गुरबत व इफ़्लास के साथ सौ साला ज़िन्दगी माँगी होती जिसमें मैं दाल-रोटी खाता और किराया न होने की वजह से जस्त लगाकर टाम्म गाड़ी के पायदान पर चढ़कर सफ़र करता।'

उस फ़नकार ने सेहत व जवानी की क़द्रो-क़ीमत को उस वक़्त समझा जब वो उन्हें खो चुका था। दौलत से हर चीज़ हासिल नहीं की जा सकती। इस हक़ीक़त का ऐतराफ़ उसने उस वक़्त किया जब वो मिस्र का सबसे मशहूर अदाकार बन चुका था। उस वक़्त उसने महसूस किया कि वो अपनी सारी दौलत ख़र्च करके भी अपनी उम्र में एक दिन का इज़ाफ़ा नहीं कर सकता है।

'ज़िन्दगी बहुत क़ीमती है, उसका एक लम्हा भी बर्बाद मत करो, लेकिन कुछ लोग तो अपनी आधी ज़िन्दगी लड़ने-झगड़ने में गंवा देते हैं।'

Scanned by CamScanner

किरणें

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ

'सब्र और नमाज़ से मदद हासिल करो।'

(सूरह बक़रा 2 : 45)

गुस्सा और जल्दबाज़ी, बदहाली के ईंधन हैं

इससे बढ़कर बात क्या होगी कि बराए उम्मीद
बर नहीं आती तो उसके आसरे जी तो लिया

सब्र व तहम्मुल एक फ़ौजदार है जिसके ज़रिये से इंसान अपने गुस्से, हिमाक़त और नफ़्सानी ख़्वाहिशात को क़ाबू में रखता है। तदब्बुर दरहक़ीक़त जल्दबाज़ी से परहेज़ है और तयक़्कुन, हिक्मत और दानाई का सहीह इस्तेमाल है। ये दो सिफ़ात ऐसी हैं जो परेशानियों को शिकस्त दे सकती हैं। इन सिफ़ात से महरूमी दरहक़ीक़त बहुत सी भलाइयों से महरूमी है और बहुत सी परेशानियों का पेश ख़ेमा है। एक बुर्दबार साबिर इंसान बहुत सी बुराइयों से ख़ुद को बचाये रखता है। लेकिन एक मग़्लूबुल ग़ज़ब अहमक़ बुराइयाँ मोल लेता रहता है और बुराइयाँ उसकी हिमाक़त से नशोनुमा और फ़रोग़ पाती हैं। एक मुदब्बिर इंसान नामालूम अम्र के अन्जाम से नदामत महसूस करता है जबकि एक जल्दबाज़ अहमक़ (बेवक़ूफ़) इंसान नदामत, परेशानी और बुरे अन्जाम का आदी होता है। इसी तरह अगर एक इंसान जो ख़ुद अपने लिये मेहरबान है वो दूसरों के नज़दीक भी यक़ीनन कामयाब इंसान होगा और उसकी हालत बेहतर होगी और वो बड़े मुतमइन अन्दाज़ में आराम व सुकून की ज़िन्दगी गुज़ारेगा।

हमारा दीन इस्लाम हमें इस बात पर उभारता है कि हम नर्मी, मेहरबानी, बुर्दबारी और तदब्बुर को इख़्तियार करें, जैसाकि रसूलुल्लाह (ﷺ) का इरशाद है, **'किसी चीज़ में नर्मी होती है तो लाज़िमन उसको ख़ूबसूरत बना देती है और किसी चीज़ में नर्मी न हो तो लाज़िमन उसको बदहेयत (बदशक्ल) बनाती है।'** (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिलह, बाब फ़ज़्लुर्रिफ़्क़ : 2594, सुनन अबी दाऊद : 2478, अदबुल मुफ़रद लिल्बुख़ारी : 469, मुस्नद अहमद : 6/58)

'हम अक्सर अपने बेश क़ीमत अवक़ात बेवक़्त चीज़ों के हुसूल में बर्बाद करते हैं।'

Scanned by CamScanner

किरणें

وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ

'और (अल्लाह ने) दीन में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी।'

(सूरह हज 22 : 78)

दौलत जमा करने का खेल कभी ख़त्म नहीं होता

ले के तुम सारा जहाँ बस ख़ुश रहो अपने लिये
छोड़ दो आज़ाद तन्हा मुझको जीने के लिये

ब्योर ब्रुक कहता है, मैंने बेइन्तिहा दौलत जमा कर ली लेकिन मैं अपने तजुर्बे की बुनियाद पर कहता हूँ कि इस खेल को जारी रखना. . . . . . दौलत जमा करने का खेल . . . . . . बेहद ख़तरनाक है और इसकी कोई इन्तिहा भी नहीं है। इस खेल ने मेरी ज़िन्दगी और ख़ुशियों को पामाल करके रख दिया और इस एहसास के बाद मैंने अपने काम और तवज्जह को नशरो-इशाअत की तरफ़ मोड़ दिया जिससे माल व दौलत की फ़रावानी तो नहीं हुई लेकिन उसने मेरी ख़ुशियाँ समाजी ख़िदमत से मिलने वाली राहत मुझे लौटा दी। मैं हर उस आदमी को नसीहत करता हूँ जिसका काम ज़रूरत से ज़्यादा माल जमा करना ही है कि वो इस खेल को बंद कर दे और उस काम से सुबुकदोश हो जाये ताकि वो उस दौलत से मुस्तफ़ीद हो सके जो उसने हासिल की है। अपने आपको पसन्दीदा कामों में मशग़ूल रखने का मन्सूबा बनाये ताकि वो मुआशरे की ख़िदमत कर सके और अपने अवक़ात का सहीह इस्तेमाल कर सके।

जिन लोगों ने बेहद्दो-हिसाब दौलत जमा कर ली है उनको इस बात में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं है कि एक बड़ी जायदाद उनके वारिसीन को मुन्तक़िल होने वाली है क्योंकि वो जानते हैं कि उनके वारिसीन उस वक़्त ज़्यादा अच्छी हालत में होंगे जब वो उनके लिये बराए नाम दौलत छोड़कर जायें और उनके पास सिवाय अक़्ल और अख़्लाक़ के कोई दूसरी दौलत न हो। बग़ैर मेहनत और कोशिश के मिलने वाली दौलत अक्सर हालतों में नेमत के बजाए लानत और ख़ुशी के बजाए बदहाली का सबब ही साबित होती है।

इंसान जब अपनी जिस्मानी आसाइश को बआसानी पूरा कर लेता है तो सामाने तअय्युश (मौज-मस्ती के सामान) और सहूलियात उसको आलसी बना देती हैं। उसकी अक़्ल सोचने-समझने से आरी और सुस्त पड़ जाती है। उसकी जवानी वक़्त से पहले मुरझा जाती है यहाँ तक कि उसको मौत आ जाती है।

'इस बात पर कामिल यक़ीन रखो कि दुनिया में कोई चीज़ नामुम्किन नहीं है।'

Scanned by CamScanner

قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِىْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ۝٦٩

'ऐ आग! ठण्डी हो जा और सलामती वाली हो जा इब्राहीम पर।' (सूरह अम्बिया 21 : 69)

ख़ाली दिमाग़ शैतान का घर

ज़रूरी तो नहीं हर आरज़ू पूरी हो इंसान की
हवा चलती है उस रुख़ भी मुख़ालिफ़ है जो कश्ती का

काहिली के बतन (पेट) से हज़ारों औसाफ़े रज़ीला जन्म लेते हैं और मौत व फ़ना के जरासीम की अफ़ज़ाइश इसी से होती है। लेकिन अगर कोई मक़सदे हयात है तो वो काहिली को मौत के घाट उतार देता है और ज़िन्दगी को मुतहर्रिक (Active) रखता है।

अगर ये ज़िन्दगी आख़िरत की एक अज़ीम ज़िन्दगी की तैयारी है तो वो लोग जो वक़्त को यूंही गंवा देते हैं, बड़े ख़सारे में हैं। उनकी खेती उनको मुफ़्लिसों में शामिल कर देती है, घाटे और टोटे के सिवा उनको कुछ हाथ नहीं आता। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें इसकी तरफ़ से ख़बरदार फ़रमाया है कि हज़ारों लोग ऐसे हैं जिनको वक़्त और आफ़ियत की नेमत मिली है लेकिन वो अल्लाह तआला की इस अज़ीम नेमत की हक़ीक़त से ग़ाफ़िल हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, **'दो नेमतें ऐसी हैं जिनकी तरफ़ से अक्सर लोग ग़ाफ़िल हैं सेहत और फ़ुरसते अमल।'** (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब ला ऐश इल्ला ऐशुल आख़िरति : 6412, सुनन तिर्मिज़ी : 2304, सुनन इब्ने माजा : 4170, सुननुल कुबरा लिन्नसाई : 11800)

बेशुमार तन्दुरुस्त तवाना जिस्म वाले ऐसे हैं जिनके पास ज़िन्दगी का कोई मक़सद नहीं है, जिनके पास कोई मसरूफ़ियत नहीं है और जिनका कोई नसबुल ऐन (Target) नहीं कि वो उसके लिये अपनी ज़िन्दगी वक़्फ़ कर दें और उसके हुसूल के लिये वो अपना सब कुछ लगा दें।

क्या इंसान की तख़्लीक़ इसीलिये की गई थी? हर्गिज़ नहीं, अल्लाह तआला का इरशाद है,

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ۝١١٥ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ۝١١٦

'क्या तुमने ये समझ रखा था कि हमने तुम्हें फ़िज़ूल ही पैदा किया है और तुम्हें हमारी तरफ़ कभी पलटना ही नहीं है? पस बाला व बरतर है अल्लाह, बादशाहे हक़ीक़ी.......।'

(सूरह मोमिनून 23 : 115-116)

ज़िन्दगी का एक मक़सद है। ज़मीन व आसमान और जो कुछ उसके दरम्यान है और इंसान इस दुनिया में एक ख़ास मक़सद के तहत पैदा किये गये हैं। इंसान पर वाजिब है कि वो उस मक़सद की मअरिफ़त हासिल करे और उसके लिये ज़िन्दगी गुज़ारे। लेकिन जब इंसान अपनी शहवानी ख़्वाहिशात के महदूद दायरे में महसूर हो जाये और अपने आपको एक ख़ोल में छिपा ले और तमाम चीज़ों से ख़ुद को रू पोश कर ले (छिपा ले), तब उसकी पसंद हाज़िर और मुस्तक़बिल के लिये किस क़द्र बुरी और बेसूद होकर रह जायेगी।

'अपने ख़यालों में कामयाबी के तसव्वुर को जमाये रखो और उसके तख़य्युल को हमेशा ज़िन्दा रखो।'

Scanned by CamScanner

किरणें

وَّيَرۡزُقۡهُ مِنۡ حَيۡثُ لَا يَحۡتَسِبُ ؕ

'और उसको ऐसे रास्ते से रिज़्क़ देगा जिधर उसका गुमान भी न होगा।'

(सूरह तलाक़ 65 : 3)

एक घर शोर व हंगामा, ग़ैज़ व ग़ज़ब और थकान से पाक

मर्दे दाना दूर बीं, दानिश शिआर
साबिर व शाकिर कर रहा या सो गवार

उसने अपने बाप से रोते हुए बयान किया, अब्बा जान! कल मेरे और मेरे शौहर के दरम्यान एक मसला पैदा हो गया इस वजह से कि गुस्से में मेरे मुँह से कुछ निकल गया था। जब मैंने उसको गुस्से में देखा तो मुझे अपनी हरकत पर सख़्त नदामत (शर्मिंदगी) हुई और मैंने उस पर उससे मअज़्रत तलब की लेकिन उसने मुझसे बात करने से इंकार कर दिया और अपना चेहरा दूसरी तरफ़ फैर लिया। मैं उसका गुस्सा ठण्डा करने की मुसलसल कोशिश करती रही यहाँ तक कि वो हँस पड़ा और मुझ पर राज़ी हो गया। लेकिन मैं अपने रब से उन लम्हात के सिलसिले में ख़ौफ़ में मुब्तिला हूँ कि कहीं वो मुझसे मुवाख़िज़ा न करे कि जब वो गुस्से के आलम में था तो मैंने उसको ज़हनी अज़ियत से निढाल कर दिया था।

उसके वालिद ने उससे कहा, 'मेरी बेटी! उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर तुम्हारी मौत इस हालत में हो जाती कि तुम्हारा शौहर तुमसे राज़ी न होता तो अल्लाह तबारक व तआला भी तुमसे राज़ी नहीं होते। तुम्हें ये बात मालूम होनी चाहिये कि वो औरत जिसका शौहर उससे नाराज़ हो उसको तौरात, इन्जील, ज़बूर और कुरआन पाक में लानतज़दा कहा गया है। सकराते मौत उस पर सख़्त होगी। उसकी क़ब्र तंग कर दी जायेगी। तो ख़ुशख़बरी है उस औरत के लिये जिसका शौहर उससे राज़ी और ख़ुश है।'

एक नेक औरत इस बात की शदीद ख़्वाहिशमन्द होती है कि वो अपने शौहर की महबूबा बनकर रहे। इसलिये वो कभी ऐसी हरकत नहीं करती जिससे उनकी इज़्दवाजी ज़िन्दगी (मियाँ-बीवी के रिश्तों) में बदमज़्गी आये। किसी ने अपनी बीवी को क्या ख़ूब नसीहत की है :

जाने मन, मअज़्रत तलब कर लो
हालते ग़ैज़ में न कुछ बोलो
अपने अल्फ़ाज़ से न दिल तोड़ो
नक़्शे उल्फ़त को यूँ न महव करो

प्यार, उल्फ़त, मवद्दत व रहमत
बेश क़ीमत गोहर हैं क़द्र करो
क़ल्ब की माहियत बदलती है
अपने शिकवों से न मलोल करो

रंज व उल्फ़त जमा नहीं होते
रंजीशें अपने दिल से दूर करो

Scanned by CamScanner

किरणें

'उस औरत को अमान नहीं जिसके पास ईमान नहीं।'

शर्म व हया और इफ़्फ़त व पाकदामनी, हक़ीक़ी हुस्न व जमाल है

दिल को देखा बैठता और रास्ते मसदूद जब
मेरी उम्मीदें तुम्हारी अफ़्व का ज़ीना बनें

क्या तुमको उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ज़ौजा मुतह्हरा नबी (ﷺ) के बारे में ये रिवायत मिली कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'जिसने तकब्बुर की वजह से अपना लिबास लटकाया तो अल्लाह तबारक व तआला क़यामत के दिन उसकी तरफ़ नज़रे इल्तिफ़ात नहीं डालेंगे।'** (सुनन तिर्मिज़ी, किताबुल्लिबास, बाब मा जाअ फ़ी हबिर जुयूलुन्निसा : 1731, सुनन नसाई, किताबुज़्ज़ीनत, बाब जुयूलुन्निसा : 5336, मुस्नद अहमद : 2/5, मुस्नद इस्हाक़ : 1965, शैख़ अल्बानी रह. ने इस हदीस़ को सहीह कहा है।)

वल्लाह उम्मुल मोमिनीन का क्या कहना! वल्लाह हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) का क्या पूछना, आप न मुतकब्बिर थीं और न घमण्ड करने वाली लेकिन आप इफ़्फ़त मआब, पाकदामन, बाहया और शरीफ़ मुस्लिम ख़्वातीन में से थीं। आप नहीं चाहती थीं कि आपके पांव नज़र आयें बल्कि आप चाहती थीं कि आपका दामन इस तरह ज़मीन तक लटका रहे कि कोई ग़ैर मर्द आपके पांव का कोई हिस्सा भी न देख सके।

आह! हमारे अहद की मस्तूरात! इल्ला मा शाअल्लाह....... ! वो अपने दामन को ऊपर करती चली जा रही हैं, जिस क़द्र ज़्यादा से ज़्यादा वो ऊपर कर सकती हैं। इस ख़ौफ़ से कि उनके दामन को गर्दो-गुबार न लग जाये। यूरोप की ख़्वातीन की नक़्क़ाली में जो क़रीब-क़रीब नंगी होती हैं उस नंगेपन और अख़्लाक़ सोज़ हरकतों के लिये उनके पास हज़ारों बहाने और मअज़्रतें मौजूद हैं। ला हौल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह! उनके शौहर नामदार महज़ नाम के मर्द हैं। उनके पहलू-ब-पहलू चलते हैं और उन्हें इसका ज़रा एहसास नहीं कि उनकी बेगमात शर्म व हया से आरी हो चुकी हैं।

निस्वानियत का हुस्न है शर्म व हया के साथ
गुलशन में जैसे फूल हो ख़ुश्बू सबा के साथ
सुर्ख़ी हया की आरिज़ गुलगों पे ख़ूब है
जब ये नहीं तो ख़ैर कहाँ इस बला के साथ

'जिस्मानी आराम क़िल्लते तआम पर, रूहानी सुकून क़िल्लते इस्म व उदवान पर, दिल का इत्मीनान क़िल्लते एहतिमाम पर और ज़बान की राहत क़िल्लते कलाम पर मुन्हसिर (Depanded) है।'

✻✻✻✻✻

Scanned by CamScanner

किरणें

'सब्र का फल मीठा होता है।'

अल्लाह तआला ही बिछड़ों को मिलाता है

मेरे दिल की दुनिया जो आबाद है
हो ख़ल्वत कि जल्वत तेरी याद है

बीस साल से ज़्यादा अर्से की जुदाई के बाद अल्लाह तबारक व तआला ने उनकी क़िस्मत में मुलाक़ात लिख दी। ये कहानी अपनी नौइयत की अजीबो-ग़रीब कहानी है। माँ और बेटी के दरम्यान, जिन्हें हालात ने एक-दूसरे से जुदा कर दिया था, ये मुलाक़ात उस वक़्त हुई जब बेटी की उम्र पच्चीस साल हो चुकी थी।

ये वाक़िया उस वक़्त हुआ जब बेटी 'अबहा' के क़रीब जिबालुस्सौदा जैसे पुरफ़िज़ा मक़ाम पर (हनीमून) असल मना रही थी। माँ ने शौहर के इन्तिक़ाल के बाद दूसरी शादी कर ली थी जब उसकी बेटी तीन बरस की छोटी सी बच्ची थी। दूसरे शौहर के हालात कुछ ऐसे थे कि वो मुसलसल एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल होते रहे और माँ को बेटी से मिलने का मौक़ा न मिल सका। बाप के इन्तिक़ाल के बाद बच्ची नाना के पास परवरिश पाती रही यहाँ तक कि वो जवान हो गई।

मौसमे गरमा के सुहाने दिनों में जिबालुस्सौदा में बेटी की मुलाक़ात एक तफ़रीही मक़ाम पर एक ख़ातून से हुई। उनमें आपस में बातचीत भी होती रही लेकिन वो एक-दूसरे से नावाक़िफ़ थीं। माँ ने बेटी को जिस वक़्त छोड़ा था उस वक़्त वो तीन साल की थी। जिस वक़्त वो बातों में मशग़ूल थीं तो माँ ने देखा कि लड़की की एक उंगली कटी हुई है। तब उसने उससे उसकी माँ के बारे में सवाल किया। लड़की ने अपनी कहानी सुनाई और माँ ने भी ये महसूस कर लिया कि हो न हो ये उसी की बेटी है जो बीस साल पहले उससे जुदा हो गई थी। उसने उसको अपनी बाहों में ले लिया और वालिहाना अन्दाज़ में उसके रुख़सार का बोसा लेने लगी और उसको बताया कि बीस साल से वो किस तरह उसकी जुदाई में तड़पती रही है और माज़ी के इस तवील अर्से ने कैसे महरूमियों के साथ गुज़ारा है।

'ख़ुशी और शादमानी के बारे में फ़िक्रमन्द होने का लाज़िमी नतीजा माज़ी और मुस्तक़बिल के बारे में फ़िक्रमन्द होना है और ये फ़िक्रमन्द होना दरअसल ख़ुशी और शादमानी के एहसास का खोना है।'

Scanned by CamScanner

किरणें

كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾

'(हूरें) ऐसी ख़ूबसूरत जैसे हीरे और मोती।'

(सूरह रहमान 55 : 58)

एक कलिमा जो ज़मान व मकान पर मुहीत है

ग़म के मारों का ठिकाना है कहाँ तेरे सिवा
तू ही हर साइल का है मक़सूद बे चूँ व चिरा

हज़रत मूसा (अलै.) ने अल्लाह तबारक व तआला से अर्ज़ किया, **'ऐ मेरे रब! मुझे ऐसे कलिमे की तालीम फ़रमाइये कि जिसके ज़रिये मैं आपसे दुआ माँगूं और आपसे हमकलामी का शर्फ़ हासिल करूँ।'**

अल्लाह सुब्हानहू वतआला ने इरशाद फ़रमाया, **'ऐ मूसा कहो, ला इला-ह इल्लल्लाह (अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं)।'**

हज़रत मूसा (अलै.) ने अर्ज़ किया, **'सभी लोग ला इला-ह इल्लल्लाह कहते हैं।'**

अल्लाह तआला ने फ़रमाया, **'अगर सात आसमान और ज़मीन एक तरफ़ हो और कलिमा ला इला-ह इल्लल्लाह दूसरी तरफ़ तो कलिमा ला इला-ह इल्लल्लाह का पल्ला भारी होगा।'** (सुननुल कुबरा लिन्नसाई : 10602, मुस्नद अबी यअला : 1393, सहीह इब्ने हिब्बान : 6218, अद्दुआउ लित्तबरानी : 1480, मुस्तदरक हाकिम : 1936, शैख़ अल्बानी ने इसे ज़ईफ़ कहा है। दराज की अबू हैसम से रिवायत ज़ईफ़ होती है।)

ला इला-ह इल्लल्लाह अनवारे सातिआ हैं जिनकी रोशन शुआओं (किरणों) से गुनाहों के कोहरे छट जाते हैं। इस कलिमे से दिल मुनव्वर हो जाता है। लेकिन इसकी रोशनी अफ़राद की कुव्वते यक़ीन के ऐतबार से मुख़्तलिफ़ होती है और दिल की कैफ़ियत को अल्लाह तबारक व तआला के सिवा कोई नहीं जानता।

लोगों में से कुछ ऐसे हैं जिनके दिल में इस कलिमे का नूर आफ़ताबे आलम ताब (सूरज) की तरह रोशन है, कुछ ऐसे हैं जिनके दिल में ये नूर रोशन सितारों की मानिन्द है, कुछ ऐसे हैं जिनके दिल में ये नूर एक अज़ीम मश्अल (बत्ती) की तरह है, कुछ ऐसे हैं जिनके दिल में ये एक रोशन चिराग़ की मानिन्द है और कुछ ऐसे हैं जिनके दिल में ये टिमटमाते हुए दिये की तरह है।

इस कलिमे का नूर जिस क़द्र ज़्यादा होगा उसी क़द्र उसके असरात भी मुरत्तब होंगे। इस नूर की कसरत अपनी कुव्वत और शिद्दत के लिहाज़ से शुकूक व शुबहात, शहवात और नफ़्सानी ख़्वाहिशात को जला डालती है।

'मोमिन की ख़ुशी अल्लाह से मुहब्बत में मुज़्मर (पोशीदा) है और अल्लाह के लिये मुहब्बते अमीक़ मुसर्रत से बहरावर करती है जिसकी हलावत (मिठास) से एक मोमिन आशना होता है और फिर उसके बदले में किसी दूसरी चीज़ का तलबगार नहीं होता।'

Scanned by CamScanner

किरणें

'सालेह औरत क़ीमती ख़ज़ाने और माल व दौलत से ज़्यादा क़ीमती है।'

दिल, जिनमें जन्नत का इश्तियाक़ है

ज़िन्दगी का लुत्फ़ है मरने से पहले

फूल मुरझाने से पहले सूंघ लें

क्या तुमको सालेह बिन हई की बीवी का क़िस्सा मालूम है? एक मोमिना सालिहा जिसके शौहर ने उसके पास दो बेटों को छोड़कर वफ़ात पाई। बच्चे जब बड़े हुए तो सबसे पहले उस ख़ातून ने अपने बच्चों को अल्लाह तआला की इबादत, उसकी ताअत और तहज्जुद की तालीम दी।

उसने अपने बच्चों से कहा, मेरे घर में रात का कोई लम्हा ऐसा न गुज़रे कि जिसमें कोई न कोई अल्लाह की इबादत न कर रहा हो और उसका ज़िक्र न हो रहा हो। लड़कों ने कहा, अम्मीजान! आप क्या चाहती हैं? उसने कहा, हम रात को तीन हिस्सों में तक़सीम कर देते हैं, तुममें से एक रात के पहली तिहाई में इबादत करेगा, दूसरा दूसरी तिहाई में क़ियाम करेगा और मैं आख़िरी तिहाई हिस्से में इबादत करूँगी, फिर मैं फ़ज्र के लिये तुम दोनों को बेदार करूँगी।

दोनों बेटों ने कहा, अम्मीजान! हमने सुना और इताअत की।

जब माँ का इन्तिक़ाल हो गया तो बेटों ने इस सिलसिले को ख़त्म नहीं किया और क़ियामुल्लैल को छोड़ा नहीं। क्योंकि इबादत और इताअते इलाही से उनके दिल मामूर थे और उनकी ज़िन्दगी में वो लम्हात जिनमें वो रातों में अल्लाह सुब्हानहू वतआला की इबादत करते थे, सबसे अच्छे और क़ीमती लम्हात थे। इसलिये उन्होंने रात को दो हिस्सों में तक़सीम किया और आधी रात एक भाई क़ियामुल्लैल करता और आधी रात दूसरा भाई तहज्जुद पढ़ता। जब उनमें से एक भाई शदीद बीमार हो गया तो दूसरा भाई अकेला रात भर नमाज़ में खड़ा रहने लगा।

'ज़िन्दगी अपने तमामतर हुस्न व जमाल के साथ हमारे क़रीब मौजूद है। उसकी तरफ़ पेश क़दमी ही असल ख़ुशी व शादमानी है।'

✽✽✽✽✽

Scanned by CamScanner

तक़दीर के पाबंद नबातात व जमादात

मोमिन फ़क़त अहकामे इलाही का है पाबंद

इक़बा

दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब औरत

(9)

ख़्वातिम निगाराँ

Scanned by CamScanner

किरणें

وَإِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ

'अगर तुम अल्लाह की नेमतों का शुमार करना चाहो तो नहीं कर सकते।'

(सूरह इब्राहीम 14 : 34)

ईमान बिल्क़द्र, ख़ैर व शर जो कुछ है सब अल्लाह की तरफ़ से है

क़नाअत का ख़ज़ाना मिल गया है
नहीं हाजत मुझे अब सीम व ज़र की

अल्लाह तबारक वतआला का इरशाद है,

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِىْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللهِ يَسِيْرٌ ۚ﴿۲۲﴾ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ؕ وَاللهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۙ﴿۲۳﴾

'कोई मुसीबत ऐसी नहीं है जो ज़मीन में या तुम्हारे अपने नफ़्स पर नाज़िल हुई हो और हमने उसको पैदा करने से पहले एक किताब (नविश्ता तक़दीर) में लिख न रखा हो। ऐसा करना अल्लाह के लिये बहुत आसान काम है। (ये सब कुछ इसलिये है) ताकि जो कुछ नुक़सान तुम्हें हुआ उस पर तुम दिल शिकस्ता न हो और जो कुछ अल्लाह तुम्हें अता फ़रमाये उस पर फूल न जाओ। अल्लाह ऐसे लोगों को पसंद नहीं करता जो अपने आपको बड़ी चीज़ समझते हैं और फ़ख़्र जताते हैं।'

(सूरह हदीद 57 : 22-23)

एक दूसरे मक़ाम पर इरशादे रब्बानी है,

وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْئًا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْئًا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَاللهُ يَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۱۶﴾

'और हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें नागवार हो और वही तुम्हारे लिये बेहतर हो और हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें पसंद हो और वही तुम्हारे लिये (नतीजतन) बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।'

(सूरह बक़रा 2 : 216)

Scanned by CamScanner

मुसीबत के वक़्त क़ज़ा व क़द्र (तक़दीर) पर ईमान तमानियते क़ल्ब हासिल करने में बड़ा किरदार अदा करता है। ख़ास तौर पर जब बन्दा ये समझता है कि अल्लाह तबारक व तआला अपने बन्दों के अहवाल से ख़ूब बाख़बर है और निहायत मेहरबान है और वो बन्दों के लिये आसानियाँ पैदा करता है और वो हकीम व ख़बीर है। वो आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा बना रहा है और उस दिन वो साबिरीन को बेइन्तिहा अज्र व बेहिसाब ईनाम वा इकराम अता फ़रमायेगा। अगर हम इस तरह सोचें और अमल करें तो हमारा सारा हुज़्न व मलाल मसर्रत व शादमानी में बदल जायेगा। लेकिन हर शख़्स का ईमान इतना क़वी नहीं कि उस पर अमल कर सके।

वो तरीक़े क्या हैं जिन पर चलकर इंसान अपने रंज व ग़म के एहसास को कम और अपनी परेशानियों में तख़्फ़ीफ़ कर सकता है?

* ज़रा उन लोगों के हाल पर ग़ौर करो जिनकी मुसीबत तुमसे ज़्यादा बड़ी और शदीदतर है।
* ज़रा ये भी देखो कि जिन नेमतों और भलाइयों से तुम मुस्तफ़ीद हो रही हो क्या दुनिया में बहुत से लोग इससे महरूम नहीं।
* मायूसी और पज़मुर्दगी को अपने क़रीब भी न फटकने दो क्योंकि ये अपने साथ मुसीबत लाती है।

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝

'पस हक़ीक़त ये है कि तंगी के साथ फ़राख़ी (ख़ुशहाली) भी है। बेशक तंगी के साथ फ़राख़ी (ख़ुशहाली) भी है।' (सूरह इन्शिराह 94 : 5-6)

'जो शख़्स दूसरों तक तेज़ी के साथ ख़ुशी पहुँचाना चाहता है एक दिल आवेज़ मुस्कुराहट इस काम के लिये एक उम्दा ज़रिया है।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾

'अल्लाह के सिवा उसका (वक़्ते मुतअय्यन खोल) दिखाने वाला कोई और नहीं।'

(सूरह नज्म 53 : 58)

ऐतदाल और म्याना रवी, सबसे बेहतर है

तआक़ुब में हैं रोज़ व शब ख़ैर व शर

पसे शर है ख़ैर और पसे ख़ैर शर

शैख़ मुस्तफ़ा मशहूर फ़रमाते हैं, 'मैं ख़ुश व ख़ुर्रम रहता हूँ क्योंकि मैं एक मुतवस्सित (दरम्यानी) दर्जे
का आदमी हूँ, मुतवस्सित आमदनी, मुतवस्सित सेहत और मुतविस्सत तर्ज़े रिहाइश के साथ ज़िन्दगी
गुज़ार रहा हूँ। हमारा माल व अस्बाब मुख़्तसर है लेकिन उसके साथ ही मेरे मुहर्रिकात और मक़ासिद
कसीर हैं। मक़ासिद जो ज़िन्दगी की अलामत हैं। मक़ासिद जो हमारे दिलों में हमारी ज़िन्दगी की हक़ीक़ी
हरारत हैं। ये वो बुनियाद है जिस पर हम अपनी ख़ुशी की इमारत उठाते हैं।'

मैं अल्लाह तआला से इस लाइन के पढ़ने वाले के लिये दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला
उनको भी हयाते मुतवस्सित अता फ़रमाये। उनको भी हर नेमत से क़दरे बहरावर करे। वल्लाहुल
अज़ीम! ये बड़ी उम्दा दुआ है। मेरी माँ फ़ल्सफ़ा से नावाक़िफ़ है लेकिन उसकी फ़ितरत आइने की तरह
साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ है। वो उन सारी बातों को बग़ैर पढ़े हुए समझती है और वो उनके बारे में सब्र व शुक्र
की तल्क़ीन करती है। सब्र व शुक्र का मतलब है कि हमारे पास बहुत कुछ है। मुख़्तसर सामाने ज़ीस्त
लेकिन कसीर रूहानी मसर्रत और क़ल्बी इत्मीनान।

'झूठी मुस्कान, निफ़ाक़ की बदतरीन शक्ल है।'

*****

Scanned by CamScanner

'मेरी आँखों की ठण्डक नमाज़ में है।'

(सुनन नसाई, किताब अशरतुन्निसा, बाब हुब्बुन्निसा 3391, मुस्नद अहमद 3/128, मुस्नद अबी यअ़ला : 3482, सुननुल कुबरा लिल्बैहक़ी : 7/78)

पज़मुर्दा दिल, पज़मुर्दा कुनद अन्जुमने रा

ख़ात्मा बिल्ख़ैर पर है कामयाबी का मदार
इब्तिदा में मुश्किलें हैं, इन्तिहा है पुरबहार

एक दोस्त अपने दोस्तों के मिज़ाज व अख़्लाक़ को मुतास्सिर करता है। ख़्वाह एक शख़्स दोस्त हो, शरीके कार हो, हमनशीं हो या शरीके हयात हो। एक ख़ुश मिज़ाज, हँसमुख और पुर उम्मीद इंसान अपने उन औसाफ़ को अपने हमनशीनों तक मुन्तक़िल करता है।

लेकिन अगर कोई शख़्स रोनी सूरत वाला, अपनी ज़िन्दगी से मायूस, परेशान हाल, नाउम्मीद, ग़मज़दा, निढाल और पज़मुर्दगी का शिकार है तो ऐसा आदमी उन मुहलिक बीमारियों को मर्ज़े मुतअ़द्दी की तरह अपने हम जलीसों (हमजोलियों) में फैलायेगा।

सिर्फ़ कुछ लोग ही इस क़िस्म के असरात नहीं डालते बल्कि टेलीविजन के कुछ प्रोग्राम, रेडियो की कुछ नशरियात भी असर अन्दाज़ होती हैं। उनमें से कुछ उम्मीद अफ़ज़ा होती हैं और कुछ हौसला शिकन। कुछ दर्दे दिल में इज़ाफ़ा करने वाली और कुछ इत्मीनाने क़ल्ब पैदा करने वाली। किताबें भी ख़ास तौर पर असर अन्दाज़ होती हैं। इनकी मिसाल मौसम जैसी है। कुछ मौसमे ख़िज़ाँ की तरह होती हैं तो कुछ मौसमे बहार की तरह। अगर एक इंसान उम्मीद अफ़ज़ा कुतुब का इन्तिख़ाब (Selection) करता है जो उसे ज़िन्दगी की तवानाई अता करती हैं, कामयाबी, भलाई और ख़ुद ऐतमादी से हमकिनार करती हैं, तो गोया उसने अपने साथ भलाई का एहतिमाम किया है जो उसकी ज़िन्दगी में रोशनी के दरीचे वा करती है और उससे ताज़ा और सेहतबख़्श बादेनसीम (साफ़-सुथरी हवा) के झोंके उसके ख़ाना-ए-दिल में आते हैं और वो नेमतों से बहरावर होता है। लेकिन अगर किसी ने ऐसी किताबों का इन्तिख़ाब किया है जो ज़हनी परेशानी में इज़ाफ़ा का मोजिब बनती हैं और जो इंसानी फ़ितरत और इंसानी अक़्दार से मुताल्लिक़ उसके दिल में शुकूक व शुब्हात पैदा करती हैं जो इंसानी ज़िन्दगी और इंसानियत से मुताल्लिक़ मन्फ़ी रवैया पैदा करती हैं तो उनकी मुश्तमिलात (पसंद करदा) उसको इसी तरह मुतास्सिर करेंगी जिस तरह एक जुज़ाम (कोढ़) का मरीज़ एक सेहतमन्द आदमी को मुतास्सिर (प्रभावित) करता है और इस तरह उस पर अर्स-ए-हयात तंग हो जायेगा।

'ख़ुशबख़्ती का रास्ता तुम्हारे सामने है। उसको इल्म, अमले सालेह और अख़्लाक़े हसना में तलाश करो। हर मामले में राहे ऐतदाल इख़्तियार करो और ख़ुश व ख़ुर्रम रहो।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ

'तो (अल्लाह) ने उन पर सकीनत नाज़िल फ़रमाई।'

(सूरह फ़तह 48 : 18)

ख़बरदार! शिकवा संजी और नाशुक्री नहीं

ज़िल्लत व ख़्वारी मुक़द्दर हो गई उसका कि जो
ऐश में ग़ाफ़िल रहा, मेहनत से कतराता रहा

एक दानिशमन्द का क़ौल : जब मैं उम्र के बीस और तीस के दरम्यानी साल में था तो अक्सर बेइत्मीनानी का इज़हार और शिकायत करता था जबकि मैं ज़िन्दगी से लुत्फ़अन्दोज़ हो रहा था। ऐसा इसलिये कि मैं मसर्रत की हक़ीक़त से नाआश्ना था। अब जबकि मैं साठ साल का हूँ, मैं महसूस करता हूँ कि मैं किस क़द्र ख़ुश था जब मैं बीस और तीस के दरम्यान था। लेकिन उसका इदराक बहुत देर के बाद हुआ है। अब उन ख़ुशगवार दिनों की यादों के सिवा कुछ भी नहीं। अब उनको याद करके कफ़े अफ़सोस मलने के सिवा कोई चारा नहीं। अगर उस वक़्त मुझे इसका इल्म होता तो मैं और ज़्यादा ख़ुशी से हमकिनार होता। मुझे अपने शिकवा सन्जी के अस्बाब का इल्म नहीं जबकि मैं शबाब के मौसमे बहार के तरोताज़ा गुलाब के मानिन्द था और मेरी ख़ुशियाँ अत्तरबेज़ (महक रही) थीं। उसका एहसास मुझे अब हो रहा है जब मैं एक सूखी टहनी की तरह झुक गया हूँ और मेरी ख़ुशियों की कलियाँ भी मुरझा गई हैं।

मेरी अज़ीज़ बहन! मैं आपसे अर्ज़ करता हूँ : अगर आप अपनी ख़ुशबख़्ती और मसर्रत की हक़ीक़त से आश्ना हैं तो आप उससे भरपूर लुत्फ़ अन्दोज़ होंगी और अगर आप इसकी हक़ीक़त से बेख़बर हैं तो ख़ुशियों की तलाश में इधर-उधर सरगरदाँ (परेशान) होंगी और आपको इसकी कमी का शिद्दत से एहसास होगा और आप पर मायूसी की कैफ़ियत तारी होगी और आप ग़ैर मुतमइन और शाकी (शक्वा शिकायत करने वाली) होंगी। ऐसी सूरत में आप भी मुन्तज़िर रहिये और हाल को माज़ी बनने दीजिये और तब उस वक़्त आप अपने बीते दिनों को याद करके रोयेंगी और इस हक़ीक़त का ऐतराफ़ करेंगी कि उस वक़्त आप कितनी ख़ुश थीं जबकि आपने उसको तस्लीम नहीं किया था और अब उन दिनों के गुज़र जाने के बाद आपके पास कुछ भी नहीं, सिवाय यादों की ख़ुश्क टहनियों पर फूलों की ख़ुश्क पत्तियों के जिनसे ख़ुशियों की तितलियाँ उड़ चुकी होंगी।

'एक औरत घर को जन्नत का नमूना बना सकती है और जहन्नम भी।'

Scanned by CamScanner

رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ

'अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वो अल्लाह से राज़ी हुए।'

(सूरह बय्यिना 98 : 8)

अक्सर मुश्किलात के अस्बाब बहुत मामूली होते हैं

अख़्लाक़ की ख़ुश्बू पाई है जब जब भी गया हूँ घर उसके
ज़ाहिर मैं अगरचे इत्र नहीं, ख़ुश्बू का कोई सामान नहीं

ये बड़ी अफ़सोसनाक बात है कि अक्सर बहुत ही मामूली बातें हज़ारों लोगों को चिराग़े पा कर देती हैं और वो होशो-हवास खो बैठते हैं, घर तबाह हो जाते हैं, दोस्ती ख़त्म हो जाती है और लोग टूटकर बिखर जाते हैं और ज़िन्दगी भर कफ़े अफ़सोस मलते रहते हैं। मशहूर माहिरे नफ़्सियात डील कार्नेगी ने इस सूरते हाल की क्या ही उम्दा तशरीह की है कि किस तरह मामूली बातें भयानाक नताइज का पेश ख़ेमा होती हैं :

'छोटी-छोटी बातें, अज़्दवाजी ज़िन्दगी में बाहम नज़ाअ (झगड़े) का सबब बनती हैं, ज़ौजैन (मियाँ-बीवी) अक़्ल व ख़िरद से बेगाना हो जाते हैं। दुनिया में जितने लोगों को हार्ट अटेक होते हैं उनमें से आधे से ज़्यादा के अस्बाब महज़ मामूली बातें होती हैं।'

इस बात की तस्दीक शिकांगो के एक जज मिस्टर जोज़फ़ साबास़ के बयान से भी होती है जिसने चालीस हज़ार तलाक़ के मामलों का जायज़ा लेने के बाद ये बात कही है, 'अक्सर अज़्दवाजी ज़िन्दगी की नाकामी के अस्बाब तुम बहुत ही मामूली बातों को पाओगे।'

न्यूयॉर्क के अवामी क़ानूनी मुशीर मिस्टर फरंक होगन कहते हैं कि क्रीमिनल कोर्ट (महकमा तअज़ीरात) में जो मामले आते रहे हैं उनमें से आधे मामलात ऐसे होते हैं कि ज़िद्द होते हैं या कोई तौहीन आमेज़ रवैया, या कोई दिल आज़ार बात, या कोई नामुनासिब बर्ताव....! ऐसी ही बातों के अस्बाब बहुत ही मामूली होते हैं। जैसे वो बहस़ व मुबाहिसे जो अफ़रादे ख़ानदान के दरम्यान छोटी-छोटी बातें क़त्ल और भयानाक जराइम का पेश ख़ैमा होती हैं।

ऐसे अफ़राद बहुत कम हैं जो जज़्बाती लिहाज़ से पुख़्ता और मज़बूत दिल व दिमाग़ के हामिल हैं वरना अक्सर सूरतों में जब हमारी इ़ज़्ज़त और वक़ार पर बराहे रास्त हमला होता है तो हम बेक़ाबू हो जाते हैं और दुनिया में जो मुश्किलात हमें पेश आती हैं उनमें से आधी की वजह यही बातें हैं।

'सबसे बड़ी नेमत अमले ख़ैर का एहतिमाम है जो रूह को ख़ुशियों से भर देती है।'

Scanned by CamScanner

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ

'जब तुम अपने रब से मदद तलब करोगे तो वो तुम्हारी ज़रूर मदद करेगा।' (सूरह अन्फ़ाल 8 : 9)

फ़न्ने ख़ुश कलामी

ऐब बीनी, नुक्ता चीनी, इख़्तिलाफ़ाते शदीद
दिल शिकन बातें ही सुनकर मैं बना हूँ इक चट्टान

मुअर्रिख़ीन लिखते हैं कि एक दिन ख़ालिद बिन यज़ीद बिन मुआविया, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) को बुरा-भला कहने लगा जो सल्तनते बनू उमैया के सख़्त मुख़ालिफ़ थे। ख़ालिद ने अब्दुल्लाह (रज़ि.) को बख़ील क़रार दिया। ख़ालिद की बीवी हज़रत रमला बिन्ते ज़ुबैर (रज़ि.) जो अब्दुल्लाह (रज़ि.) की बहन थीं, वहाँ मौजूद थीं। ख़ालिद ने उनसे कहा, तुम कुछ नहीं कहतीं? क्या तुम मेरी बातों से इत्तिफ़ाक़ करती हो या तुम मेरी बातों का जवाब देना नहीं चाहतीं? रमला ने कहा, इन दोनों बातों में से एक भी नहीं। हम औरतें मर्दों की बातों में दख़ल अन्दाज़ी के लिये तख़्लीक़ नहीं की गईं, हम तो फूल की तरह हैं जिसकी नज़ाकत से लुत्फ़ अन्दोज़ होते हैं और ख़ुश्बू से मशामे जाँ को मुअत्तर करते हैं। हमें आप मर्दों के आपसी मामलात में दख़ल अन्दाज़ी की क्या ज़रूरत है?
इस जवाब से ख़ालिद बहुत ख़ुश हुआ और उसने रमला की पेशानी चूम ली।

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मियाँ-बीवी के दरम्यान जो पौशीदा बातें होती हैं उनको ज़ाहिर करने से निहायत सख़्ती से मना फ़रमाया है। इमाम अहमद बिन हम्बल (रह.) हज़रत असमा बिन्ते यज़ीद (रज़ि.) से रिवायत बयान करते हैं कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास मौजूद थीं और आपके पास बहुत से मर्द और औरतें जमा थीं। आप (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'कभी-कभी ऐसा होता है कि एक मर्द जो अपनी बीवी के साथ करता है उसको बयान करता है और कभी-कभी ऐसा होता है कि औरत जो कुछ शौहर के साथ करती है उसे बयान करती है?'** सब लोग ख़ामोश थे, किसी ने कुछ नहीं कहा। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मर्द ऐसा करते हैं या औरतें भी ऐसा करती हैं। आप (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'ऐसा मत करो, ये तो ऐसा है जैसे शाहराह पे कोई शैतान मर्द ख़बीस़ औरत से मुबाशिरत करे और सब लोग उसको देख रहे हों।'** (मुस्नद अहमद : 6/456, मुअजम अल्कबीर लित्तबरानी : 24/162 : 414, शैख़ अल्बानी रह. ने इस हदीस़ को ज़ईफ़ कहा है। इर्वाउल ग़लील : 7/74, शहर बिन हौशब रावी मुतकल्लम फ़ीह है।)

कुछ मुफ़स्सिरीन ने अल्लाह तबारक व तआला के इस क़ौल, 'पस जो सालेह औरतें हैं वो इताअतगुज़ार होती हैं और मर्दों के पीछे अल्लाह की हिफ़ाज़त व निगरानी में उनके हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त करती हैं।' (सूरह निसा 4 : 34)

से ये मुराद लिया है कि उन औरतों की तरफ़ इशारा है जो मियाँ-बीवी के आपसी राज़ की हिफ़ाज़त करती हैं।

Scanned by CamScanner

'अल्लाह की नेमतों का शुमार करो, अपनी मुश्किलात का नहीं।'

'ज़िन्दगी ख़ुद ही मुख़्तसर (छोटी) है, हुज़्न व मलाल (फ़िक्र व ग़म) से उसको और मुख़्तसर न बनाओ।'

मुसीबतों के मुक़ाबले में नमाज़ से मदद लो

मेरे गुनाह बहुत हैं मगर तेरी रहमत
अज़ीमतर है, तेरा अफ़्व व दरगुज़र बेहिसाब

शुरू इस्लाम की मुसलमान औरतें जानती थीं कि नमाज़ बन्दे और उसके रब के दरम्यान एक राबता (Connection) है और वो लोग कामयाब हुए जिन्होंने नमाज़ में ख़शियत इख़्तियार की। जैसाकि फ़रमाया, **'यक़ीनन फ़लाह पाई है ईमान वालों ने जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ इख़्तियार करते हैं।'** (सूरह मोमिनून 23 : 1-2)

वो क़ियामुल्लैल करती थीं ख़शियत और रिक़्क़त के साथ और उसकी हक़ीक़त का इरफ़ान (जानकारी) रखती थीं कि आख़िरत के लिये सबसे बेहतर ज़ादेराह यही नमाज़ है और नमाज़ से बेहतर दावत इलल्लाह के लिये कोई दूसरा वसीला नहीं है जो अपने अदा करने के अंदर मसाइब व मुश्किलात और दुश्वारियों से मुक़ाबला करने के लिये क़ुव्वत व अज़मियत पैदा करती है। क़ियामुल्लैल (तहज्जुद) अल्लाह सुब्हानहू व तआला से क़ुर्ब का सबसे बेहतरीन ज़रिया है जैसाकि अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने दाइ-ए-इस्लाम (ﷺ) को मुख़ातब करके ख़ुद इरशाद फ़रमाया,

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾

'और रात को तहज्जुद पढ़ो, ये तुम्हारे लिये नफ़ल है, बईद नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हें मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ कर दे।' (सूरह बनी इस्राईल 17 : 79)

अल्लाह जल्ले शानुहू क़ियामुल्लैल करने वालों की तारीफ़ फ़रमाते हैं कि वो रातों को कम ही सोते हैं। (सूरह ज़ारियात 51 : 17)

हज़रत अनस (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मस्जिद में दाख़िल हुए तो आप (ﷺ) ने दो खम्बों के बीच रस्सी बंधी देखी। दरयाफ़्त फ़रमाया कि ये रस्सी किस लिये है? लोगों ने अर्ज़ किया, ये ज़ैनब की है, जब वो (नमाज़ पढ़ते हुए) थक जाती हैं तो इसका सहारा लेती हैं। आप (ﷺ) ने फ़रमाया, **'इसको खोल दो, तुममें से कोई उसी वक़्त तक क़ियाम करे जब तक वो निशात महसूस करे, जब वो थक जाये तो बैठ जाये।'** (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तहज्जुद, बाब

Scanned by CamScanner

हदीस़ : 1150, सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब उमिरा मन नअ़स फ़ी सलातिही : 784, सुनन अबी दाऊद : 1312, सुनन नसाई : 1643, सुनन इब्ने माजा : 1371)

मोमिनात, अल्लाह तआ़ला की ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिये अपने नफ़्स पर क़ियामुल्लैल के लिये जबर करती थीं। लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनको हुक्म दिया कि वो अपनी कुव्वते बर्दाश्त से ज़्यादा ख़ुद पर बोझ न डालें। क्योंकि बेहतरीन इबादत वो है जो मुसलसल हो ख़्वाह थोड़ी ही हो। हम जानते हैं कि हमारे ज़माने की बेगमात दिन-रात दुनिया के कामों में मशग़ूल रहती हैं लेकिन उनको इस बात की तौफ़ीक़ नसीब नहीं होती कि शैतान को शिकस्त देने के लिये रात के दरम्यानी हिस्से में दो रकअ़त नमाज़ अदा कर लें। तमाम कामों में म्याना रवी बेहतर है और बक़ौले रसूलुल्लाह (ﷺ), '**वो लोग हलाक हुए जिन्होंने इन्तिहा पसन्दी इख़्तियार की।**' आप (ﷺ) ने ये बात तीन बार इरशाद फ़रमाई। (सहीह मुस्लिम, किताबुल इल्म, बाब हलकल मुतनत्तऊन : 2670, सुनन अबी दाऊद : 4608, मुस्नद अहमद : 1/386)

'अल्लाह तबारक व तआ़ला पर ऐतमाद करो अगर तुम सच्ची हो और आने वाले कल का इस्तिक़बाल फ़रहत व इम्बिसात के साथ करो अगर तुम तौबा करने वाली हो।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'सब्र का फल मीठा होता है।'

एक कामयाब औरत की नसीहतें

हाजत रवा है सब का, तू सबसे बेनियाज़
ऐ रब्बे कायनात तेरी हम्द क्या करूँ

दौरे हाज़िर की एक माँ ने अपनी दुख़्तरे नेक अख़्तर को नीचे दी गई नसीहतें की हैं, तबस्सुम और गिरया की आमेज़िश के साथ फ़रमाती हैं :

मेरी बेटी. . . . . ! अब तुम नई ज़िन्दगी की देहलीज पर खड़ी हो जहाँ माँ-बाप के लिये कोई जगह नहीं है और न भाई-बहनों ही के लिये वहाँ कोई मक़ाम है। इस नई ज़िन्दगी में तुम अपने शौहर की शरीके हयात हो जो ये गवारा नहीं करेगा कि तुम्हारे दिल में उसकी जो मुहब्बत है उसमें कोई और शरीक हो, ख़्वाह वो तुम्हारे ख़ूनी रिश्तेदार ही क्यों न हों।

तुम एक अच्छी बीवी और मेहरबान माँ की हैसियत से ज़िन्दगी का आग़ाज़ करो। तुम अपने शरीके हयात को एहसास दिलाओ कि तुम ही उसके लिये सब कुछ हो। हमेशा याद रखो कि एक मर्द, कोई भी मर्द, एक सिन रसीदा बच्चा होता है जिसको प्यार भरी बातें ख़ुश कर देती हैं। उसको ये एहसास मत दिलाना कि उसने तुम से शादी करके तुम को अपने अहले ख़ानदान से दूर कर दिया है इसलिये कि वो भी इसी क़िस्म की बातें सोच सकता है। क्योंकि उसने भी तुम्हारी वजह से अपने आबाई घर और अहले ख़ानदान से दूरी इख़्तियार की है। लेकिन तुममें और उसमें एक ही फ़र्क़ है कि तुम औरत हो और वो मर्द है। एक औरत उस घर और ख़ानदान को जिसमें वो पैदा हुई है और जिसमें उसकी नशोनुमा और तालीम व तर्बियत हुई है, लम्बी मुद्दत तक याद रखती है जिससे उसने अपनी मर्ज़ी से किनाराकशी हासिल कर ली है। बिला शुब्हा उसने एक नई ज़िन्दगी का आग़ाज़ किया है और एक मर्द के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने का फ़ैसला कर लिया है जो उसका शौहर और उसके होने वाले बच्चों का बाप है। अब यही उसकी नई दुनिया है।

मेरी बेटी . . . . . ! अब वही तुम्हारा हाल (Present) भी है और मुस्तक़बिल (Future) भी और अब यही तुम्हारा घर और ख़ानदान है जिसकी तामीर तुम और तुम्हारे शौहर ने मिल कर की है।

मेरी प्यारी! मैं तुमसे ये मुतालबा नहीं करती कि तुम अपने माँ-बाप और भाई बहनों को भूल जाओ क्योंकि वो भी कभी तुम को फ़रामोश (भूला) नहीं कर सकते। मेरी बेटी! एक माँ अपने जिगर गोशे को कैसे फ़रामोश कर सकती है? लेकिन मैं तुमसे सिर्फ़ इतना चाहती हूँ कि तुम अपने शौहर से मुहब्बत करो और अपनी ज़िन्दगी को उसकी रिफ़ाक़त में ख़ुशगवार और कामयाब बनाओ।

'हज़रते आसिया (रज़ि.) से सब्र, ख़दीजा (रज़ि.) से वफ़ा, आइशा (रज़ि.) से सिद्क़ और फ़ातिमा (रज़ि.) से साबित क़दमी का दर्स लो।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'जिन्न व इन्स में से किसी ने इससे पहले उसको छुआ तक न होगा।'

जिसको अल्लाह से मुहब्बत नहीं उसको उसकी मख़्लूक़ से उन्स क्योंकर होगा?

है यहाँ हर चीज़ देखो बेस़बात व बेक़रार
ग़ैब की झोली में क्या है कीजिये बस इन्तिज़ार

मोमिनीन के लिये अल्लाह तबारक व तआला की ज़ात ही मुहब्बत और मसर्रत का सरचश्मा और मर्कज़ है। जो अल्लाह तआला की इबादत करते हैं, जो उससे मुहब्बत करते हैं दरहक़ीक़त वही ज़िन्दगी से मुहब्बत करते हैं। वही अपने वजूद से ख़ुश होते हैं और अपनी ज़िन्दगी से लुत्फ़ अन्दोज़ होते हैं। उनकी रूह मुनव्वर होती है और उनका क़ल्ब मुतमइन होता है। उनको शरहे सद्र की दौलत हासिल होती है और उन ही के दिल पर अल्लाह की मुहब्बत का नक़्श स़बत होता है और उनकी रूह अल्लाह तबारक व तआला की सिफ़ात से सरशार होती है। उनकी नज़रों में अस्माए हुसना (अल्लाह के अच्छे नामों) का नूर होता है। वो उसके असमा का विर्द और उसकी सिफ़ात पर ग़ौर व फ़िक्र करते हैं। उनके क़ल्ब में इसका इस्तिहज़ार होता है। अर्रहमान, अर्रहीम, अल्हमीद, अल्हलीम, अल्बर्र, अल्लतीफ़, अल्मुहसिन, अल्वदूद, अल्अज़ीम ....। अल्बारी उनकी मुहब्बत में कस़रत पैदा करता है और अल्अज़ीम के लिये चाहत और अल्अलीम से क़ुरबत।

क़ुर्बे इलाही का शऊर बन्दे में अल्लाह की मुहब्बत के जज़्बे को फ़रोज़ाँ करता है और उसकी इनायत, तवज्जह, मेहरबानी और फ़रहत व सुरूर के एहसास को ज़िन्दा रखता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है,

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِىْ عَنِّىْ فَاِنِّىْ قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِىْ

'और ऐ नबी! मेरे बन्दे अगर तुमसे मेरे बारे में पूछें तो उन्हें बता दो कि मैं उनसे क़रीब ही हूँ। पुकारने वाला जब मुझे पुकारता है, मैं उसकी पुकार सुनता और जवाब देता हूँ।'

(सूरह बक़रा 2 : 186)

लेकिन हुब्बे इलाही यूँ ही पैदा नहीं हो जाती और ये बग़ैर मशक़्क़त उठाये हासिल नहीं हो जाती। ये इताअ़त व बन्दगी का स़मरह और अपने रब से मुख़्लिसाना मुहब्बत का नतीजा है। जिस किसी ने अल्लाह तआला की इताअ़त की और उसके अवामिर को माना और नवाही से दामन को बचाया उसकी मुहब्बत में सच्चा और खरा स़ाबित हुआ उसने हुब्बे इलाही की हलावत, क़ुर्ब की लज़्ज़त, मसर्रत और शीरीनी पा ली।

'असल ख़ूबसूरती अख़्लाक़ की ख़ूबसूरती है, हुस्ने लाज़वाल हुस्ने मुआशिरत है और हक़ीक़ी जलवा आराई अक़्ल की जलवा आराई है।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'मैं वसियत करता हूँ कि औरतों के साथ हमेशा भलाई करो।'

(सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाब अल्वोसातु बिन्निसा : 5186, सहीह मुस्लिम, किताबुर्रज़ाअ, बाब अल्वसिय्यतु बिन्निसा : 60/1468, सुननुल कुबरा लिन्नसाई : 9095)

ज़ातुन्नताक़ैन दो-दो ज़िन्दगियाँ गुज़ारती थीं

जमाले रूह जमाले हयात है हमदम
वजूद वरना ख़्याले ममात है पैहम

हज़रत असमा बिन्ते अबू बकर (रज़ि.) ने जो ज़ातुन्नताक़ैन के नाम से मारूफ़ हैं, सब्र की एक ज़िन्दा मिसाल क़ायम की है। इन्तिहाई सख़्त परेशानी और महरूमी की हालत में उन्होंने शौहर की इताअत और उसकी रज़ाजूई के लिये हद दर्जा क़ुर्बानियाँ दीं। हदीसे नबवी में उनका ये क़ौल बयान किया गया है,

'हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) ने जिस वक़्त मुझसे शादी की उस वक़्त उनके पास उनके घोड़े के सिवा कुछ भी न था, जिसको मैं चारा देती और देखभाल करती थी। खजूर की गुठलियाँ तोड़ती और पानी पिलाती, आटा गूंधती। एक दिन मैं ज़ुबैर (रज़ि.) के खेत से बीज ढोकर ला रही थी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) और आपके साथ जो चन्द सहाबा थे उन्होंने मुझे देखा। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे पुकारा और अख़ अख़ कहकर ऊँटनी को रोका ताकि मुझे अपने पीछे सवार कर लें। मुझे बड़ी शर्म आई और मैंने कहा कि ज़ुबैर बड़े ग़ैरतमन्द आदमी हैं। आप (ﷺ) गुज़र गये। जब मैं घर पहुँची तो हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) को ये बात बताई। ज़ुबैर (रज़ि.) ने कहा, 'अल्लाह की क़सम! तुम्हारा सर पर बीज ढोकर लाना मेरे लिये इससे ज़्यादा सख़्त है कि तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पीछे सवार हो जातीं।' वो कहती हैं कि उसके बाद उनके वालिद हज़रत अबू बकर (रज़ि.) ने एक ख़ादिम भेज दिया जो घोड़े की देखभाल का काम करता था और ये ऐसा ही था गोया मुझे गुलामी से रिहाई मिल गई हो।' (सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, बाबुल ग़ैरत : 5224, सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलाम, बाब जवाज़ु इरदाफ़िल मर्अतिल अज्नबिया : 2182, सुननुल कुबरा लिन्नसाई : 9125)

इस सब्र आज़मा मरहले के बाद अल्लाह तआला ने उन पर और उनके शौहर पर नेमतों की बारिश कर दी लेकिन मआशी ख़ुशहाली के बाद भी वो ऐतदाल पर क़ायम रहीं। वो निहायत सख़ी और फ़य्याज़ थीं और कल के लिये कोई चीज़ ज़ख़ीरा नहीं करती थीं। जब वो बीमार हुईं तो उस वक़्त तक उन्होंने इन्तिज़ार किया कि उनकी हालत बेहतर हो फिर उसके बाद सारे गुलामों को आज़ाद कर दिया और अपनी बेटियों और अहले ख़ानदान से कहा, 'अल्लाह की राह में ख़र्च करो और सदक़ा करो और ज़रूरत से ज़्यादा माल के आने का इन्तिज़ार न करो।'

'मोमिनों के लिये हयात ख़ूबसूरत है और हयात बादे ममात भी मुत्तक़ियों के लिये बड़ी प्यारी है। यही लोग नेकबख़्त और ख़ुशनसीब हैं।'

*****

Scanned by CamScanner

दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब औरत

(10)

नादिर जवाहरात

वो क़ौम नहीं लायक़े हंगाम-ए-फ़रदा
जिस क़ौम की तक़दीर में इम्रोज़ नहीं है

इक़ब

Scanned by CamScanner

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٧﴾

'और आप उनकी चालबाज़ियों पर दिल तंग न हों।'

(सूरह नहल 16 : 127)

प्यारों में सबसे ज़्यादा प्यारा कौन है?

नफ़्स को मग़लूब रख, चाहत पे उसकी लात मार
वरना आख़िर हो रहेगा एक दिन तुम पर सवार

क्या तुम उसे तमाम इंसानों से बढ़कर चाहती हो!

क्या तुमने अपने आपसे ये सवाल किया है कि तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) को किस क़द्र चाहती हो? तुम जानती हो कि मुहब्बत की अलामत क्या है? उन तमाम बातों को अन्जाम देना जिनका आप (ﷺ) ने हुक्म दिया और उन तमाम बातों से रुक जाना जिनसे आप (ﷺ) ने मना फ़रमाया है।

अपनी दिली कैफ़ियत का जायज़ा लो और उसको सबसे पहले अल्लाह की मुहब्बत की तरफ़ मोड़ो, फिर उस शख़्सियत की तरफ़ तवज्जह करो जिसको अल्लाह तआला ने हमें गुमराही से बचाने के लिये भेजा और इस हदीस़ को याद करो, अगर तुम जन्नत में अपना मकान महफ़ूज़ रखना चाहती हो :

'इन्सान उसी के साथ होता है जिससे वो मुहब्बत करता है।' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब अलामत हुब्बुल्लाहि अज़्ज़ व जल्ल : 6169, सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिलह, बाब अल्मरउ मअ मन अहब्ब : 2640, मुस्नद अहमद : 1/392, मुस्नद तयालिसी : 251)

लेकिन मुहब्बत की पहली अलामत यही है कि उस काम को अन्जाम दिया जाये जिसका हुक्म रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दिया है। तो उस शख़्स के बारे में क्या कहा जा सकता है जो मुहब्बत का दावा करता है और वो काम करता है जिसका हुक्म नहीं दिया गया और जो न तो सुन्नत की पैरवी करता है और न आप (ﷺ) का इत्तिबाअ़ करता है?

सीरते पाक का मुताल्आ करो, उसको ग़ौर से पढ़ो और देखो कि आप (ﷺ) का अख़्लाक़ किस क़द्र अज़ीम था और आप (ﷺ) की बातें कितनी पाकीज़ा थीं, आप (ﷺ) का लहजा कितना प्यारा हुआ करता था और किस क़द्र आप (ﷺ) अल्लाह तआला से डरते थे और दुनिया से किस क़द्र बेनियाज़ थे। अपने अख़्लाक़ को बदलो ताकि तुम्हारा अख़्लाक़ रसूलुल्लाह (ﷺ) के अख़्लाक़ के मुशाबेह हो जाये।

'हज़रत नूह और हज़रत लूत (अलै.) की बीवियों ने ख़यानत की तो वो रुस्वा हुईं, हज़रत आसिया और हज़रत मरयम ने ईमान और अमानत का हक़ अदा किया तो वो मुअ़ज़्ज़ज़ और मुहतरम ठहरीं।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ ؕ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لِیْ

'मैं उनसे क़रीब ही हूँ पुकारने वाला जब मुझे पुकारता है, मैं उसकी पुकार सुनता और जवाब देता हूँ।'

(सूरह बक़रा 2 : 186)

ख़ुशी का तअल्लुक़ अमीरी और ग़रीबी से नहीं है

गर्दिशे दौराँ का जानाँ ख़ौफ़ मत मुझको दिला
ख़ौफ़ कुछ बेअसल व बेबुनियाद भी होते हैं याँ

बर्नार्ड शा कहता है,

'मैं नहीं कह सकता कि मैंने हक़ीक़ी गुरबत का मज़ा चखा है। इससे पहले कि मैं अपने क़लम की कमाई खाता मैं एक बड़ी पब्लिक लाइब्रेरी, ब्रिटिश म्यूजियम लाइब्रेरी तक रसाई रखता था और टाफ्फल जार स्कवायर के क़रीब आर्ट की एक बड़ी नुमाइश मेरे क़रीब हुआ करती थी। अगर मैं माल से हासिल करना चाहता तो भला क्या हासिल करता? सिगरेट पीता? तो मैं तम्बाकू नौशी नहीं करता। शराब पीता? मैं शराब नहीं पीता। जदीद तरीन फैशन के तीस जोड़े ख़रीदता? तो मुझे उससे कोई रग़बत नहीं कि मैं वो जोड़े पहनकर महलों में डिनर खाता फिरूँ। घोड़े ख़रीदता? तो ये ख़तरात को मोल लेना होता। कारें ख़रीदता? तो उससे मुझे बड़ी उल्झन होती है। इस वक़्त मेरे पास इतना माल है कि मैं उससे जो चाहूँ ख़रीदूँ। लेकिन मैं इस वक़्त वही चीज़ें ख़रीद सकता हूँ जो उस वक़्त भी मुझे हासिल थीं जब मैं ग़रीब था। मेरी ख़ुशी उन चीज़ों में छिपी है जिन्हें मैं उस वक़्त भी इस्तेमाल करता था जब मैं ग़रीब था। एक किताब जिसे मैं पढ़ सकूँ, एक मुसव्विरी का नमूना जिस पर ग़ौर व ख़ोज़ कर सकूँ और एक फ़िक्र व ख़्याल जिस पर मैं लिख सकूँ। दूसरी तरफ़ मेरे पास एक तसव्वुर व ख़्याल है और मुझे याद नहीं कि इससे ज़्यादा किसी और चीज़ की मुझे हाजत पेश आती हो कि मैं अपनी आँखों को बंद करके तसव्वुरात की दुनिया में खो जाऊँ और इस तरह मैं चाहता हूँ कि बैठें रहें तसव्वुरे जानाँ किए हुए। मैं ख़्यालात की दुनिया में वो सब कुछ करूँ जो मैं चाहता हूँ। इसलिये मुझे इस सामाने तअय्युश (ऐशो-इशरत) की क्या ज़रूरत है जो बोण्ड स्टीट पर मिलता है?'

'अपने घर को सकीनत से जन्नत का गहवारा बनाओ, शोर-शराबे का मैदान नहीं क्योंकि पुरसुकून माहौल एक बड़ी नेमत है।'

*****

Scanned by CamScanner

رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ

'ऐ मेरे रब! अपने पास जन्नत में मेरे लिये एक घर बनाइये।'

(सूरत तहरीम 66 : 11)

क्या अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त दूसरों के मुक़ाबले में सबसे बढ़कर हमारे शुक्रिये का हक़दार नहीं है?

हालात बदलते रहते हैं — इम्कान बदलते रहते हैं
इक हाल पे कब रहता है जहाँ — ग़म ख़ुशियों में ढलते रहते हैं

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का शुक्र अदा करना सबसे आसान और बेहतर वस्फ़ है जिससे सच्ची ख़ुशी और आसाब को सुकून और राहत मिलती है क्योंकि जब तुम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का शुक्र अदा करती हो तो उन तमाम नेमतों को ज़हन नशीं करती हो जो अल्लाह तआला ने तुम्हें इनायत की हैं और उन बेहिसाब नेमतों का ऐतराफ़ करती हो जिस क़द्र उसने तुम्हें अता फ़रमाई हैं। सलफ़े सालेहीन में से एक का क़ौल है :

'जब तुम अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की नेमतों का ऐतराफ़ करने का इरादा करो तो अपनी आँखों को बंद कर लो।'

तुम अल्लाह तआला की नेमतों को अपने ऊपर देखोगी जो उसने कान, आँख, अक़्ल, दीन, औलाद, रिज़्क़ और हुस्न की दौलत की शक्ल में दे रखी हैं। कुछ ख़्वातीन इन नेमतों को हक़ीर समझती हैं जो अल्लाह तआला ने उनको दे रखी हैं लेकिन वो अगर अपने अलावा दूसरी नादार, मिस्कीन, भूखी, मरीज़, बेघर और बेसहारा औरतों को देखें तो बेइख़्तियार अल्लाह तआला की नेमतों का शुक्र अदा करने लगेंगी जो उसने उन्हें दे रखी हैं अगरचे वो सहरा में एक मामूली ख़ैमे में रहती हों या मिट्टी के बने घर या झोंपड़ी में या ब्याबान में एक दरख़्त के नीचे। लिहाज़ा तुम अल्लाह का शुक्र अदा करो और उनसे मुक़ाबला करो जो जिस्मानी या ज़हनी लिहाज़ से किसी बीमारी में मुब्तला हैं, या जो सुन नहीं सकतीं, या जो औलाद की नेमत से महरूम हैं और ऐसी औरतें दुनिया में एक दो नहीं बेशुमार हैं।'

'अपनी अच्छी बातों से उनको तसल्ली दो जो औलाद से महरूम हैं और नादारों की आँखों से सदक़ात के ज़रिये से आँसू पोंछ डालो।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'किसी चीज़ का अ़ला हालिही (उसकी हालत पर) रहना महाल (असम्भव) है।'

एक मसरूर और शादमाँ औरत अपने इर्द-गिर्द ख़ुशियाँ बिखेर देती है

ज़िन्दगी की शान तुझ से, मौत की अ़ज़मत भी तू
मोअ़जज़ा ही मोअ़जज़ा हर जा पे तेरी ज़ात है

ओरीज़न स्वेत कहता है, 'नेपोलियन बड़ा ख़ुशनसीब था कि उसने आ़ला क़यादत की ज़िम्मेदारी और फ़ुतूहात का सामना करने से पहले मलिका जोज़फ़ीन से शादी कर ली थी जिसका तर्ज़े कलाम बड़ा ही प्यारा था और जिसकी शख़्सियत निहायत पुर कशिश थी। उसकी शख़्सियत की दिल कशी दस मुख़्लिस मर्दों की वफ़ादारियों से ज़्यादा थी। वो अपने इर्द-गिर्द ख़ुशियाँ बिखेरती रहती थी और वो कभी ख़ादिमों से भी हाकिमाना लहजा में हमकलाम नहीं होती थी। उसने ख़ुद ही सराहत के साथ इसकी वज़ाहत अपनी एक सहेली से की है :

कभी कोई मौक़ा ऐसा नहीं आया कि मैंने किसी के रू-ब-रू ये कहा हो कि मैं ऐसा चाहती हूँ, सिवाय इसके कि मैं कहा करती हूँ, 'मैं चाहती हूँ कि मेरे इर्द-गिर्द (आस-पास) जो भी हैं वो सभी ख़ुश रहें।' अंग्रेजी के एक शाइर ने अपने इस शेर में इसी की तरफ़ इशारा किया है।

जिस राह से गुज़री वो
उस सुबह दरख़्शाँ की
ख़ुशियों की तनाबें हैं
उस शाम तलक फैलीं

ऐ दोस्त! ये एक हक़ीक़त है कि हमारा लुत्फ़ व करम हमारे अंदर ख़ुशियाँ पैदा करता है और हमारे इर्द-गिर्द भी ख़ुशियाँ बिखेरता है यहाँ तक कि मुन्जमिद चीज़ों में भी। लुत्फ़ व करम का मअ़न्वी जमाल अपनी कोई हद नहीं रखता। मर्द के अंदर ये जमाल है तो औ़रतों के हुस्न व जमाल में कई गुना इज़ाफ़ा का सबब है।

'क्या वो ख़ुश हैं जो अपने हुस्न व जमाल की नुमाइश इंसाननुमा कुत्तों के सामने करती हैं और अपनी दिलकशी इंसाननुमा भेड़ियों को दिखाती हैं?'

****

Scanned by CamScanner

'ख़ुशहाली के ज़माने में अल्लाह का शुक्र अदा करो, बदहाली के ज़माने में उसकी मदद होगी।'

मुतमइन रहो, जो कुछ होता है अल्लाह तआला की क़ज़ा व क़दर के मुताबिक़ होता है

सारी ख़ुशियाँ बे दवाम व बे सबात
ग़म से मुम्किन है कहाँ ग़ायब की याफ़्त

अपनी हकीमाना बातों में एक बात डेल कारनेगी ने ऐसी लिखी है जिसे हम ईमान बिल्क़ज़ा वल्क़दर से क़रीबतर कह सकते हैं कि एक आदमी मुसीबतों का शिकार होता है लेकिन उन पर वो किसी रद्दे अमल का इज़हार नहीं कर सकता और उनके सामने उसी तरह बेदस्त व पा होता है जिस तरह चौपाये और दरख़्तों की क़तारें उसकी मअज़्रत क़ाबिले क़ुबूल है क्योंकि उसके पास उसका कोई इलाज नहीं है। (मुस्नद अहमद : 1/307, मुस्नद अब्द बिन हुमैद : 36, अल्क़दर लिल्फ़रयाबी : 155, शैख़ अल्बानी रह. ने इसे सहीह कहा है। ज़िलालुल जन्नत : 318) इसके बरख़िलाफ़ हम मुसलमानों के पास इसका मदावा है। ज़रा तवज्जह से सुनिये कि वो क्या कहता है :

'एक बार मैंने उस नागुज़ीर सूरते हाल को क़ुबूल करने से इंकार कर दिया जिसका मैं सामना कर रहा था। तो मैं बड़ा ही अहमक़ था। मैंने ऐतराज़ किया, ग़ज़बनाक होकर तवाज़ुन खो दिया और सोच-सोच कर अपनी पुरसुकून रातों को जहन्नम बना डाला। एक साल तक नफ़्सियाती उल्झनों का शिकार रहने और अज़ियतें उठाने के बाद मैंने उसे नागुज़ीर की हैसियत से तस्लीम कर लिया जबकि मुझे इब्तिदा (शुरू) ही में ख़ूब अन्दाज़ा हो गया था कि अब सूरते हाल में तब्दीली का कोई इम्कान नहीं है। मेरे लिये वही बात मुनासिब थी जिसको मशहूर शाइर वाल्ट वटमीन ने बयान किया है, तूफ़ान, शबे तारीक, भूख और बदहाली, लानतें व मलामतें, मुसीबतें और परेशानियाँ इन सब बातों का सामना करना जैसे कि चौपाये, भैंस और दरख़्त करते हैं बहुत ही मुनासिब है और बहुत ही आसान।

मैंने बारह साल मवेशियों के साथ गुज़ारे हैं लेकिन मैंने कभी किसी गाय को चरागाह में आतिशज़दगी की वजह से परेशान होते हुए नहीं देखा और न बारिश की क़िल्लत की वजह से ख़ुश्कसाली से ख़ौफ़ज़दा होते हुए पाया है। न इस बात पर ग़मज़दा होते हुए देखा कि उसका दोस्त साण्ड किसी दूसरी बछिया की तरफ़ माइल नज़र आ रहा है। जानवर भी तारीकी, तूफ़ान, भूख-प्यास, मुसीबतों और आफ़तों का सामना करते हैं लेकिन उन्हें आरिज़ाए क़ल्ब (दिल की बीमारियाँ), आसाब की बीमारियाँ और मअदे का अल्सर बहुत कम होता है।'

'अपनी कामयाबियों और फ़रहतों को याद करो और अपनी मुसीबतों और नाकामियों को भूल जाओ।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٨١﴾

'अल्लाह भरोसे के लिये काफ़ी है।'

(सूरह निसा 3 : 81)

हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि.) फ़रमाती हैं

है पाबन्दे मीआद सब ख़ैर व शर
ख़ुशी में न इतरा ग़मों से न डर

हज़रत नुसैबा बिन्ते कअब (उम्मे अम्मारा रज़ि.) बयान फ़रमाती हैं, 'मैं मअरक-ए-उहुद के दिन सवेरे निकली कि देखूँ कि लोग क्या कर रहे हैं?' मेरे साथ मश्कीज़ा था जो पानी से भरा हुआ था। मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़रीब पहुँच गई। आप (ﷺ) के साथ बहुत से सहाबा मौजूद थे और मुसलमान फ़तहयाब हो रहे थे लेकिन जब मुसलमानों को शिकस्त होने लगी तो मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़रीब पहुँची और क़िताल (लड़ाई) करने लगी। मैं तलवार भी चलाती थी और कमान से तीर भी बरसाती थी यहाँ तक कि मैं ख़ुद ज़ख़्मी हो गई और जब लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के कुर्ब व जवार से मुन्तशिर (बिखर) हो गये और मेरा सामना इब्ने क़मिया से हुआ जो ये कह रहा था, 'मुझे बताओ कि मुहम्मद कहाँ हैं? आज मैंने उनको ज़िन्दा पा लिया तो हर्गिज़ ज़िन्दा न छोड़ूँगा।' मैंने और हज़रत मुस्अब बिन उमैर (रज़ि.) ने मुज़ाहिमत की और उसका मुक़ाबला किया। उसने मेरे कन्धे पर वार किया और मैंने भी उस पर ख़ूब वार किया लेकिन दुश्मने इलाह दो-दो ज़िरहें पहने हुए था।'

(सीरत इब्ने हिशाम 2 : 81-82)

ये हज़रत उम्मे अम्मारा (रज़ि.) हैं जिनके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) का इरशाद है, **'मैंने यौमे उहुद को जब भी दायें और बायें देखा उम्मे अम्मारा को अपने क़रीब क़िताल करते हुए पाया।'**

(मग़ाज़ी लिल्वाक़िदी 1 : 271)

'शौर और हंगामे से बचो क्योंकि ये थकान और इज़्मेहलाल का सबब होता है और गाली-गलोच से दूर रहो क्योंकि ये अज़ाब का बाइस है।'

*****

Scanned by CamScanner

90 फीसद हुस्ने अख़लाक़ ख़ताओं से चश्मपोशी है।'

लोगों पर एहसान, यास व हिरमाँ (महरूमी) के असरात को दूर कर देता है

गर तसर्रुफ़ में तेरे दुनिया हो और ख़ल्क़े ख़ुदा
फ़ायदा क्या सबको है इक रोज़ फिर जब छोड़ना

रसूलुल्लाह (ﷺ) के बेशुमार फ़रमूदात औरतों की सख़ावत और दरिया दिली के सिलसिले में मौजूद हैं जिनमें आप (ﷺ) ने उनको इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह और सदक़े पर उभारा है या जिनमें आप (ﷺ) ने उनकी नेक नफ़्सी और फ़य्याज़ी की तारीफ़ फ़रमाई है या उनकी बेलौस़ी, सहेलियों और चाहने वालियों की ज़ियाफ़त और मेज़बानी के तरीक़े को सराहा है।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़रमाती हैं कि लोगों ने एक बकरी ज़िब्ह की, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पूछा, 'इसमें से क्या बच रहा है?' हज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने फ़रमाया, 'सिवाय शाने के कुछ भी नहीं बचा।' नबी (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'शाने के सिवा सब कुछ महफ़ूज़ है।'** (सुनन तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामा : 2470, मुस्नद अहमद : 6/50, मुस्नद इस्हाक़ : 1595, मुस्तदरक हाकिम : 4/151, शैख़ अल्बानी रह. ने इसे सहीह कहा है।)

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने अहलो-अयाल के सामने इस हक़ीक़त को वाज़ेह फ़रमा दिया कि जो कुछ सदक़ा कर दिया गया वो अल्लाह तबारक व तआला के यहाँ महफ़ूज़ है और क़यामत के दिन उसका अज्र मिलेगा और जो दुनिया में बच रहा और जिसे खा-पीकर ख़त्म कर दिया जायेगा उसके अज्र से आख़िरत में मुस्तफ़ीद नहीं हो सकेंगे। ये वो हकीमाना नुक्ता है जिसमें सदक़े पर उभारा गया है और अल्लाह सुब्हानहू व तआला की ख़ुश्नूदी तलब करने की तरफ़ रग़बत दिलाई गई है।

ये हैं हज़रत असमा बिन्ते अबू बकर (रज़ि.) उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) की बहन जिनको अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने नसीहत फ़रमाई कि वो सदक़ा करें ताकि उन पर अल्लाह सुब्हानहू वतआला का फ़ज़्ल और ज़्यादा हो। वो फ़रमाती हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे इरशाद फ़रमाया, **'रोको मत, कहीं ऐसा न हो कि तुमसे रोक लिया जाये।'** (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब अत्तहरीज़ु अलस्सदक़ा : 1433, सुनन तिर्मिज़ी : 1960, सुननुल कुबरा लिन्नसाई : 2343, मुस्नद हुमैदी : 325, मुस्नद अहमद : 6/139)

एक और दूसरी रिवायत में है, **'ख़र्च करो, इंकार न करो, दरिया दिली से ख़र्च करो, गिन-गिनकर न दो कि कहीं तुम्हें भी अल्लाह गिनाकर न दे, रोके न रहो कि कहीं तुमसे भी न रोक लिया जाये।'** (सहीह बुख़ारी, किताबुल हिबा, बाब हिबतुल मर्अति लिग़ैरि ज़ौजिहा : 2591, सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात, बाब अल्हस्सु अलल इन्फ़ाक़ : 1029, मुस्नद अहमद : 6/345, मुस्नद इस्हाक़ : 2237)

'जब तक रात है उसी हद तक तारीकी, दर्द व अलम का सिलसिला ख़त्म हो जायेगा, तंगी दूर होगी और बदहाली ख़त्म हो जायेगी।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'नेमत एक दुल्हन है जिसका मुहर शुक्र है।'

अपने नुक़सान को नफ़ा में बदल दो

मुर्ग़े जाँ है माइले परवाज़ ऐ रब्बे जलील!
दे उसे तू साय-ए-रहमत में अपने आशियाँ

एक नासेह (नसीहत करने वाले) का क़ौल है, 'जब तुम गढ़े में गिर जाओ तो मायूस होकर हिम्मत न हार बैठो, अन्क़रीब तुम उससे बाहर आ जाओगी और अपने अंदर ज़्यादा तवानाई महसूस करोगी, क्योंकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त सब्र करने वालों के साथ है।'

हुज़्न व मलाल को अपने ऊपर तारी न करो। अगर तुम्हारे सीने को ऐसा शख़्स तीर से छलनी करे जिसे तुम बेहद अज़ीज़ रखती हो तो मुम्किन है कोई दूसरा उस तीर को बाहर निकाले और ज़ख़्मों पर मरहम रखे और तुम्हारे लिये मुस्कान भरी नई ज़िन्दगी लौटाये।

बर्बाद ज़िन्दगी के खण्डर के पास बहुत ज़्यादा देर तक मत खड़ी रहो, जिसमें चमगादड़ों ने डेरा जमा लिया है और जिसमें बदरूहों ने बसेरा कर रखा है। चहचहाते परिन्दों को तलाश करो जो उफ़ुक़ के ऊपर तुलूअे सहर और रोशनी की आमद का मुज़्दा सुनाने के लिये नग़मा सरा हैं।

उन औराक़े पारीना की तरफ़ मत देखो जिनकी रंगत बदल चुकी है और जिनकी तहरीरें मान्द पड़ गई हैं। जिनकी सतरें दर्द व अलम और तन्हाई के दरम्यान मुअल्लक़ हैं। तुम महसूस करोगी कि ये सतरें सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत न थीं और ये तहरीरें जो तुमने सफ़्हे क़िरतास पर लिखी हैं हर्फ़ (शब्द) का दर्जा नहीं रखतीं। तुमको उसके दरम्यान जो उन तहरीरों को आँखों से लगायेगा और उसके दरम्यान जो उन औराक़ को तेज़ हवाओं के हवाले कर देगा, फ़र्क़ मल्हूज़ रखना पड़ेगा। इसलिये कि ये सिर्फ़ ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ नहीं हैं बल्कि ये तो दिल के नाज़ुक एहसासात हैं जो सफ़े क़िरतास पर ज़िन्दा व जावेद हैं। उनका हर्फ़-हर्फ़ और लफ़्ज़-लफ़्ज़ दिल की धड़कनों का तर्जुमान है। उसके लिये जो उनको एक सुनहरे ख़्वाब की तरह महसूस करे और जो दिल में सुलगते जज़्बात की तपिश का अन्दाज़ा कर सके। बुलबुल की तरह या उस परिन्दे की तरह मत हो जाना जो ज़ख़्मी होता है तो उसका नग़मा और भी ख़ूबसूरत हो जाता है। सुनो! दुनिया में कोई चीज़ ऐसी नहीं कि जिसके लिये तुम एक क़तर-ए-ख़ूने जिगर ज़ाएअ करो।

'आन्धी जगाने वाला ख़ुद ही तूफ़ान में घिर जाता है।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

كَاَنَّهُنَّ بَيۡضٌ مَّكۡنُوۡنٌ ۝٤٩

'ऐसी नाज़ुक (हूरें) जैसे अण्डे के छिलके के नीचे छिपी हुई झिल्ली।'

(सूरह साफ़्फ़ात 37 : 49)

इख़्लास व वफ़ा अनमोल मोती हैं, अहले वफ़ा अब कहाँ हैं?

आदमी रहता नहीं जब जुज़ हदीसे ख़ैर व शर
बादे रहलत, सई कर, बन जाये तू ज़िक्रे जमील

आरिफ़ीन बिल्लाह और अल्लाह के फ़ैसले के सामने सरे तस्लीम ख़म करने वालों और उसकी मशिय्यत की हिक्मत पर राज़ी बरज़ा रहने वालों में सबसे बड़े अल्लाह के नबी हज़रत अय्यूब (अलै.) हैं। वो इब्तिला और आज़माइश में डाले गये, जान, माल और औलाद हर मामले में तकलीफ़ में मुब्तला किये गये। दुनिया में कोई ऐसी चीज़ बाक़ी नहीं रही जो उनको इस हालते ज़ार में मर्ज़ और इब्तिला में मददगार साबित हो सके। सिवाय बीवी के जो अल्लाह और रसूल पर ईमान की वजह से वफ़ा शिआरी पर क़ायम थीं। वो एक ख़ादिमा की हैसियत से रोज़ी कमाती थीं और उनकी देखभाल और ख़िदमत करती रहीं। सुबह व शाम वो उनको कभी तन्हा नहीं छोड़ती थीं सिवाय उन वक़्तों में जिस वक़्त वो रोज़ी हासिल करने के लिये बाहर जातीं तो जल्द ही लौट आतीं। ये इब्तिला और आज़माइश एक तवील अरसे पर मुहीत रही। यहाँ तक कि वक़्ते मुक़र्रर आ पहुँचा। निहायत तज़र्रुअ के साथ अय्यूब (अलै.) ने रब्बुल आलमीन, इलाहल मुरसलीन और अरहमुर्राहिमीन को पुकारा, **'मुझे बीमारी लग गई है और तू अरहमुर्राहिमीन है।'** (सूरह अम्बिया 21 : 83)

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने आपकी दुआ क़ुबूल फ़रमा ली। दुआ मुस्तजाब (क़ुबूल) हुई और आपको हुक्म हुआ कि अपनी जगह पर खड़े हों और ज़मीन पर अपना पाँव मारें। तो आपने ऐसा ही किया। अल्लाह ने एक चश्मा जारी फ़रमा दिया और आपको हुक्म दिया गया, आप उससे गुस्ल करें। तो उससे आपके जिस्म में जो भी तकलीफ़ और बीमारियाँ थीं सब ख़त्म हो गईं। फिर हुक्म हुआ कि एक दूसरी जगह अपना पाँव मारें। फिर आपके लिये एक दूसरा चश्मा उबल पड़ा। आपको हुक्म दिया गया कि उस चश्मे का पानी पियें। तो फिर आपके अंदरून में जो ख़राबियाँ थीं वो जाती रहीं और आपके ज़ाहिर और बातिन दोनों में आराम व आफ़ियत की तकमील हो गई। ये सब कुछ उसका समरा था जिसे सब्र कहा जाता है। उसका नतीजा था जिसको अल्लाह से अज्र की तवक़्क़ो व यक़ीन कहते हैं और उस अमल का फ़ायदा था जिसको राज़ी बरज़ा से ताबीर करते हैं।

'इंसान अपनी बातों पर नदामत महसूस कर सकता है अपनी ख़ामोशी पर नहीं।'

Scanned by CamScanner

किरणें

'औरत मसर्रत और शादमानी का ज़रिया है।'

सन्जीदगी इख़्तियार करो, बुर्दबारी इख़्तियार करो

मुस्कुराती सुबह से महफ़ूज़ हो कह मरहबा
ज़िन्दगी की शाम से पहले ग़नीमत जान उसे

तुम्हें अपने तमाम मामलात में सन्जीदा होना चाहिये। ख़्वाह वो औलाद की तर्बियत हो, ख़्वाह मुफ़ीद और सूदमन्द नेक आमाल की मुसलसल अदायगी। अच्छी किताबों का मुताल्आ हो या ख़शियत के साथ कुरआन की तिलावत, ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ के साथ नमाज़ की अदायगी हो या पूरी तवज्जह के साथ ज़िक्रे इलाही, सदक़ा व ख़ैरात, घर की तर्तीब हो या लाइब्रेरी की तन्ज़ीम......। इन कामों को अन्जाम देती हुई तुम अपने आपको रंज व ग़म और परेशानियों से दूर पाओगी।

ज़रा कुछ ग़ैर मुस्लिम औरतों को देखो, मोमिनात से हटकर किस क़द्र वो अपनी ज़िन्दगी में अपने कुफ़्र और इन्हिराफ़ के बावजूद सन्जीदा नज़र आती हैं। उनमें से एक इस्राईल की साबिक़ वज़ीरे आज़म गोल्ड अमाइर है जिसने अपनी ख़ुद नविश्ता में फ़ौज की तन्ज़ीम और अरबों से जंग के सिलसिले में अपनी ख़िदमात की तफ़्सील से वज़ाहत की है। इस मामले में उसकी क़ौम में शायद कोई मर्द भी उसका मद्दे मुक़ाबिल न होगा अगरचे वो एक काफ़िर और दुश्मने इलाही थी।

'ख़ुशबख़्ती कोई जादू की छड़ी नहीं है, अगर ऐसा होता तो फिर उसकी कोई क़द्र व क़ीमत न होती।'

*****

आज भी हो जो बराहीम का ईमान पैदा
आग कर सकती है अन्दाज़े गुलिस्ताँ पैदा

इक़बाल

Scanned by CamScanner

दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब औरत

(11)

लुअ्लुअ् वमरजान

Scanned by CamScanner

किरणें

إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿١٢٨﴾

'अल्लाह उन लोगों के साथ है जो तक़वा से काम लेते हैं और एहसान पर अ़मल करते हैं।'

(सूरह नहल 16 : 128)

अपने नफ़्स का मुक़ाबला पामर्दी से करो

सूखी रोटी ही बहुत है पेट भरने के लिये
वस्वसा फिर बेश व कम का क्या ज़रूरत हम करें

ज़रा अपने आपसे ये सवालात करो और ग़ौर व फ़िक्र के बाद इनके जवाब दो :

क्या तुम जानती हो कि तुम एक ऐसे सफ़र पर रवाना हो चुकी हो जिसमें वापसी का कोई इम्कान नहीं है? क्या तुमने ख़ुद को इस सफ़र के लिये तैयार कर लिया है?

क्या तुमने इस दुनियाए फ़ानी से अपने लिये नेक आ़माल का ज़ादे राह ले लिया है जो क़ब्र में तुम्हारे लिये मददगार व ग़मगुसार हो?

तुम्हारी उ़म्र क्या है? और तुम अपनी मुतवक़्क़अ़ उ़म्र का कितना हिस्सा गुज़ार चुकी हो? क्या तुमको मालूम है कि हर इब्तिदा की इन्तिहा है और हर इन्तिहा या तो जन्नत है या जहन्नम है?

क्या तुमने कभी उस साअ़त (घड़ी) के बारे में सोचा है जो तुम्हारी ज़िन्दगी की आख़िरी साअ़त होगी शौहर, औलाद, सखियों-सहेलियों और अपने परायों से जुदाई की घड़ी होगी? ये मौत है, सकरात और नज़ा का आ़लम और उसकी करबनाकी और शिद्दत का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता...... ये मौत है मौत।

सब ठाठ पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बन्जारा

जसदे ख़ाकी से रूह परवाज़ करने के बाद तुम्हें ग़ुस्ल दिया जायेगा। कफ़न पहनाया जायेगा, तुम्हारा जनाज़ा जनाज़ागाह ले जाया जायेगा और नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जायेगी फिर लोग तुम्हें कन्धों पर उठाकर ले जायेंगे। ये तुम्हें कहाँ ले जायेंगे?

क़ब्र आख़िरत की पहली मंज़िल है। क़ब्र, जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा।

'अपनी नाकामियों से इबरत हासिल करो।'

मेरे सलीक़े से मेरी निभी मुहब्बत में
तमाम उम्र में नाकामियों से काम लिया

मीर

Scanned by CamScanner

وَهُوَ الَّذِیْ یُنَزِّلُ الْغَیْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا

'वही है जो लोगों के मायूस हो जाने के बाद मेंह (बारिश) बरसाता है।'

(सूरह शूरा 42 : 28)

ख़बरदार! होशियार!

मुश्किलों के सामने घुटने न टेक ऐ मर्दे हक़
ग़म न कर उसका अभी जो सामने आया नहीं

काफ़िर और फ़ाजिर औरतों और मर्दों की मुशाबिहत इख़्तियार करने से बचो क्योंकि हदीसे रसूल में आया है, **'अल्लाह तआला ने औरतों से मुशाबिहत इख़्तियार करने वाले मर्दों पर और मर्दों से मुशाबिहत इख़्तियार करने वाली औरतों पर लानत फ़रमाई है।'** (सहीह बुख़ारी, किताबुल्लिबास, बाब अल मुतशब्बिहून बिन्निसा : 5885, सुनन अबी दाऊद : 4097, सुनन तिर्मिज़ी : 2784, सुनन इब्ने माजा : 1904)

और हर उस बात से बचो जिस पर अल्लाह सुब्हानहू व तआला ग़ज़बनाक होते हैं और जिसके बारे में हदीस शरीफ़ में मुमानिअत आई है। जैसे मर्दों जैसा लिबास पहनना या अजनबी मर्दों के साथ घुला-मिला करना या ग़ैर महरम के साथ सफ़र करना। ये बात कि औरत हया व शर्म को बालाए ताक़ रख दे या अपनी चादर या बुर्क़ा उतार फेंके और अपने रब को फ़रामोश कर दे।

ये सब शर्मनाक हरकतें हैं जो दिल में मायूसी और तंगी पैदा करती हैं और दुनिया और आख़िरत में तारीकी का सबब बनती हैं। ये बातें ऐसी हैं जिनमें आम तौर पर ख़्वातीन मुब्तला हैं, इल्ला माशाअल्लाह! वो औरतें उन बुराइयों से महफ़ूज़ हैं जिन पर अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने रहम फ़रमाया है।

'ख़ूबसूरती के लिये ज़रूरी है कि तुम्हारे ख़्याल भी ख़ूबसूरत हों।'

*****

Scanned by CamScanner

رَبَّنَا اغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوۡبَنَا وَاِسۡرَافَنَا فِىۡۤ اَمۡرِنَا

'ऐ हमारे रब! हमारी ग़लतियों और कोताहियों से दरगुज़र फ़रमा, हमारे काम में तेरे हुदूद से जो कुछ तजावुज़ हो गया हो उसे माफ़ कर दे।'

(सूरह आले इमरान 3 : 147)

एहसान शनासी फ़र्ज़ है

बे महाबा नफ़्स की तक्ज़ीब कर
नफ़्स की तस्दीक़ है दिल का ज़ियाँ

ख़ेज़रान एक बान्दी थी जिसको ख़लीफ़ा अल्महदी ने ख़रीदा था। उसने उसको आज़ाद कर दिया फिर उससे शादी की। उसने उसकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ उसके दो बेटों को अपना वली अहद मुक़र्रर किया। लेकिन इन सबके बावजूद उस औरत का ये हाल था कि जब कभी शौहर से नाराज़ होती तो उसके रू-दर-रू कहती, 'मैं ने तुम्हारी तरफ़ से कभी कोई भलाई नहीं देखी।'

रमीकिया भी उसी तरह एक बान्दी थी जो बेची और ख़रीदी गई। उसको उन्दुलुस के बादशाह मुअ़तमिद बिन अ़ब्बाद ने ख़रीदा। उसने उसको आज़ाद कर दिया और अपनी मलिका बना लिया। जब उसने बान्दियों को मिट्टी से खेलती देखा तो वो अपने माज़ी को याद करके बान्दियों के साथ मिट्टी से खेलने लगी। बादशाह ने हुक्म दिया कि एक बड़ी मिक़्दार में ख़ुश्बूदार चीज़ तैयार की जाये जो मिट्टी की शक्ल की हो ताकि कमसिन मलिका इससे खेले। उसके बावजूद मुहतरमा का ये हाल था कि जब वो अपने शौहर से नाराज़ होती तो कहती, 'मैंने तुम्हारी तरफ़ से कभी कोई भलाई नहीं देखी।'

मुअ़तमिद मुस्कुराते हुए कहता, यहाँ तक कि मिट्टी के दिन भी नहीं? इस पर वो शर्म से पानी पानी हो जाती।

ये निस्वानी फ़ितरत है, इल्ला माशाअल्लाह! वो भूल जाती हैं कि उनकी क्या-क्या नाज़ बरदारियाँ हुई हैं। ख़ुसूसन उस वक़्त जब शौहर से कोई कोताही या भूल हो जाये। हदीसे नबवी (ﷺ) में आया है, **'ऐ औरतों की जमाअ़त! सदक़ा करो मैंने तुममें से अक्सर को जहन्नम में देखा है।'** औरतों ने पूछा, वो किस लिये ऐ अल्लाह के रसूल! आप (ﷺ) ने फ़रमाया, **'तुम लानत करने में जल्दबाज़ हो, तअ़न करने में पेश-पेश रहती हो और अपने मेहरबान साथी की नाशुक्री करती हो।'** (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात अ़लल अक़ारिब : 1462, सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब बयानु नुक़सानिल ईमान : 80, सहीह इब्ने हिब्बान : 5744)

Scanned by CamScanner

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, **'मैंने जहन्नम का मुशाहिदा किया तो उसमें औरतों की अक्सरियत थी। इसलिये कि वो अपने शौहर की नाशुक्री करती हैं और एहसान फ़रामोश होती हैं। उनका हाल ये है कि अगर ज़िन्दगी भर उनके साथ एहसान किया जाये और तुमसे कोई भूल हो जाये तो फ़ौरन कहेंगी, 'मैंने तुम्हारी तरफ़ से कभी कोई भलाई नहीं देखी।'** (सहीह बुख़री, किताबुल ईमान, बाब कुफ़रानुल अशीर : 29, सहीह मुस्लिम, किताबुल ईदैन, बाब सलातुल ईदैन : 884, सुनन नसाई : 1493, मुस्नद अहमद : 1/298)

तो जब मर्द औरत की तबीअत से वाक़िफ़ है तो न उस पर गुस्सा होता है और न तकलीफ़ महसूस करता है और न ही उसके आसाब पर उसका असर होता है। जब औरत उसकी नाशुक्री करती है या दावा करती है कि उसने कभी उसकी तरफ़ से कोई भलाई नहीं देखी, अगरचे शौहर ने उसके लिये बहुत कुछ किया हो।

'औरत की कामयाबी की अलामत ये है कि लोग उसके लिये दुआयें करें, उसका शौहर उसकी तारीफ़ में रतबुल्लिसान रहे, उसकी पड़ौसन उससे मुहब्बत करे और उसकी सहेलियाँ उसकी इज़्ज़त करें।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब से ज़्यादा वसीअ है।'

(सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब मा जाअ फ़ी क़ौलिल्लाहि तआला वहुवल्लज़ी यब्दउल ख़ल्क़... : 3194, सहीह मुस्लिम, किताबुत्तौबा, बाब फ़ी सअति रहमतिल्लाहि तआला : 2751, सुनन तिर्मिज़ी : 2543, 'बलफ़्ज़ इन्न रहमती ग़लबत (तग़्लिबु) ग़ज़बी)

रूह जिस्म से ज़्यादा तवज्जह की मुस्तहिक़ है

आ गई सुबहे बहाराँ देख इतराती हुई
हुस्न की दौलत पे अपनी नाज़ फ़रमाती हुई

जनाब उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में एक आदमी को हुक्म दिया कि वो उनके लिये आठ दिरहम का लिबास ख़रीदकर लाये। जब वो आदमी उसे ख़रीदकर लाया तो ख़लीफ़ा उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) ने उस पर अपना हाथ फैरा और फ़रमाया, 'कितना नर्म और मुलायम है।' ये सुनते ही उस आदमी के चेहरे पर मुस्कुराहट फैल गई। ख़लीफ़ा उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) ने मुस्कुराने का सबब पूछा। उस आदमी ने जवाब दिया, 'ऐ अमीरुल मोमिनीन! ख़लीफ़ा बनने से पहले की बात है आपने मुझे एक हज़ार दिरहम में एक लुबादा ख़रीदकर लाने का हुक्म दिया। जब आपने उस पर हाथ फैरा तो फ़रमाया था, 'कितना खुर्दुरा है ये और आज आठ दिरहम के लिबास को आप नर्म और मुलायम कह रहे हैं।' ख़लीफ़ा उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) ने फ़रमाया, 'मैं नहीं समझता कि जो आदमी एक हज़ार दिरहम का लिबास ख़रीदता है वो अल्लाह से डरता है।' फिर आपने फ़रमाया, 'ऐ फ़लाँ! मेरा नफ़्स बुलंद मन्सब का ख़्वाहाँ था। जब उसने कोई मन्सब पाया उससे ज़्यादा बुलंद मन्सब की ख़्वाहिश करने लगा। जब उसको इमारत मिली तो ख़िलाफ़त की तमन्ना करने लगा। यहाँ तक कि उसने ख़िलाफ़त भी हासिल कर ली। अब मेरी रूह इसकी ख़्वाहिशमन्द है कि इससे बड़ी चीज़ हासिल करे और वो जन्नत ही हो सकती है।'

'लोगों के बारे में फ़ैसला सुनाना हमारा काम नहीं है और उनको सज़ायें देने की फ़िक्र में ग़लताँ रहना हमारी ज़िम्मेदारियों में शामिल नहीं।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'तुम अल्लाह के दीन की हिफ़ाज़त करो वो तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा।'

वक़्त ज़ाएअ न करो, माज़ी (Past) और मुस्तक़बिल (Future) के मुक़ाबले में हाल (Present) पर नज़र रखो

ख़ैमाज़न हैं ज़ुल्मतें तो ज़ुल्मतों का ख़ौफ़ क्या
आ रही है सुबहे ताबाँ भी लिये तैग़ व अलम

अपने गालों पर तमाँचे मारने, अपना गिरेबान चाक करने से क्या हासिल, अगर माज़ी में कुछ खो गया या कोई मुसीबत का पहाड़ टूटा? वो ख़लिश क्या है जिसने तुम्हारे एहसासात और ख़्यालात को बुरी तरह मुतास्सिर कर रखा है। वो हादसा जो माज़ी में गुज़रा जो तुम्हारे रंज व अलम में इज़ाफ़ा का बाइस है और तुम्हारे दिल में ग़म की आग को मुसलसल भड़का रहा है?

अगर ये मुम्किन होता कि हम माज़ी में लौट जाते और उन वाक़ियात को जिन्हें हम पसंद नहीं करते, बदल सकते और हम उसको इस तरीक़े पर गुज़ार सकते जो हम को पसंद है। तब तो हमारे लिये माज़ी में लौट जाना लाज़िम होता। हम सबके सब निहायत तेज़ी के साथ, माजी की तरफ़ पलटते और उन तमाम वाक़ियात को जिन पर हमें निदामत है मिटा डालते और वो काम जो हमारी ख़ुशबख़्ती के लिये ज़रूरी है, उनमें ख़ूब इज़ाफ़ा कर लेते। लेकिन हम जानते हैं ये नामुम्किनात में से है। इसलिये हमारे लिये ही बेहतर और मुनासिब है कि हम अपनी तमामतर कोशिशें इस बात पर मर्कूज़ कर दें कि किस तरह हम अपनी ज़िन्दगी को बेहतर बना सकते हैं। इसलिये कि तलाफ़ी माफ़ात का यही वाहिद रास्ता है।

और ये वही अहम नुक्ता है जिसकी तरफ़ कुरआन पाक में जंगे उहुद के बाद मुतवज्जह कराया गया है जब लोग अपने मक़्तूलों पर आँसू बहा रहे थे और मैदाने जंग में पीछे हटने पर नादिम थे, **'उनसे कह दो कि अगर तुम अपने घरों में भी होते तो जिन लोगों की मौत लिखी हुई थी वो ख़ुद अपनी क़त्लगाहों की तरफ़ निकल आते।'** (सूरह आले इमरान 3 : 15)

'यक़ीन करो ख़ुशबख़्ती एक गुलाब के पौधे की तरह है जो अब तक नहीं खिला है लेकिन वो खिलेगा ज़रूर।'

*****

Scanned by CamScanner

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا

'जो मेरे ज़िक्र से मुँह मोड़ेगा उसके लिये दुनिया में तंग ज़िन्दगी होगी।' (सूरह ताहा 20 : 124)

मुसीबतें दरहक़ीक़त नेमतों के ख़ज़ाने हैं

महकेगा चमन फिर ख़ुशियों का, मुरग़ाने चमन फिर गायेंगे
है आज अगर याँ बादे ख़िज़ाँ, कल बादे बहाराँ आयेगी

हज़रत उम्मे अ़ला (रज़ि.) से रिवायत है वो फ़रमाती हैं, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरी इयादत फ़रमाई जब मैं बीमार थी तो आप (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'ऐ उम्मे अ़ला! तुम्हारे लिये ख़ुशख़बरी है इसलिये कि जब एक मुसलमान बीमार होता है तो अल्लाह तआ़ला उसके ज़रिये से ख़ताओं को इस तरह दूर कर देता है जैसे आग चाँदी से खोट दूर कर देती है।'** (सुनन अबी दाऊद, किताबुल जनाइज़, बाब इयादतुन्निसा : 3092, मुस्नद अ़ब्द बिन हुमैद : 1564, मुअ़जम अल्कबीर लित्तबरानी : 25/141 : 340, मअ़रिफ़तुस्सहाबा लिइब्ने नुऐम : 7995, शैख़ अल्बानी रह. ने इसे सहीह कहा है।)

इसका ये मतलब हर्गिज़ नहीं कि हम बीमारियों के जरासीम को अपने जिस्म में पाले रखें और दवा और इलाज को छोड़ दें कि बीमारी गुनाहों और ख़ताओं को मिटा देती है। बल्कि बन्दे पर वाजिब है दवा ले और शिफ़ा के लिये दुआ करे। बीमारियों पर सब्र करना और उसकी तकलीफ़ों पर अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला से अज्र की उम्मीद रखना इसके अ़लावा है। हमें बीमारियों को अपने नामाए आमाल में नेकियों के ज़ख़ीरे का ज़रिया समझना चाहिये। यही वो दर्स है जो इस मोमिना सालेहा ने हमें दिया है।

इसी तरह एक मोमिना को अपने किसी अ़ज़ीज़, शौहर या औलाद की मौत का सदमा भी सब्र से बर्दाश्त करना चाहिये जैसाकि हदीस़ में है।

'अल्लाह जल्ले शानहू अपने उस मोमिन बन्दे के लिये जन्नत से कम स़वाब पर रज़ामन्द नहीं होते जो ज़मीन पर अपने किसी चहीते की जुदाई पर सब्र करता है और अल्लाह तआ़ला से अज्र की उम्मीद रखता है।' (सुनन नसाई, किताबुल जनाइज़, बाब स़वाबु मन सबरा वहतसबा : 1871, शैख़ अल्बानी रह. ने इसे सहीह कहा है।)

अगर एक औ़रत अपना शौहर खोती है तो इसका मतलब ये हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दे को अपने पास वापस बुला लिया और वो उसका ज़्यादा हक़दार है। अगर औ़रत कहती है, 'हाय मेरा शौहर' या 'हाय मेरा बेटा' तो ख़ालिक़ व मालिक कहता है, 'मेरा बन्दा' और मैं दूसरों के मुक़ाबले में इस पर ज़्यादा हक़ रखता हूँ। शौहर आ़रियतन (वक़्ती तौर पर) दिया गया है, बेटा भी आ़रियतन दिया गया है और इसी तरह भाई और बाप भी आ़रियतन दिये गये हैं और बीवी भी आ़रियतन दी गई है।

अहलो-अ़याल व माल व ज़र इक दिन जुदा हो जायेंगे,   बेशक जुदा हो जायेंगे इक दिन फ़ना हो जायेंगे

'इफ़्तिरा परदाज़ी (झूठ घड़ने) से इस तरह बचो जिस तरह ताऊन से बचा जाता है।'

Scanned by CamScanner

'जो लोग रहम करने वाले हैं उन पर अल्लाह जल्ले शानहू की रहमत होती है।' (सुनन अबी दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िर्रहमह : 1494, सुनन तिर्मिज़ी, किताबुल बिर्र वस्सिलह, बाब मा जाअ फ़ी रहमतिल मुस्लिमीन : 4291, मुस्नद अहमद : 2/161, मुस्नद हुमैदी : 206, शैख़ अल्बानी रह. ने इसे सहीह कहा है।)

करो मेहरबानी तुम अहले ज़मीन पर
ख़ुदा मेहरबाँ होगा अर्शे बरीं पर

सब्र मिफ़्ताहे सआदत, ग़म है पैग़ामे ख़ुशी
शाद रह, है गर्दिशे अय्याम की आदत यही

रसूलुल्लाह (ﷺ) की एक हदीस़ में माँ की मुहब्बत अपनी औलाद के लिये कैसी होती है? इसकी वाज़ेह तस्वीर कशी की गई है। ये एक मिस़ाल है उस मुहब्बत और चाहत की और शफ़क़त व मेहरबानी की जो अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने एक माँ के दिल में पैदा की है और उस मुहब्बत, तवज्जह और इनायत की जो माँ अपनी औलाद के लिये उसकी परवरिश करते वक़्त ज़ाहिर करती है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अल्लाह सुब्हानहू व तआला की रहमत और मेहरबानी जो अपने बन्दों के साथ होती है उसकी एक ज़िन्दा तस्वीर पेश फ़रमाई है।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) रिवायत फ़रमाते हैं, 'कुछ ख़्वातीन जंगी क़ैदी की हैसियत से गिरफ़्तार करके रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में लाई गईं। उनमें से एक औरत बेचैनी से किसी चीज़ की तलाश में थी। जब उसने एक बच्चा पाया तो उसने उसको सीने से चिमटा लिया और उसको अपनी छाती से दूध पिलाने लगी। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'तुम्हारा क्या ख़याल है? क्या ये औरत अपने बच्चे को आग में डाल सकती है?'** हम लोगों ने अर्ज़ किया, 'नहीं! अल्लाह की क़सम हर्गिज़ नहीं!'

आप (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'ये औरत जिस क़द्र अपने बेटे पर मेहरबान है अल्लाह तआला उससे कहीं ज़्यादा अपने बन्दों पर मेहरबान है।'** (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब रह्मतुल वलद व तक़बीलिही : 5999, सहीह मुस्लिम, किताबुत्तौबा, 2754, मुस्नद बज़्ज़ार : 287, शौबुल ईमान लिल्बैहक़ी : 10506)

ये एक औरत थी जो जंगी क़ैदी बनाकर लाई गई थी। ये अपने घरेलू मामलात में बाइख़्तियार थी। अपने क़बीले के मर्दों की हिफ़ाज़त में आज़ाद थी। शौहर के घर में उसकी हुक्मरानी थी। लेकिन उस गिरफ़्तारी की वजह से अब वो एक बान्दी थी जो महकूम थी। वो ऐसे हालात से दोचार थी जिसमें इंसान सब कुछ फ़रामोश कर जाता है कि उसके आस-पास क्या हो रहा है। वो सख़्त ज़हनी तकलीफ़ में मुब्तला थी लेकिन ऐसे हालात में भी वो अपने बच्चे जिगर गोशे और आँखों के नूर की देखभाल से लाताल्लुक़ न हो सकी। वो उसे हर जगह ढूण्ढती रही यहाँ तक कि उसने उसको पा लिया और वालिहाना अन्दाज़ में उसको कलेजे से लगा लिया और अपनी छाती से दूध पिलाने लगी। ये औरत कभी इसको गवारा नहीं कर सकती कि उसके लख़्ते जिगर को किसी क़िस्म की कोई तकलीफ़ पहुँचे। चाहे वो मामूली दर्जे की तकलीफ़ क्यों न हो। वो हर हालत में अपने बच्चे की हिफ़ाज़त करेगी। इससे कोई बहस़ नहीं कि वो तकलीफ़ अदना दर्जे की है। वो उसकी हिफ़ाज़त के लिये अपनी जान क़ुर्बान कर देगी।

'बद ज़बानी, कलाम करने वाले के लिये ज़्यादा मुसीबत का बाइस़ है जितना कि उसके लिये जो उससे ज़ख़्मी किया जाये।'

Scanned by CamScanner

किरणें

'शुक्र अल्लाह के ग़ज़ब से हिफ़ाज़त का ज़रिया है।'

दुनिया हसीन व जमील है लेकिन नाउम्मीद लोगों की नज़र में नहीं

ऐ हबीबे किब्रिया! इल्मो-हिदायत के चिराग़
आप की आमद से दुनिया का हुआ दिल बाग़-बाग़

क्या हुआ अगर मौसमे सरमा ने तुम्हारे घर के दरवाज़ों को बंद कर दिया है और बर्फ़ीली चट्टानों ने हर तरफ़ से तुम्हारे रास्ते मसदूद कर दिये हैं। आने वाली बहार की तरफ़ देखो और ताज़ा हवाओं में साँस लेने के लिये अपनी खिड़कियाँ खोल दो। दूर उफ़ुक तक नज़र दौड़ाओ और परिन्दों के झुण्ड को देखो जिन्होंने फिर अपना नग़मा छेड़ दिया है। तुम देखोगी कि सूरज अपनी सुनहरी शुआओं (किरणों) को दरख़्तों की शाख़ों पर फैलाये हुए हैं और तुम्हें एक नई ज़िन्दगी का मुज़्दा (ख़ुशख़बरी) सुना रहा है और क़ल्ब व रूह को ताज़गी दे रहा है। एक नये ख़्वाब की ख़ूबसूरत ताबीर लिये हुए।

ख़ूबसूरत अश्जार (पेड़ों) की तलाश में सहरा का सफ़र मत करो क्योंकि वहाँ तुम्हें वीराने और तन्हाई के सिवा कुछ न मिलेगा। सामने सैकड़ों अश्जार की तरफ़ देखो जो तुम्हें साया फ़राहम करते हैं और मीठे और ज़ायक़ेदार फल पेश करते हैं और जिनकी टहनियों पर पनाह लेने वाले परिन्दे अपने ख़ुश इल्हान नग़मों से रूह को सरशार करते हैं।

गुज़िश्ता अय्याम का हिसाब मत करो कि तुमने कितना नुक़सान उठाया है। इसलिये कि जब ओराक़े हयात साक़ित हो जाते हैं तो फिर लौटाये नहीं जाते। लेकिन हर मौसमे बहार में नई कोंपलें निकलती हैं और नये पत्ते वजूद में आते हैं। देखो उन सरसब्ज़ पत्तों को जो तुम्हारे और आसमान के दरम्यान हैं और उन सूखे औराक़ को भूल जाओ जो ज़मीन पर आ गिरे और अब उसी का हिस्सा बन चुके हैं।

चूँकि गुज़िश्ता कल ज़ाएअ हो चुका है और आज तुम्हारे सामने है। इसलिये इससे पहले कि ये गुज़र जाये तुम इसके औराक़ को जमा कर लो और आने वाले कल की तरफ़ पेश क़दमी करो। कल जो गुज़र गया उनका मातम न करो और आज का दिन अफ़सोस करने में ज़ाएअ न करो। आने वाला कल बेहद हसीन है। इसमें तुलूअ होने वाले रोशन सूरज की सुनहरी किरणों का इन्तिज़ार करो।

'दिल आज़ार बातों की जराहत से पैदा होने वाली बीमारियों का अन्दाज़ा मुम्किन नहीं।'

*****

Scanned by CamScanner

'औरतें मर्द की निस्फ़ ही बेहतर हैं।'

(सुनन अबी दाऊद, किताबुत्तहारत, बाब फ़िर्ज़ुलि यजिदुल बलल फ़ी मनामिही : 236, सुनन तिर्मिज़ी, किताबुत्तहारत : 113, सुनन इब्ने माजा : 612, मुस्नद अहमद : 6/256, सुनन दारमी : 771, शैख़ अल्बानी रह. ने इसे सहीह कहा है।)

अच्छे दिनों में रब का शुक्र अदा करो बुरे दिनों में उसकी मदद हासिल होगी

मर्ग मायूसी है, देखो यास पास आये नहीं
ज़िन्दगी जीना अगर हो आरज़ू बेदार रख

हज़रत यूनुस (अलै.) मछली के पेट में शदीद परेशानी के आलम में थे। हर तरह की तारीकियाँ हाइल थीं। तारीकी और तह-ब-तह तारीकी, समुन्द्र की गहराई में इन्तिहा दर्जे की तारीकी, मछली के पेट की तारीकी और रात की तारीकी। उनका सीना तंग, उनका ग़म ज़्यादा और उनका कर्ब (मुसीबत) अज़ीम था। ऐसी हालत में गिरया व ज़ारी के साथ उन्होंने अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की तरफ़ रुजूअ किया जो ग़मज़दा की मदद करता है और मुसीबत ज़दा की परेशानियाँ दूर करता है। जो वसीअ रहमत वाला और बन्दों की तौबा क़ुबूल करने वाला है। उस वक़्त उनकी ज़बाने मुबारक से जो सुनहरे अल्फ़ाज़ जारी हुए वो तो गोया हीरे और मोती हैं। उन्होंने ज़ुलुमात के अंदर से अपने रब को पुकारा,

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

'नहीं है कोई इलाह मगर तू, पाक है तेरी ज़ात, बेशक मैंने क़ुसूर किया।' (सूरह अम्बिया 20 : 87)

दुआ फ़ौरन क़ुबूल हुई और जैसाकि अल्लाह तआला का इरशाद है,

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ۭ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

'तब हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और ग़म से उसको निजात बख़्शी और इसी तरह हम मोमिनों को बचा लिया करते हैं।' (सूरह अम्बिया 21 : 88)

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने मछली को वह्य फ़रमाया कि वो यूनुस (अलै.) को एक वीरान जगह पर उगल दे। वो समुन्द्र के किनारे निहायत कमज़ोर और बीमार हालत में ऊपर आ गये। लेकिन अल्लाह तआला की ख़ुसूसी इनायत और रहमत आपके साथ थी। अल्लाह के हुक्म से एक पौधा उग आया जिसके पत्ते उन पर साये किये रहे। उनके जिस्म में ज़िन्दगी के आसार नुमायाँ हुए और उनकी सेहत लौट आई और इस तरह जिसने अल्लाह की रुबूबियत का ऐतराफ़ किया और अल्लाह तआला ने बुरी हालत में उसकी मदद फ़रमाई।

'आप अपनी क़यादत ख़ुद नहीं कर सकतीं जब तक अपनी ज़िन्दगी की रहनुमाई के लायक़ नहीं बन जातीं।'

*****

किरणें

'जिसके साथ बीवी नहीं वो दरहक़ीक़त मिस्कीन है।'

दुनिया में सबसे क़ीमती मुहर वाली ख़ातून

लताफ़त में बढ़ जा नसीमे सह्र से
बुलन्दी में बढ़ जा सुरय्या से ज़्यादा

हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) ने इस्लाम लाने से पहले हज़रत उम्मे सुलैम बिन्ते मल्हान (रज़ि.) के सामने शादी की तजवीज़ रखी और बहुत बड़ी रक़म मुहर में देने की पेशकश की। लेकिन उनकी उम्मीद के बरख़िलाफ़ हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने निहायत पुरवक़ार अन्दाज़ में साफ़ इंकार कर दिया, **'मैं एक मुश्रिक से शादी नहीं कर सकती, ऐ अबू तलहा! तुम जिन माबूदों की इबादत करते हो उसको फ़लाँ ख़ानदान के ग़ुलाम तराशते हैं, अगर तुम उसको आग दिखाओ तो फ़ौरन जल जायेंगे।'**

हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) को सख़्त सदमा हुआ और वो इस हाल में लौटे कि जो कुछ उन्होंने देखा और सुना था उस पर उनको यक़ीन नहीं आता था। लेकिन उनके दिल में जो सच्ची मुहब्बत थी उनको फिर दूसरे दिन ले आई। उन्होंने अब उससे भी ज़्यादा क़ीमती मुहर की पेशकश की। इस उम्मीद पर कि शायद उससे हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) का दिल पिघल जाये और वो शादी करने के लिये तैयार हो जायें। लेकिन उन्होंने निहायत अदब और ख़ूश उस्लूबी से कहा, ऐ अबू तलहा! तुम जैसे आदमी को कोई औरत रद्द नहीं कर सकती लेकिन तुम काफ़िर हो और मैं मुसलमान हूँ, मेरे लिये तुमसे शादी करना दुरुस्त नहीं। हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) ने कहा, मैं तुम्हें पीले और सफ़ेद (सोने-चाँदी) से मालामाल कर दूँगा।' उन्होंने कहा, **'मुझे पीले और सफ़ेद (सोने-चाँदी) नहीं चाहिये, मैं चाहती हूँ कि तुम इस्लाम कुबूल कर लो।'** अबू तलहा (रज़ि.) ने कहा, 'इस सिलसिले में किससे बात करूँ?' उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने कहा, **'तुम इस सिलसिले में रसूलुल्लाह (ﷺ) से बात करो।'** अबू तलहा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आप (ﷺ) सहाबा किराम (रज़ि.) के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे। जब आप (ﷺ) ने अबू तलहा (रज़ि.) को देखा तो सहाबा किराम (रज़ि.) से फ़रमाया, **'तुम्हारे पास अबू तलहा आये हैं और उनकी आँखों में इस्लाम का नूर है।'** अबू तलहा (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से वो बातें कहीं जो हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने कही थीं और उसी इस्लाम लाने की बुनियाद पर उम्मे सुलैम (रज़ि.) से उनका निकाह कर दिया गया। (उम्मे सुलैम रज़ि. ने कुबूले इस्लाम ही को मुहर क़रार दिया।) (मुस्नद अबी दाऊद तयालिसी : 2168, मुस्नद बज़्ज़ार : 7310,

Scanned by CamScanner

मुस्नदुल कुबरा लिल्बैहक़ी : 4/109, बितूलिही, सुनन नसाई, किताबुन्निकाह, बाबुत्तज़्वीज अ़लल इस्लाम : 3340-3341 मुख़्तसरन)

ये ख़ातून निहायत ही शानदार मिसाल है उन औरतों के लिये जो शराफ़त और फ़ज़ीलत चाहती हैं। ज़रा देखो उनकी सीरत किस तरह ईमान व यक़ीन और अ़ज़मत और शराफ़त से आरास्ता थी। इलाहे बुज़ुर्ग व बरतर के नज़दीक वो किस क़द्र अज्र व सवाब की मुस्तहिक़ थीं। वो अपने पीछे कैसी ख़ूबसूरत और मुअ़त्तर क़ाबिले तारीफ़ यादें छोड़ गईं और कैसा अ़ज़ीम, मुबारक अज्र व सवाब उन्होंने हासिल किया क्योंकि वो अपने रब के साथ, अपनी ज़ात के साथ और लोगों के साथ मुख़्लिस और सच्ची थीं। जिस दिन सादिक़ीन का सिद्क़ उनको नफ़ा पहुँचायेगा उस दिन उनके लिये जन्नत की बशारत है जिसमें वो हमेशा-हमेशा क़ियाम करेंगे और इस अ़ज़ीम कामयाबी से अपनी आँखें ठण्डी करेंगी।

'अगर तुम चाहती हो कि दूसरे तुम्हारे साथ ख़न्दा पेशानी से मिलें तो तुम भी दूसरों से मुस्कुराती हुई मिलो।'

*****

फ़र्द क़ायम रब्ते मिल्लत से है, तन्हा कुछ नहीं
मौज है दरिया में और बेरूने दरिया कुछ नहीं

इक़बाल

Scanned by CamScanner

कुव्वते इश्क़ से हर पस्त को बाला कर दे
दहर में इस्मे मुहम्मद से उजाला कर दे

इक़बाल

Scanned by CamScanner

दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब औरत

(12)

अनमोल जवाहरात

Scanned by CamScanner

किरणें

وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ؕ

'और जो मुसीबत तुझ पर आ जाये उस पर सब्र कर।'

(सूरह लुक़मान 31 : 17)

कामयाबी की कुन्जियाँ

शक़ावत का उस घर की क्या पूछना है
जहाँ हर ख़ुशी ग़म की पैग़ाम्बर हो

✻ **इज़्ज़त की कुन्जी :** अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त।

✻ **रिज़्क़ की कुन्जी :** कस़रत से तौबा व इस्तिग़फ़ार और अल्लाह का तक़वा।

✻ **जन्नत की कुन्जी :** तौहीद।

✻ **ईमान की कुन्जी :** अल्लाह की आयतों और उसकी तख़्लीक़ पर ग़ौर व ख़ौज़।

✻ **नेकी की कुन्जी :** सिद्क़ ।

✻ **दिल की ज़िन्दगी और उसकी कुन्जी :** क़ुरआन पाक पर तदब्बुर, नालाए नीम शबी और गुनाहों से बचना।

✻ **इल्म की कुन्जी :** हुस्ने तलब और तवज्जह।

✻ **कामयाबी और कामरानी की कुन्जी :** सब्र।

✻ **फ़लाहे दारैन की कुन्जी :** तक़वा।

✻ **नेमतों में ज़्यादती की कुन्जी :** शुक्र।

✻ **तरजीहे आख़िरत की कुन्जी :** दुनिया से बेरग़बती और ज़ुहद।

✻ **क़ुबूलियत की कुन्जी :** दुआ

'एक इंसान की मुस्कुराहट सूरज की शुआओं की तरह है।'

✻✻✻✻✻

Scanned by CamScanner

وَهَبْ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً

'ऐ अल्लाह! हमें अपनी जनाब से रहमत अता फ़रमा।'

(सूरह आले इमरान 3 : 8)

दुश्वारियों के बाद ही कामयाबी की लज़्ज़तें हैं।

फ़िक्र व ग़म से दिल को रख आज़ाद कि हर चीज़ याँ
मिस्ले साया बेक़रार व बेस़बात व बेदवाम

एक दुल्हन हनीमून मनाने के बाद घर लौटकर अपनी माँ को लिखती है :

'प्यारी अम्मी! आज मैं अपने घर लौटकर आ गई। अपने छोटे से आशियाने में जिसे मेरे शौहर ने मेरे लिये बनाया है। हनीमून मनाने के बाद ...... काश आप मेरे पास होतीं और आपको मैं अपने शौहर के साथ बसर की हुई नई ज़िन्दगी के बारे में सब कुछ बताती।

वो बहुत ही अच्छे इंसान हैं, वो मुझे टूटकर चाहते हैं और मैं उनसे मुहब्बत करती हूँ और उनको ख़ुश करने की हर मुम्किन कोशिश करती हूँ। मैं आपको यक़ीन दिलाती हूँ कि मुझे आपकी सारी नसीहतें याद हैं और मैं उन पर अ़मल पैरा हूँ। मुझे आपके तमाम अल्फ़ाज़ याद हैं, मुझे वो सारी बातें हर्फ़-ब-हर्फ़ अब तक याद हैं जो आपने मेरे कान में शीरख़्वारगी के ज़माने से लेकर शादी की रात तक कही थीं। मैं ज़िन्दगी को उन बसीरत अफ़रोज़ बातों की रोशनी में देखती हूँ जो मैंने आपसे सुनी हैं। मेरे सामने इसके सिवा कोई नसबुल ऐन नहीं कि मैं अपने शौहर के साथ उसी तरह पेश आऊँ जैसाकि आप अब्बू जान के साथ और हम लोगों के साथ पेश आती थीं, जब हम बच्चे थे। आपने हमें अपनी तमामतर मुहब्बत और तवज्जह अ़ता फ़रमाई और आप ही ने हमें ज़िन्दगी का मफ़्हूम बताया और ज़िन्दगी गुज़ारने का सलीक़ा सिखाया। आपने अपने मुबारक हाथों से हमारे दिलों में मुहब्बत की तुख़्मरेज़ी (बीज बोना) फ़रमाई।

मैं घर के दरवाज़े में कुँजी घुमाने की आवाज़ सुन रही हूँ। लगता है यक़ीनी तौर पर मेरे सरताज तशरीफ़ ला रहे हैं। देखिये वो अब क़रीब आ गये और मेरा ख़त पढ़ना चाहते हैं। वो जानना चाहते हैं कि मैंने अपनी प्यारी अम्मी को क्या लिखा है। वो उन ख़ुशगवार मुबारक लम्हात में शरीक होना चाहते हैं जो मैंने आपके साथ अपनी रूह और फ़िक्र के साथ गुज़ारे हैं। वो चाहते हैं कि मैं क़लम उनके हवाले कर दूँ और ख़त में थोड़ी जगह उनके लिये छोड़ दूँ ताकि वो इस पर ख़ुद भी कुछ लिख सकें। मेरा प्यार भरा सलाम आप के लिये, अब्बू के लिये और बहन-भाइयों के लिये।'

'मुस्कुराहट से कुछ देना नहीं पड़ता, लेकिन ये हमें बहुत कुछ देती है।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ۖ إِنَّكَ أَنتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٢٧﴾

'ऐ रब! हमारी तरफ़ से (नेकियाँ) क़ुबूल फ़रमा ले, बेशक तू सुनने वाला और जानने वाला है।'

(सूरह बक़रा 2 : 127)

परेशानियों से जिस्म और ज़हन दोनों अज़ाब झेलते हैं

ज़िन्दगी रंज व ग़म से इबारत सही
सबका बुतलान है इक तबस्सुम तेरा

परेशानी की सबसे बुरी शक्ल ये है कि हमारा ज़हन किसी मर्कज़ पर मर्कूज़ न हो सके। जब हम परेशान होते हैं तो हमारा ज़हन मुन्तशिर हो जाता है। जब हम अपने आपको इन बदतरीन हालात का सामना करने के लिये तैयार करते हैं , दिमाग़ पर ज़ोर देते हैं तो हम अपने आपको ऐसी हालत में नहीं पाते हैं कि हम इस ख़ास मसले पर अपना ज़हन मर्कूज़ कर सकें।

ऐसा मुम्किन कि हम किसी अहम काम को अन्जाम भी दें और परेशान भी हों। एक ही वक़्त में दोनों मुम्किन नहीं। दोनों में से किसी एक को फ़िक्र व ख़्याल की दुनिया से निकाल बाहर करना ज़रूरी है।

जब तुम फ़िल्हाल किसी परेशानी से दोचार हो तो माज़ी की किसी बदतरीन सूरते हाल और मुसीबत को याद करो। अब तुम उस परेशानी को एक जहत के बजाय दो जहतों से अपनी गिरफ़्त में लोगी। माज़ी (Past) की मुसीबत बड़ी थी लेकिन तुमने उस पर क़ाबू पा लिया इसलिये तुम मौजूदा परेशानियों पर भी क़ाबू पा लोगी, जो माज़ी के मुक़ाबले में कमतर दर्जे की परेशानी है। कोई कह सकता है कि माज़ी के अलम्या पर तुमने कामयांबी के साथ क़ाबू पा लिया जो बदतरीन अलम्या था तो फिर मौजूदा अलम्या पर क्यों क़ाबू नहीं पा सकतीं? तुमने माज़ी में एक बड़ी परेशानी का मुक़ाबला मर्दाना वार किया था तो फिर मौजूदा परेशानी का मुक़ाबला क्यों नहीं कर सकतीं जबकि ये उससे कहीं ज़्यादा हल्की परेशानी है?

मुसीबतों का एहसास उस वक़्त और ज़्यादा हावी होता है जब तुम किसी काम में मशग़ूल न रहो, ब... किसी काम से फ़ारिग़ होकर यूँ ही बैठी रहो। फ़ारिग़ औक़ात में ख़्यालात का हुजूम होना लाज़िमी है और उस वक़्त तरह-तरह के अन्देशा हाय दूर-दराज़ ज़हन में आते हैं और परेशान करते हैं। इसका इलाज सिर्फ़ यही है कि तुम ख़ुदको मुफ़ीद कामों में मशग़ूल कर दो।

'फ़िज़ूल चीज़ें अक़्लमन्द इंसानों को भी दीवानगी की हद तक पहुँचा देती हैं।'

*****

Scanned by CamScanner

'ज़िन्दगी मिनटों और सेकण्डों का मज्मूआ ही तो है।'

पसन्दीदा काम और महबूब मशग़लों में ख़ुशियों का राज़ पौशीदा है

सब्र, ख़ुश अन्जाम का दामन न छूटे देखना
सब्र तो बस साहिबे हसबो-नसब की शान है

एक अब्क़री (Genius) इंसान चाहे उसका ताल्लुक़ किसी भी शोबे (Department) से हो, बिला इरादा और बिला मुज़ाहिमत उस शोबे से वाबस्ता होता है और अपने लिये उसमें बहुत ही ज़्यादा कशिश महसूस करता है जिसके लिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उसको तख़्लीक़ फ़रमाया है और जिस शोब-ए-हयात में उसके अंदर ईजाद और इख़्तिराअ की बेपनाह सलाहियत मौजूद है ख़्वाह उस शख़्स को उस शोब-ए-हयात में अपनी कम मायगी का एहसास ही क्यों न हो, वो लामहाला उसी शोबे से वाबस्ता रहता है और ख़ुशदिली, लज़्ज़त और सुरूर के साथ काम करता है। इससे कोई बहस नहीं कि उसको उस राह में क्या-क्या दुशवारियाँ पेश आती हैं और किन-किन मुश्किलात का सामना करना पड़ता है। इस काम से उसको क्या याफ़्त होती है और किस हद तक उसकी ये ख़्वाहिशात और तमन्नायें पूरी होती हैं कि वो ऐसे काम करे जो उसके लिये ज़्यादा नफ़ाबख़्श हों। इससे क़तए-नज़र कि वो अपनी ग़ुरबत व इफ़्लास से किस क़द्र शाक़ी (शिकायत करने वाला) है जिसका सबब उसकी मौजूदा मसरूफ़ियत है। इन सबके बावजूद वो इस मशग़ले से ख़ुश और मुत्मइन है क्यों कि इस काम से उसके अंदर से वो चीज़ बरामद हो रही है और जो सरापा ख़ैर है।

'मर्द को उस कलिम-ए-ख़ैर से ख़ुशी मिलती है जो एक औरत के होंटों पर जारी होता है।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴿٨٠﴾

'जब मैं बीमार होता हूँ तो वही शिफ़ा देता है।'

(सूरह शुअरा 26 : 80)

असल कुव्वत इंसान के क़ल्ब (दिल) में है न कि जिस्म में

मैंने किया ज़माने से हर हाल में निबाह
जो ग़म दिया तो सब्र किया, दी ख़ुशी तो शुक्र

ये क़िस्सा है एक ईसाई ख़ातून का जिसने अपनी ज़िन्दगी में फ़क़्रो-फ़ाक़ा और बीमारी के सिवा किसी दूसरी चीज़ का तजुर्बा नहीं किया था। उसका शौहर शादी के कुछ वक़्त बाद ही इन्तिक़ाल कर गया। उसने दूसरी शादी की तो वो आदमी भी एक-दूसरी औरत के साथ भाग गया जो बाद में एक घटिया मक़ाम पर मुर्दा पाया गया। उसके पास एक बेटा था जिसे फ़ाक़ा और बीमारी की वजह से उसने ख़ुद से जुदा करना गवारा कर लिया जबकि उसकी उम्र सिर्फ़ चार साल थी। उसकी ज़िन्दगी में एक अहम मोड़ उस वक़्त आया जब वो शहर की एक सड़क से गुज़र रही थी और उसका पाँव बर्फ़ीली ज़मीन के फर्श पर फिस्लन की वजह से उसकी रीढ़ की हड्डी बुरी तरह मुतास्सिर हुई थी और डॉक्टरों का अन्दाज़ा था कि वो जल्द ही मर जायेगी या उसका जिस्म हमेशा के लिये फ़ालिज में आ जायेगा। जब वो अस्पताल में एक बिस्तर पर लेटी थी उसने किताबे मुक़द्दस की वर्क़ गरदानी शुरू की। उसको इन आयाते रब्बानी से बड़ी तक़वियत मिली। जैसाकि उसने ख़ुद ही बयान किया है। उसने मत्ता की रिवायत करदा इन्जील मुक़द्दस के ये अल्फ़ाज़ पढ़े, 'जब कोई मफ़्लूज उसके सामने (हज़रत ईसा अलै. के सामने) पेश किया जाता जो अपने बिस्तर पर पड़ा होता तो आप मफ़्लूज से कहते, 'उठो और अपना बिस्तर सम्भालो और घर की राह लो।' तो वो अल्लाह के हुक्म से उठ खड़ा होता और अपने घर चला जाता।

इस इबारत ने उसके अंदर कुव्वते ईमानी और ताक़ते रूहानी बढ़ा दी और वो अपने बिस्तर से उठ खड़ी हुई और कमरे में टहलने लगी। इस तजुर्बे ने उस मफ़्लूज ख़ातून को इस क़ाबिल बना दिया कि वो ख़ुद अपना इलाज करने लगी और दूसरों को आफ़ियत पहुँचाने लगी।

मशहूर माहिरे नफ़्सियात डेल कारनेगी इस अनोखे तजुर्बे पर जो मिसेज मेरी बेकराइडी को पेश आया था तबसरा करते हुए कहते हैं, मिसेज ऐडी अपने उस नये मज़हब की मुबल्लिग़ा बन गई जो उसका पहला मज़हब था जिसे उसने दरयाफ़्त किया था।'

और तुम ऐ मोमिना! हाँ तुमने अपने दीन के लिये क्या किया है?

'नेक औरत, सबसे मज़बूत क़िला है।'

Scanned by CamScanner

'क़नाअत एक बेश क़ीमत दौलत है जो कभी ख़त्म नहीं होती।'

एक नेक औरत मुसीबतों की जहन्नम को जन्नत में बदल देती है

तफ़ज़्ज़ुल, अफ़ज़ल अख़्लाक़ इन्साँ है
तजम्मुल, सब्र में महबूबे यज़दाँ है

हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) की बीवी हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने क्या ही ख़ूबसूरत मिसाल क़ायम की है। अपने बच्चे की मौत पर सब्र की एक आला तरीन मिसाल, जिस पर अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने उनके लिये भलाई मुक़द्दर फ़रमा दी।

इस वाक़िये के रावी हज़रत अनस (रज़ि.) हैं। वो फ़रमाते हैं कि अबू तलहा (रज़ि.) के साहबज़ादे सख़्त बीमार थे। अबू तलहा (रज़ि.) बाहर तशरीफ़ ले गये। इस दौरान में बच्चे का इन्तिक़ाल हो गया। जब अबू तलहा (रज़ि.) लौटकर आये तो पूछा, 'मेरे बेटे का क्या हाल है?' बच्चे की माँ उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने जवाब दिया, 'पहले से ज़्यादा पुर सुकून है।' फिर उन्होंने शौहर के सामने रात का खाना पेश किया। उन्होंने खाना खाया और बीवी के पास सोये। जब फ़ारिग़ हुए तो बीवी ने कहा कि अब बच्चे को दफ़न कर दो। सुबह हुई तो हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और सारा माजरा कह सुनाया। आप (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़रमाया, 'क्या तुम रात बीवी के पास गये थे?' उन्होंने कहा, हाँ! आप (ﷺ) ने दुआ फ़रमाई, 'ऐ अल्लाह! इन दोनों को बरकत से नवाज़।'

अल्लाह सुब्हानहू व तआला के हुक्म से वो एक बेटे की माँ बनीं। हज़रत अनस (रज़ि.) कहते हैं मुझसे हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) ने फ़रमाया, 'बच्चे को रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास ले जाओ और साथ ही कुछ खजूरें भी दीं। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़रमाया, 'इसके साथ कुछ लाये हो?' मैंने कहा, हाँ खजूर है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे लिया और अपने मुँह में डालकर चबाया और फिर उसे अपने मुँह से निकालकर बच्चे के मुँह में डाल दिया और उसके तालू से लगाया और उसका नाम अब्दुल्लाह रखा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अक़ीक़ा, बाब तस्मियतुल मौलूद ग़दाति यूलद : 5479, सहीह मुस्लिम, किताबुल अदब, बाब इस्तिहबाबु तहनीकिल मौलूदि इन्द विलाददतिही : 2144, मुस्नद अहमद : 3/106, मुस्नद अब्द बिन हुमैद : 1240)

'कोई चीज़ औरत के लिये इफ़्फ़त व अस्मत से ज़्यादा क़द्रो-क़ीमत नहीं रखती।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'रात की तारीकी में सुबह सादिक़ की ख़ुशख़बरी छिपी है।'

सब्र इख़्तियार करो, कामयाबी तुम्हारा क़दम चूमेगी

तल्ख़ व शीरीं पर ज़माने के सदा साबिर रहो
इख़्तियारे सब्र है रुश्दो-हिदायत की दलील

बयान किया जाता है कि हज़रत उम्मे रबीअ बिन्ते अल्बिर्रह (रज़ि.) जो उम्मे हारिसा के नाम से मअरूफ़ हैं, जब बद्र में उनके बेटे हज़रत हारिसा (रज़ि.) शहीद कर दिये गये तो वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास तशरीफ़ लाईं ताकि अपने बेटे के बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़बाने मुबारक से कुछ सुन सकें जो उनके सीने को ठण्डक पहुँचाये। उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आप मुझे हारिसा के बारे में नहीं बतायेंगे? अगर वो जन्नत में है तो मैं इसको सब्र व सुकून से बर्दाश्त कर लूँगी और अगर मामला इसके बरख़िलाफ़ है तो मैं इस पर ख़ूब रोऊँगी। आप (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'ऐ उम्मे हारिसा! जन्नत में बहुत से बाग़ात हैं और तुम्हारा बेटा जन्नतुल फ़िरदौस आला में है।'** (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब मन अताहु सहम ग़रबिन फ़क़तलहू : 2809, सुनन तिर्मिज़ी : 3174, मुस्नद अहमद : 3/210, मुस्नद अबी यअला : 3500)

बेटे की मौत एक सदक़ा जानकाह है जो इंसान के दिल को रेज़ा-रेज़ा और जिगर को पारह-पारह कर देता है। लेकिन ये ख़ातून रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछती हैं कि अगर उनका बेटा जन्नत में है तो वो इन्शाअल्लाह जल्द ही उनसे मिलेंगे। उन्होंने बेटे की जुदाई पर सब्र किया और जन्नत में अपने दर्जे को बुलन्द कर लिया और अगर ऐसा नहीं है तो जी भर के आँसू बहा लेंगी जिस तरह कोई अपनी किसी चहीते की मौत पर रोता है जो हमेशा के लिये उनसे जुदा हो जाता है। ये वो बात है जिस पर वो क़ुदरत रखती है और इस्तिताअत भी। मगर वो एक मेहरबान और मुहब्बत करने वाली माँ है जिसने अपना बेटा खोया है। वो सब्र करेगी और अल्लाह तआला से अज्र की उम्मीद रखेगी।

'अगर एक ख़ूबसूरत औरत गौहरे आबदार है तो एक नेक औरत गन्ज हाय गिराँ माया।'

*****

Scanned by CamScanner

'औरत सूरज की रोशनी है लेकिन वो ग़ायब नहीं होती।'

मुसीबतों से अल्लाह के सिवा कोई निजात दिलाने वाला नहीं

ज़िन्दगी हो तल्ख़ तो क्या, तुम तो शीरीं हो रहो
गुस्से व ग़म में हैं सारे, तुम तो राज़ी हो रहो

जब ग़म के पहाड़ टूट पड़ें, परेशानियों के बादल हर तरफ़ छा जायें, मुसीबतें अपनी हदों से बढ़ जायें, रास्ते मसदूद हो जायें और कहीं से कोई उम्मीद की किरण नज़र न आये तो इंसान उस वक़्त सिर्फ़ अल्लाह वाहिद को पुकारता है और उस वक़्त उसकी ज़बान पर बेसाख़्ता 'या अल्लाह! या अल्लाह!' के अल्फ़ाज़ जारी हो जाते हैं। **ला इला-ह इल्लल्लाहुल् अज़ीमुल हलीमु, ला इला-ह इल्लल्लाहु रब्बुल अरशिल् अज़ीमि, ला इला-ह इल्लल्लाहु रब्बुस्समावाति व रब्बुल अर्ज़ि व रब्बुल अरशिल् करीम।**

ये वो कलिमात हैं जिनके ज़रिये से अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त बन्दों के ग़म को दूर कर देते हैं, उनके कर्ब को ख़त्म कर देते हैं और तंगी और परेशानी को ज़ाइल कर देते हैं।

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ۭ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

'तब हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और ग़म से उसको निजात बख़्शी और इसी तरह हम मोमिनों को बचा लिया करते हैं।' (सूरह अम्बिया 21 : 88)

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْــَٔــرُوْنَ ﴿٥٣﴾

'तुमको जो नेमत भी हासिल है अल्लाह ही की तरफ़ से है। फिर जब कोई सख़्त वक़्त तुम पर आता है तो तुम लोग अपनी फ़रियादें लेकर उसी की तरफ़ दौड़ते हो।' (सूरह नहल 16 : 53)

जब मरीज़ की बीमारी बढ़ जाये, जब उसका जिस्म कमज़ोर होता चला जाये, जब उसका रंग पीला पड़ता जाये और कोई चाराए कार नज़र न आये, तमाम ज़राएअ बेअसर हो जायें और अतिब्बा (डॉक्टर) अपने आपको बेबस और मजबूर महसूस करने लगें, दवायें काम करना छोड़ दें और साँस की आमद व रफ़्त रुकने लगे, हाथ पाँव ठण्डे हो जायें और दिल की धड़कन रुकती महसूस हो, उस वक़्त मरीज़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजूअ करता है और अलील, रब्बे जलील की तरफ़ तवज्जह करता है और पुकारता है 'या अल्लाह! या अल्लाह!' उस वक़्त उसकी बीमारी ख़त्म हो जाती है और शिफ़ा मिलती है और दुआ सुन ली जाती है।

وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٨٣﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٤﴾

'और यही (होशमन्दी और हिक्मत व इल्म की नेमत) हमने अय्यूब को दी थी। याद करो! जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि मुझे बीमारी लग गई है और तू अरहमुर्राहिमीन है। हमने उसकी दुआ क़ुबूल की और जो तकलीफ़ उसे थी उसको दूर कर दिया और सिर्फ़ उसके अहलो-अयाल ही नहीं दिये बल्कि उनके साथ इतने ही और भी दिये, अपनी ख़ास रहमत के तौर पर इसलिये कि ये एक सबक़ हो इबादत गुज़ारों के लिये।' (सूरह अम्बिया 21 : 83-84)

Scanned by CamScanner

किरणें

'ज़रा सम्भाल के रखना कि नाज़ुक आबगीना है।'

(मुस्नद हुमैदी : 243 बिहाज़ल लफ़्ज़, सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब मा जाअ फ़ी क़ौलिर्रजुलि वैलक : 6161, सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब फ़ी रहमतिन्नबी : 2323)

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ

'बेकस की पुकार को जब कि वो पुकारे कौन क़ुबूल करके सख़्ती को दूर कर देता है।

(सूरह नमल : 62)

वही है जो एक बेक़रार की दुआ सुनता है जब वो पुकारे

हार मत हिम्मत, अगर हो ग़म से तेरा सामना
इन्तिहाए ग़म में भी उम्मीद का दामन न छोड़

ख़ालिक़े कायनात इज़्ज़त व जलाल वाला है उससे जो उम्मीदें बांधता है उसे वो मफ़्लूकुल हाल नहीं छोड़ देता। उसकी दुआओं को रायगाँ नहीं होने देता। इंसान की हाजत के बक़द्र या फिर किस क़द्र वो उसका मुतीअ है और किस क़द्र उसकी तरफ़ पलटने वाला है वो उसकी दुआओं को सुनता है और मुसीबतों से निकलने का रास्ता हमवार करता है। वो ज़ाते बारी तआला तो ग़ैर मुस्लिमों की दुआयें भी सुनता है और उनकी भी ज़रूरतें पूरी कर देता है जब वो बेक़रार होते हैं और आजिज़ी के साथ उसकी तरफ़ पलटते हैं, उसकी रहमत पर भरोसा करते हैं और उसके करम से उम्मीद लगाते हैं, तो उस वक़्त उनकी दुआओं को सुनता है और अपने करम से उनकी परेशानियों को दूर करता है, मुम्किन है वो ईमान ले आयें। लेकिन अक्सर इंसान उसके फ़ज़्ल व करम को भूल जाते हैं और उसकी भलाई को फ़रामोश कर देते हैं और उसके एहसान की नाशुक्री करते हैं।

अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का इरशाद है,

فَاِذَا رَكِبُوْا فِى الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ

'जब ये लोग कश्ती पर सवार होते हैं तो अपने दीन को अल्लाह के लिये ख़ालिस करके उससे दुआ माँगते हैं, फिर जब वो उन्हें बचाकर ख़ुश्की पर ले आता है तो यकायक ये शिर्क करने लगते हैं।'

(सूरह अन्कबूत 29 : 65)

अल्लाह तबारक वतआला अपने बन्दों को याद दिला रहा है कि वही है जो एक परेशान हाल की दुआयें सुनता है और उसकी परेशानियाँ दूर करता है और यही बात उसके माबूदे हक़ीक़ी होने का

Scanned by CamScanner

बय्यिन (खुली हुई) सुबूत है। उसकी वहदानियत पर एक रोशन दलील है। लेकिन बहुत कम लोग इससे नसीहत हासिल करते हैं,

أَمَّن يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ۗ أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾

'कौन है जो बेक़रार की दुआ सुनता है जबकि वो उसे पुकारे और कौन उसकी तकलीफ़ दूर करता है? और (कौन है जो) तुम्हें ज़मीन का ख़लीफ़ा बनाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और इलाह भी (ये काम करने वाला) है? तुम लोग कम ही सोचते हो।'

(सूरह नमल 27 : 62)

'औरत एक नाज़ुक ज़र्फ़ (बर्तन) की तरह है, जल्द टूट जाने वाली चीज़, इसलिये उसका घर में क़रार पकड़े रहना ही बेहतर है।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

'ज़रर रसानी शिकस्त की अलामत है।'

'तुममें से कुछ बख़ीली करने लगते हैं और जो बुख़्ल करता है वो तो दरअसल अपनी जान से बख़ीली करता है।'

وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ

जो बुख़्ल करता है वो अपने ही हक़ में बुख़्ल करता है

(सूरह मुहम्मद 47 : 38)

जुल्मतों की योरिशें हों या कि हो ग़म का नुज़ूल
गर्दे ग़म से पाक रख चेहरा, न कर दिल को मलूल

ये मशहूर वाक़िया ख़लीफ़ा उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) की बहन उम्मुल बनीन का है। उनकी सख़ावत और दरिया दिली इस क़द्र बढ़ी हुई थी कि वो ख़्वातीन को अपने घर मदऊ (दावत) करतीं और उनको क़ीमती लिबास तोहफ़े में देतीं और उसके साथ कुछ दीनार भी देतीं और उनसे अ़र्ज़ करतीं,
'मल्बूसात आपके लिये हैं और दीनार अपने फ़ुक़रा के दरम्यान तक़सीम कर दीजिये।'

(सिफ़तुस्सफ़वह लिइब्निल जौज़ी : 2/431)

इस तरीक़े से वो उन औ़रतों की तर्बियत फ़रमाती थीं और उन्हें जूदो-सख़ा का आ़दी बनाती थीं और उनके बारे में ये रिवायत मिलती है कि वो कहा करती थीं, 'बख़ीलों पर अफ़सोस, वल्लाह! उनके पास एक जोड़ा कपड़ा हो तो वो भी न पहनें और एक ही रास्ता हो तो वो उस पर भी न चलें।' (अज़्ज़ुहद लिअहमद : 2158, अल्मुजालिसतु व जवाहिरुल इ़ल्म लिदैनूरी : 2453, अल्बुख़ला लिल्ख़तीब : 96)

जूदो-करम से मुताल्लिक़ उनका ये क़ौल रिवायतों में आता है,
'हर क़ौम को कोई ख़ास चीज़ मरग़ूब होती है। मेरी रग़बत बख़्शिश व अ़ता में है। सिला रहमी और लोगों के साथ भलाई, मुझे भूख की हालत में उ़म्दा खाने से और शदीद प्यास के आ़लम में ठण्डे पानी से ज़्यादा मरग़ूब है।'

(सिफ़तुस्सफ़वह लिइब्निल जौज़ी : 2/431)

इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह, माल को सहीह जगह पर ख़र्च करने और नेक कामों में हिस्सा लेने में उनकी रग़बत इस हद को पहुँची हुई थी....... अल्लाह तआला उन पर रहम फ़रमाये कि वो कहा करती थीं,
'मैंने कभी किसी पर किसी चीज़ के मामले में रश्क व हसद नहीं किया, सिवाय इस बात पर कि कोई नेक काम करने में पेश-पेश हो तो मेरे दिल में ये ख़्वाहिश हुई कि मैं भी उस काम में शरीक हो जाती।' (सिफ़तुस्सफ़वह लिइब्निल जौज़ी : 2/431)

ये हैं उम्मुल बनीन (रह.) और ये हैं उनके अक़्वाल और अफ़आल। कहाँ हैं अब उम्मुल बनीन जैसी ख़्वातीन?

'हक़ीक़ी मसर्रत, अनानियत के ख़ातमे में है।'

*****

Scanned by CamScanner

दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब औरत

(13)

लअ़ल व गोहर

Scanned by CamScanner

किरणें

إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّبِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾

'बेशक सब्र करने वालों को तो उनका अज्र बेहिसाब दिया जायेगा।'

(सूरह ज़ुमर 39 : 10)

तुम एक मोमिना हो, तुम शरक़ी (मश्रिक़ी/Eatern) हो न ग़रबी (मग़्रिबी/Western)

दिल को अपने शादमाँ उम्मीदे फ़रदा से तू रख
कौन जाने आज का ग़म लाये कल ख़ुशियाँ हज़ार

एक जर्मन मुसलमान औरत की नसीहत भरी बातें हैं,

मग़्रिब के फ़ल्सफ़े और फैशन से धोखा मत खाओ। ये सब शातिराना चालें हैं जो धीरे-धीरे हमें अपने दीन से हटाने और हमारी दौलत पर क़ब्ज़ा करने के लिये हैं।

इस्लाम और उसका ख़ानदानी निज़ाम ही ऐसा है जो सिन्फ़े नाज़ुक के लिये निहायत मौज़ूँ (मुनासिब) है क्योंकि औरत अपनी फ़ितरत के लिहाज़ से घर में पुरवक़ार अन्दाज़ से रहने ही के लिये है। शायद तुम ये सवाल करो किस लिये?

इसलिये कि अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने मर्द को औरतों के मुक़ाबले में जिस्मानी कुव्वत, अक़्ल और ताक़त के लिहाज़ से क़वी बनाया है और औरत को निहायत नाज़ुक, हस्सास और जज़्बाती बनाया है। औरतों को ऐसी जिस्मानी कुव्वत हासिल नहीं जो मर्दों के पास है। एक हद तक औरत मर्द के मुक़ाबले में मुतलव्विन मिज़ाज (जिसका मिजाज़ घड़ी-घड़ी बदलता रहे) की हामिल है। इसलिये उसका सहीह मक़ाम घर ही है। शौहर और बच्चों से मुहब्बत करने वाली औरत बिला वजह घर को नहीं छोड़ती और न ग़ैर मर्दों के साथ आज़ादाना शिरकत करती है। 99 फ़ीसद मग़्रिबी औरतें ज़वाल की इस पस्ती तक पहुँच चुकी हैं कि उन्होंने अपने आपको बेच डाला है और उनके दिलों में ख़ौफ़े इलाह नाम की कोई चीज़ नहीं है।

मग़्रिब में औरतों का बड़े पैमाने पर मआश के लिये बाहर निकलने का नतीजा ये बरामद हुआ कि मर्दों ने अब औरतों का किरदार अदा करना शुरू कर दिया है। अब मर्द घर में रहकर बर्तनों की सफ़ाई, बच्चों की देखभाल और शराब नौशी करते हैं। मैं जानती हूँ कि इस्लाम ने मर्दों को घर में अपनी बीवी के साथ घरेलू काम-काज में मदद करने से मना नहीं किया है बल्कि उसकी हिम्मत अफ़ज़ाई की है लेकिन इस हद तक नहीं कि वो दोनों अपना-अपना किरदार ही फ़रामोश कर दें और दोनों की ज़िम्मेदारियाँ उलट-पलट ही हो जाये।

'तुम ख़ुद को ख़ूबसूरत बनाओ फिर पूरी कायनात ख़ूबसूरत नज़र आयेगी।'

*****

Scanned by CamScanner

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ﴿٨﴾

'और हम तुम्हें आसान तरीक़े की सहूलत देते हैं।' (सूरह आला 87 : 8)

मसाइल को भूल जाओ, अपने मशाग़िल में लग जाओ

फ़लाह व फ़ौज़ बढ़-बढ़कर क़दम चूमे है बस उसका
करे जो ग़ैर से हट कर फ़क़त अल्लाह पर तकिया

जब तुम अपनी मुश्किलात के इलाज के सिलसिले में वो सब कुछ कर चुकीं जो करना चाहिये तो तुम अपने किसी महबूब मशग़ले में लग जाओ, किताबों का मुतालआ (Study) या कोई दूसरा काम। बहरहाल तुम अपने आपको बेहद मसरूफ़ रखो क्योंकि ये मसरूफ़ियत तुम्हारी परेशानी की जगह ले लेगी।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ

'अल्लाह ने किसी शख़्स के सीने में दो दिल नहीं रखे।' (सूरह अहज़ाब 33 : 4)

और जान लो कि परेशानी एक मर्ज़ (तिफ़्ल) है। वालिदैन (माँ-बाप) बच्चे को जो मुनासिब दवा देते हैं फिर बाक़ी के वक़्त में वो अपने किसी मुफ़ीद काम में मसरूफ़ हो जाते हैं।

इंसान के लिये यही बेहतर है कि जब उसे मौजूदा परेशानी का सामना हो तो माज़ी (Past) की किसी बड़ी परेशानी को याद कर ले। जब तुम ग़ौर करोगी कि तुम माज़ी में इस तरह की परेशानियों का सामना कर चुकी हो, ख़ासकर कोई बहुत ही बड़ा मसला जो मौजूदा मसले से ज़्यादा अहम और ज़्यादा ख़तरनाक था। याद करो कि अल्लाह तआला ने किस तरह इस मसले को हल करा दिया। उसे याद करने के नतीजे में तुम्हारे चेहरे पर एक मुस्कुराहट और दिल में इत्मीनान का एहसास होगा। इंसान जब इस तरह माज़ी (Past) की मुश्किलात को याद करता है तो उसे महसूस होता है कि आज की मुश्किलात तो माज़ी की मुश्किलात की तरह नहीं हैं जिन्हें उसने अल्लाह के इज़्न से हल कर लिया था तो मौजूदा मुश्किलात भी इन्शाअल्लाह उसी तरह हल हो जायेंगी और गुज़र जायेंगी।

इंसान को चाहिये कि अपने मसाइल का ईजाबी पहलू तलाश करे और ये यक़ीनी है कि मुस्बत (Positive) के मुक़ाबले में आम तौर पर मन्फ़ी सोच (Nagative think) बहुत ज़्यादा और सख़्त होती है। अल्लामा इब्ने जौज़ी (रह.) ने इस मौक़े के लिये बड़ी हकीमाना बात इरशाद फ़रमाई है। कहते हैं,

'जो कोई किसी बला में गिरफ़्तार हो तो उससे भी बदतर सूरते हाल के बारे में तसव्वुर करे और उस इब्तिला (आज़माइश) पर मिलने वाले अज्र व सवाब पर ग़ौर करे। फिर ये भी देखे कि दुनिया में बहुत से लोग हैं जो उससे ज़्यादा बड़ी मुसीबत में मुब्तला हैं जिनके मुक़ाबले में उसकी मुसीबत कुछ भी नहीं है। तब वो इस हक़ीक़त का ऐतराफ़ करेगा कि उसकी मुसीबत हैच (हल्की) है और ये अल्लाह तआला की बड़ी मेहरबानी है कि उसकी मुसीबत ज़्यादा बड़ी मुसीबत नहीं है। ये अन्दाज़े फ़िक्र उसको एहसासे ग़म से निजात दिला देगा। अगर इंसान इस तरह की इब्तिला और आज़माइश में न डाले जायें तो वो राहत व आराम की क़द्रो-क़ीमत को महसूस ही न करें।'

(सैदुल ख़ातिर लिइब्निल जौज़ी, पेज नम्बर : 84)

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ

'परवरदिगार! जब तू हमें सीधे रस्ते पर लगा चुका है तो फिर कहीं हमारे दिल को कजी में मुब्तला न कर दीजियो और हमें अपने पास से रहमत अ़ता फ़रइमायो बेशक तू बड़ा अ़ता करने वाला है।'

(सूरह आले इमरान 3 : 8)

अहम नुकात जो ख़ुशी का सबब हैं

किसी नादाँ व अबला से मज़म्मत गर सुनो मेरी
तो उस को कामिलियत की सनद समझो मेरे हक़ में

हिर्स व हवस दो मुहलिक बीमारियाँ हैं जिनका इलाज इस तरह हैं :

* ख़र्च में किफ़ायत शआ़री और तर्ज़े रिहाइश में ऐतदाल, इसलिये कि जो अख़राजात में वुस्अ़त इख़्तियार करता है और क़नाअ़त पर क़ायम नहीं रह सकता, वो लाज़िमन हिर्स व तमअ़ में मुब्तला होगा। तर्ज़े रिहाइश में ऐतदाल क़नाअत की रूह है। जैसाकि कहा गया है, 'बेहतर तदबीर व इन्तिज़ाम आधा इल्मे मआ़ीशत है।'

* मुस्तक़बिल के फ़िक्र में ज़्यादा परेशान होने की ज़रूरत नहीं, तमन्नाओं के महल पर निगाहें मर्कूज़ रखो। इस बात पर ईमान रखो कि रिज़्क़ जो मुक़द्दर कर दिया गया है वो तुम तक लाज़िमन पहुँचेगा।

* अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो क्योंकि अल्लाह तबारक व तआ़ला का वादा है, **'जो कोई अल्लाह से डरते हुए काम करेगा अल्लाह उसके लिये मुश्किलात से निकलने का कोई रास्ता पैदा कर देगा और उसे ऐसे रास्ते से रिज़्क़ देगा, जिधर उसका गुमान भी न जाता हो।'** (सूरह तलाक़ 65 : 3)

इस हक़ीक़त को समझो कि क़नाअ़त में इस्तिग़ना की इज़्ज़त है और हिर्स व तमअ़ (लालच) में ज़िल्लत व रुस्वाई है। इन दोनों से सबक़ हासिल करो।

* अम्बिया और सलफ़े-सालेहीन के हालात को कस़रत से देखो। उनकी क़नाअ़त, तवाज़ोअ़ और सादा तरीक़-ए-ज़िन्दगी को इख़्तियार करने की कोशिश करो। देखो कि किस तरह वो नेक कामों की तरफ़ रग़बत रखते थे। उनके उस्वा पर नज़र डालो और उनकी ज़िन्दगी को मश्अ़ले राह बनाओ।

* दुनियावी हैसियत से जो लोग तुमसे कमतर हैं उनको देखो।

'अ़क़्लमन्द आदमी दानिशमन्दाना बातों से फ़ायदा उठाने की कोशिश करता है। वो कभी मायूसी का शिकार नहीं होता और सोचना और कोशिश करना नहीं छोड़ता।'

*****

Scanned by CamScanner

किरणें

إِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ط

'यक़ीनन अल्लाह मुदाफ़िअत करता है उन लोगों की तरफ़ से जो ईमान लाये हैं।'

(सूरह हज 22 : 38)

अल्लाह का सहारा थाम लो, चाहे सारे सहारे छूट जायें

क़यादत बेमशक़्क़त क़ौम की हासिल नहीं होती
यहाँ ख़तरा हलाकत का भी है माली इज़ाअत का

ईमान के साथ अमले सालेह की जज़ा दुनिया में पाकीज़ा ज़िन्दगी है। इससे कोई बहस़ नहीं कि ये ज़िन्दगी सामाने तअय्युश (ऐश का सामान), दौलत की फ़रावानी और आराम व आसाइश से भरी हो क्योंकि एक अच्छी ज़िन्दगी इन चीज़ों के बग़ैर भी हो सकती है।

लेकिन ज़िन्दगी में माल व दौलत की फ़रावानी के अलावा और भी बहुत सी चीज़ें हैं कि अगर वो न हों तो अच्छी ज़िन्दगी का तसव्वुर नहीं किया जा सकता। चाहे इंसान के पास बस ज़रूत की चीज़ें ही हों और उनमें से अहम चीज़ें ये हैं :

अल्लाह तआला से ताल्लुक़ और उस पर ऐतमाद, इंसान की ज़िन्दगी को बेहतर बनाने के लिये लाज़िमी है। अल्लाह तआला की इनायत और उसकी ख़ुश्नूदी और उसकी दी हुई अच्छी सेहत, बरकत, सर छिपाने के लिये पुरसुकून घर और क़ल्बी सुकून और मुहब्बत करने वाले मुख़्लिस दोस्त और अमले सालेह करने की तौफ़ीक़ और रूह, ज़मीर और ज़िन्दगी पर उसके ख़ुशगवार अस़रात।

माल सिर्फ़ एक ज़रिया है और वो थोड़ा भी हो तो काफ़ी है क्योंकि इससे दिल उन चीज़ों में लगा रहेगा जो माल से कहीं ज़्यादा अहम और अज़ीम हैं और अल्लाह तआला की नज़र में ख़ालिस और हमेशा बाक़ी रहने वाली हैं।

'ये एक तस्लीमशुदा हक़ीक़त है कि बड़ी हस्तियाँ अपनी माँओं से इज़्ज़त के नुक़ूश विरास़त में हासिल करती हैं।'

*****

किरणें

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

'ला इला-ह इल्लल्लाह अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं.......।'

अल्लाह पर ईमान लाने वाले से ज़्यादा ख़ुशनसीब कोई और नहीं

सब्र की आदत बना तो तल्ख़ी अय्याम में
और तू कर मुश्किलों का सामना मर्दाना वार

मैंने बेशुमार मालदारों और जाह व मन्सब के लिहाज़ से बड़े लोगों की सवानेह हयात (जीवनी) पढ़ी हैं जो अल्लाह तआला पर ईमान नहीं रखते थे। मैंने उनकी ज़िन्दगी का ख़ातमा बदबख़्ती के साथ देखा है। उनका मुस्तक़बिल लानतज़दा और उनका दुनियावी मर्तबा सिवाय ज़िल्लत व रुस्वाई के और कुछ न था। अब वो कहाँ हैं ? अब उनके ख़ज़ाने और दौलत के अम्बार कहाँ हैं जिन्हें वो जमा करते रहे? उनके महल्लात और ऊँचे-ऊँचे मकानात कहाँ हैं जिनको उन्होंने तामीर किया था? तमाम चीज़ें ख़त्म हो गईं। उनमें कुछ ने ख़ुदकुशी कर ली, कुछ लोग मार डाले गये, उनमें कुछ लोग क़ैद किये गये और कुछ गिरफ़्तार होकर अदालत ले जाये गये जहाँ उनके जुर्म की वजह से उनको सज़ायें सुनाई गईं। वो अपने ज़माने के इन्तिहाई बदबख़्त इंसान साबित हुए जबकि उन्होंने सोचा था कि वो अपनी दौलत से हर चीज़ हासिल कर लेंगे, ख़ुशियाँ, हक़ीक़ी मुहब्बत, सेहत और जवानी। लेकिन आख़िरकार वो इस नतीजे पर पहुँचे कि दौलत से न तो हक़ीक़ी मुहब्बत हासिल की जा सकती है और न हक़ीक़ी ख़ुशी, न तो इससे हक़ीक़ी तन्दुरुस्ती हासिल की जा सकती है और न जवानी लौटाई जा सकती है। दुनिया की तमाम दौलत देकर भी एक दिल नहीं ख़रीद सकते और न दिल में मुहब्बत की जोत जगा सकते हैं और न ख़ुशी पैदा कर सकते हैं।

अल्लाह पर ईमान लाने वाले से ज़्यादा कोई ख़ुशनसीब नहीं है। क्योंकि अहले ईमान अपने रब की तरफ़ से नूरे हिदायत पर हैं और वो अपने नफ़्स का मुहासबा करते हैं। वो ऐसे काम करते हैं जिनको करने का अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने हुक्म दिया है और उन बातों से बचते हैं जिनको रब ने हराम क़रार दिया है। सुनो! क़ुरआन पाक उनके बारे में क्या बयान करता है, **'जो शख़्स भी नेक अमल करेगा, चाहे वो मर्द हो या औरत, बशर्तेकि हो वो मोमिन, उसे हम दुनिया में पाकीज़ा ज़िन्दगी बसर करायेंगे और (आख़िरत में) ऐसे लोगों को उनके अज्र बेहतरीन आमाल के मुताबिक़ बख़्शेंगे।'** (सूरह नहल 16 : 97)

*****

Scanned by CamScanner

'जो कुछ होता है अल्लाह की क़ज़ा व क़दर के तहत होता है।'

तर्ज़े ज़िन्दगी, बग़ैर फ़िज़ूलख़र्ची और सामाने तअय्युश के बेहतर है

मुसीबत मेरी जान चाहे बड़ी हो
न दाइम रही है, न दाइम रहेगी

एक मोमिना सालेहा ज़रूरत के मुताबिक़ ही खाना तैयार करती है। खाना इतना बचा नहीं रहता कि उस पर फ़िज़ूलख़र्ची और बदसलीक़गी का इत्लाक़ हो सके। इस मामले में उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) का उस्वा निहायत मिसाली है। हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है फ़रमाती हैं, 'रसूलुल्लाह (ﷺ) के दस्तरख़्वान पर जौ की रोटी भी थोड़ी या ज़्यादा नहीं बचा करती थी।' (मुअजमुल औसत लित्तबरानी : 1567, शैख़ अल्बानी रह. ने इसे सहीह लिग़ैरिही कहा है। सहीहुत्तरग़ीब : 3269)

एक दूसरी रिवायत में है, 'रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने से जब दस्तरख़्वान उठाया जाता था तो उसमें कोई चीज़ थोड़ी सी भी झूठी बची नहीं रहती थी।' (मुअजमुल औसत लित्तबरानी : 891, शैख़ अल्बानी रह. ने इसे सहीह लिग़ैरिही कहा है। सहीहुत्तरग़ीब : 3269)

इस्लाम ने जिन फ़िज़ूलख़र्चियों और सामाने तअय्युश के इस्तेमाल से मना किया है उसमें खाने-पीने के लिये चाँदी और सोने के बर्तनों का इस्तेमाल भी है।

हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) रिवायत फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'जो कोई चाँदी के बर्तनों में खाना खाता है या पानी पीता है वो अपने पेट के लिये जहन्नम की आग निगलता है।'** (सहीह बुख़ारी, किताबुल अशरबा, बाब आनियतुल फ़िज़्ज़ह:5634, सहीह मुस्लिम, किताबुल अशरिबा, बाब तहरीमु इस्तिअमालि अवानिज़्ज़हब वल्फ़िज़्ज़ह:2065, सुनन इब्ने माजा:3413, सुननुल कुबरा लिन्नसाई : 6843)

और मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में ये अल्फ़ाज़ हैं, **'जो कोई चाँदी या सोने के बर्तन में खाना खाता है या पानी पीता है वो अपने पेट के लिये जहन्नम के अंगारे निगलता है।'** (सहीह मुस्लिम, किताबुल अशरिबा, बाब तहरीमु इस्तिअमालि अवानिज़्ज़हब वल्फ़िज़्ज़ह: 2/2065, मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा: 5/103, सुननुल कुबरा लिन्नसाई : 6852)

हक़ तो ये है कि इस्लाम ने जो इन चीज़ों को हराम क़रार दिया है इसमें बड़ी हिक्मत है। क्योंकि ये काम फ़िज़ूलियात में से हैं और अमीरों के चौंचले हैं जो वो अपनी इमारत ज़ाहिर करने के लिये दिखाते हैं। इस्लाम चाहता है कि उसके मानने वाले हमेशा तवाज़ोअ (सादगी) इख़्तियार करें और दौलत की नुमाइश न करें। यही वजह है कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) को यमन रवाना फ़रमाया तो आप (ﷺ) ने इरशाद फ़रमाया, **'ख़बरदार! ऐश व इशरत की ज़िन्दगी से परहेज़ करना। अल्लाह के बन्दे ऐश व इशरत की ज़िन्दगी नहीं पसंद करते।'** (मुस्नद अहमद : 5/243-244, मुस्नद शामियीन लित्तबरानी : 1395, हिल्यतुल औलिया : 5/155, शैख़ अल्बानी रह. ने इसे हसन कहा है। अस्सहीहा : 353)

'जब तुम अपनी कम नसीबियों पर ग़ौर करोगी तो कभी ख़ुश न रह पाओगी।'

Scanned by CamScanner

किरणें

'ख़ुद को तन्क़ीद से बालातर (ऊपर) न समझो।'

नेक आमाल शरहे सद्र का बाइस़ हैं

टूट जाये आस जब, मसदूद हों सब रास्ते
ग़म की फिर भी बात क्या हामी हमारा है ख़ुदा

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़रमाती हैं, 'एक मिस्कीन औरत अपनी दो बच्चियों के साथ आई। मैंने उन तीनों को एक-एक खजूर खाने के लिये दी। जब औरत अपने हिस्से की खजूर खाने के लिये मुँह के पास ले गई तो बच्चियों ने उसे भी माँग लिया। उस औरत ने उस खजूर के दो टुकड़े किये जिसे वो ख़ुद खाना चाहती थी, उसे उन दोनों बच्चियों के दरम्यान तक़सीम कर दिया। उसकी ये बात मुझे बड़ी अच्छी लगी और मैंने उसका ज़िक्र रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़रमाया, **'अल्लाह तआला ने जन्नत को उसके लिये वाजिब कर दिया और जहन्नम की आग से उसको निजात दे दी।'** (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिलह; बाब फ़ज़्लुल इह्सानि इलल बनात : 2630, मुस्नद अहमद : 6/69, शौबुल ईमान लिल्बैहक़ी : 11020)

हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) का हाल सुनिये। उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से उस ख़र्चे के बारे में पूछा जो वो अपने बेटे पर करती थीं। उन्होंने पूछा, 'क्या मुझे उस पर अज्र मिलेगा जो मैं अबू सलमा के बेटों पर ख़र्च करती हूँ? मैं उनको नज़र अन्दाज़ नहीं करती क्योंकि वो मेरे ही बच्चे हैं।' हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के जवाब देने से पहले ही उन बच्चों के साथ हुस्ने सुलूक का ये रवैया इख़्तियार कर रखा था। इस्बात में जवाब मिलने से पहले ही उनकी फ़ितरते सलीम ने सहीह जवाब दे दिया था।

इस्लाम नेक आमाल पर उभारता है। अमले ख़ैर, सिला रहमी, नर्मी और मेहरबानी पर ज़ोर देता है। रहमत व मुहब्बत की तुख़्म रेज़ी पूरे मुआशरे में करता है ताकि आने वाली नसल की परवरिश व परदाख़्त बेहतर तौर पर हो और वो मुआशरे में सालेहीन और अबरार बन कर उठें।

'नेकबख़्त बनो, नेकबख़्ती ही ख़ुशबख़्ती है।'

*****

Scanned by CamScanner

'औरत एक ख़ुश्बूदार फूल है और ख़ुश इल्हान (आवाज़) बुलबुल'

हर मुसीबत से अल्लाह ही बचाता है

तौहीद तो ये है कि अल्लाह हश्र में कह दे
ये बन्दा दो आलम से ख़फ़ा मेरे लिये है

मुहम्मद अली जौहर

तय्यारा (जहाज़) फ़िज़ा (हवा) में अपनी इन्तिहाई बुलन्दियों पर ज़मीन व आसमान के दरम्यान मुअल्लक़ था। उस वक़्त हवाई जहाज के आलात ये ज़ाहिर कर रहे थे कि जहाज में कोई ख़राबी पैदा हो गई है। हवाईजहाज के कप्तान, सारे ओमले (वर्कस) और मुसाफ़िरों पर ख़ौफ़ व दहशत तारी हो गई, लोग रोने लगे, औरतें चिल्लाने लगीं, बच्चे ख़ौफ़ज़दा हो गये। ख़ौफ़ व दहशत के मारे लोगों का बुरा हाल था। ऐसे हालात में लोग अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को गिरया व ज़ारी के साथ पुकारने लगे, 'या अल्लाह! या अल्लाह! या अल्लाह!' अल्लाह तबारक व तआला का करम हुआ, उसकी रहमत नाज़िल हुई और उसकी मेहरबानी हुई। मुसीबत टल गई, लोग पुरसुकून हो गये। उनके दिल मुत्मइन हो गये और जहाज बहिफ़ाज़त ज़मीन पर उतर गया।

बच्चे की विलादत का मरहला था। औरत दर्दज़ा में मुब्तला थी, मौत व हयात की कश्मकश में थी। क़रीब था कि जान निकल जाये, हलाकत क़रीब थी। माँ ने अल्लाह की तरफ़ रुजूअ किया जो तमाम परेशानियों को दूर करने वाला और तमाम ज़रूरतों को पूरा करने वाला है। उसने पुकारा, 'या अल्लाह! या अल्लाह! या अल्लाह!' अचानक उसकी मुसीबत टल गई और बच्चा सलामती के साथ दुनिया में वारिद हो गया।

एक साइंसदाँ एक अहम मसले में उल्झा हुआ था। वो मसले के सहीह हल की तलाश में सरगरदाँ था लेकिन किसी तरह मसला हल होने का नाम ही न लेता था। उसने निहायत आजिज़ी के साथ अल्लाह को पुकारा, या अल्लाह! या अल्लाह! या अल्लाह! ऐ मुअल्लिम! जिसने इब्राहीम (अलै.) को सिखाया, ऐ फ़हम व फ़रासत के मालिक! जिसने सुलैमान (अलै.) को अक़्ल व फ़हम अता की, ऐ अल्लाह! जिब्रईल, मीकाईल और इस्राफ़ील के रब! ज़मीन व आसमान के ख़ालिक़! आलिमुल ग़ैब वशशहादह! तू ही अपने बन्दों के दरम्यान सहीह फ़ैसला करने वाला है! जब उनमें इख़्तिलाफ़ रूनुमा हों। अपने हुक्म से तू मुझे हक़ की तरफ़ रहनुमाई फ़रमा, जब उनमें इख़्तिलाफ़ रूनुमा हों। बेशक तूने जिसे चाहा है सिराते मुस्तक़ीम की तरफ़ रहनुमाई फ़रमाई है .....। (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब अद्दुआउ फ़ी सलातिल्लैल : 770, सुनन अबी दाऊद : 767, तिर्मिज़ी : 3420, सुनन इब्ने माजा : 1357) तो अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से मसला हल हो गया। पाक है उसकी ज़ात और क्या ही रहीम है उसकी शख़्सियत। (इसी तरह का मिलता-जुलता वाक़िया शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया (रह.) की सवानेह हयात में सीरत निगारों ने लिखा है, अल्ग़र्ज़ इमाम इब्ने तैमिया ख़ुद फ़रमाते हैं, 'जब मैं किसी मसले में इख़्तिलाफ़ पाता हूँ तो उसके मुताल्लिक़ा बीसीयों किताबें और तफ़ासीर देखता हूँ, फिर भी मेरे दिल को यक़ीन व इत्मीनान नहीं होता तो बाहर सहरा की तरफ़ निकल जाता हूँ, वुज़ू करता हूँ, दो रकअत नमाज़ पढ़ता हूँ और पहलू के बल ज़मीन पर लेट कर और अपने रुख़्सार मिट्टी के साथ मलता हूँ और दुआ करता हूँ, या मुअल्लिमे इब्राहीम अल्लिम्नी तब रुजूअ व एनाबत इलल्लाह करता और दलाइल की रोशनी में किसी एक क़वी दलील के साथ ठहर जाता। अल्लाह तआला ही अपने बन्दों की रहनुमाई करने वाला है। (हाफ़िज़ तन्वीरुल इस्लाम)

'ख़ुशनसीब वो इंसान है जो बहुत बड़ी तादाद में लोगों को ख़ुशियों से हमकिनार करता है।'

Scanned by CamScanner

किरणें

'औरतों के मामले में अल्लाह से डरो।'

ग़फ़लत शिआर मत बन

महसूरे हवादिस़ होकर भी जी हार नहीं, पुर अज़्म है तू
उम्मीद की किरणें फूटेगी, ये ग़म की घटा छट जायेगी

ग़फ़लत शिआरी से बचो! ये ग़फ़लत शिआरी क्या है? अल्लाह तबारक व तआला के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहना, तर्के सलात, कुरआन से मुँह मोड़ना, मुफ़ीद दुरूस और ख़ुतबात की महफ़िलों में हाज़िरी से कतराना, ये सब ग़फ़लत के अस्बाब हैं। इसके बाद तो फिर दिल सख़्त हो जाते हैं। उन पर मुहर लग जाती है। नेक व बद की पहचान ख़त्म हो जाती है और अल्लाह के दीन के फ़हम से इंसान महरूम हो जाता है। ऐसा इंसान सख़्त दिल, ग़मज़दा, ज़हनी इन्तिशार का शिकार और नामुराद होकर रह जाता है। ये तो दुनिया में ग़फ़लत के नतीजे हैं, आख़िरत में क्या हाल होगा?

इसलिये तुम्हें ग़फ़लत के इन अस्बाब से परहेज़ लाज़िम है जिनका ऊपर ज़िक्र हुआ। अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो और अपनी ज़बान को अल्लाह के ज़िक्र से तर रखो। सुब्हानअल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, अल्लाहु अकबर, ला इला-ह इल्लल्लाह पढ़ती रहो। तस्बीह व तहलील और तौबा व इस्तिग़फ़ार को जारी रखो और अपने प्यारे नबी मुहम्मद पर दरूद व सलाम पढ़ती रहो। हर आन और हर वक़्त, हालते क़ियाम में भी जुलूस की हालत में भी, लेटे-लेटे करवट लेते हुए भी। तब तुम्हारा दिल ख़ुशी और इत्मीनान से भर जायेगा। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त, रहमान व रहीम के ज़िक्र के अस़रात ऐसे ही होते हैं।

अल्लाह रब्बुल आलमीन ने फ़रमाया है, **'ख़बरदार रहो! अल्लाह की याद ही वो चीज़ है जिससे दिलों को इत्मीनान नसीब हुआ करता है।'** (सूरह रअद 13 : 28)

'इसका इन्तिज़ार न करो कि तुमको ख़ुशी मिले। मुस्कुराओ और मुस्कुराती रहो ताकि ख़ुशी तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह हो।'

*****

Scanned by CamScanner

'ख़ुशबख़्ती की उम्मीद रखो और बदबख़्ती की उम्मीद न रखो।'

ज़िन्दगी ज़िन्दा दिली का नाम है

कुटिया को बना ले कोठा तू, ख़स ख़ाना को अपने ज़ीनत दे
है क़सरे मुअला से बढ़कर मिट्टी का घरौन्दा ये तेरा

परेशानी के आलम में भी जब तुम मुस्कुराती हो तो तुम मुसीबतों के एहसास को कम कर देती हो और परेशानियों से निजात हासिल करने का दरवाज़ा अपने ऊपर खोल लेती हो। मुस्कुराने से मत हिचकिचाओ, इसलिये कि तुम्हारे अंदर एक ताक़त है जो मुस्कुराहटों से भरी है। मुस्कुराहटों को दबाने की कोशिश न करो इसलिये कि इसका मतलब ये होगा कि तुम ख़ुद को रंज व अलम और तकलीफ़ व आज़ार से मार डालना चाहती हो और अंदर ही अंदर घुट-घुट कर मरना चाहती हो। मुस्कुराहट तुम्हारे लिये नुक़सानदेह नहीं हो सकती। उस वक़्त भी नहीं जब दूसरों से दिल की गहराइयों के साथ इन्तिहाई सन्जीदा मसले पर बातचीत कर रही होती हो। हाँ! उस वक़्त कितना अजीब समाँ होता है जब हमारे लब मुस्कुराहट की ज़बान में हमकलाम होते हैं।

एक मग़रिबी दानिशवर स्टेफिन जजाल कहता है, 'मुस्कुराना एक समाजी फ़रीज़ा है।'

उसकी ये बात सहीह है। इसलिये कि जब तुम समाज में लोगों से मिलना-जुलना रखोगी तो तुम्हारे लिये लाज़िम है कि तुम लोगों से ख़न्दा पेशानी और हुस्ने अख़्लाक़ के साथ मिलो। तुम्हें इस बात का इदराक होना चाहिये कि समाजी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये एक ख़ास महारत की ज़रूरत है और उसमें तुमको माहिर होना चाहिये। उन इंसानी महारतों में से एक ख़न्दा पेशानी से मिलना भी है। ये इज्तिमाई अक़दार में से एक है और ये हर मुआशरे में क़द्रे मुश्तरक है।

जब तुम मुस्कुराती हो तो ज़िन्दगी के हुस्न को दो बाला कर देती हो और लोगों के दिलों में उम्मीद की शमअ रोशन करती हो। उनको ख़ुशख़बरी और मुज़्द-ए-जाँ फ़िज़ा सुनाती हो और ज़िन्दगी से उनको उम्मीदों और अच्छी उम्मीदों के पूरे होने का यक़ीन दिलाती हो। लेकिन अगर तुम एक ऐसे चेहरे के साथ लोगों से, जिस पर रहमदिली के कोई आसार नज़र नहीं आते, मिलती हो तो उस मन्ज़र से तुम उनको आज़ुरदा कर देती हो और उनकी तबीअतों को पज़्मुरदा कर देती हो। सोचो और फ़ैसला करो, क्या तुम इसको गवारा कर सकती हो कि तुम्हारी ज़ात दूसरों की ज़िन्दगी में मायूसी और पज़मुर्दगी पैदा करने का सबब बन जाये?

'ऊँचाई सिर्फ़ उन लोगों को मिलती है जो उसका ख़्वाब देखते हैं।'

*****

Scanned by CamScanner

ख़ातम-ए-कलाम

और अब ऐ मेरी इज़्ज़त मआब बहन!

जबकि तुम ये किताब पढ़ चुकी हो तो........

हुज़्नो-मलाल को अल्विदाअ़ (Bye-Bye) कह दो।

रंज व अलम की दुनिया से हिजरत कर जाओ, तकलीफ़ व मुसीबत के मक़ाम से जुदाई इख़्तियार करो और नाउम्मीद और मायूसी के ख़ैमे से रहलत कर जाओ।

ईमान व यक़ीन के मेहराब के नीचे आ जाओ और कअ़ब-ए-हुब्बुल्लाह और रज़ा बिल्क़ज़ाए इलाही की तरफ़ पलट आओ और नई लेकिन ख़ुशियों भरी ज़िन्दगी का आग़ाज़ करो।

एक नये अ़हद (ज़िन्दगी) को शुरू करो जो बेहद ख़ूबसूरत है और एक नई ज़िन्दगी जो तरद्दुद, क़लक़ और परेशानियों से ख़ाली हो।

रंज व मलाल, बुराई और नहूसत और तफ़क्कुरात से पाक हो।

आओ! इधर आओ कि ईमान का मुनादी तुम्हें पुकार रहा है। उम्मीदों और तमन्नाओं की बुलन्द चोटी से राज़ी बरज़ा की वादी में बुला रहा है ताकि तुमको ये मुज़्द-ए-जाँ फ़िज़ा सुनाये :

'तुम दुनिया की सबसे ख़ुशनसीब अ़ौरत हो!!'

*****

تَمَّتْ بِالْخَيْرِ

Scanned by CamScanner

मुनाजात

हकीम मुहम्मद सिद्दीक ग़ौरी

रब्बे-आज़म, अर्शे-आज़म पर है तेरा इस्तवा,
तू है आली, तू है आला, तू ही है रब्बुल उला।

हम्द, पाकी किबरियाई मेरे सुब्हानो-हमीद,
सिर्फ़ है तेरे लिये जितनी तू चाहे किबरिया।

लामकां, बेख़ानमां, तू है नहीं हर्गिज़ रफ़ीअ
अर्श पर है तू यक़ीनन, है पता मुझकोतेरा।

अर्श पर होक भी तू मेरी रगे-जां सेक़रीब,
इतना मेरे पास है मैं कह नहीं सकता ज़रा।

अर्श पर है ज़ात तेरी, इल्मो-क़ुदरत से.करीब,
तू हमारे पास है ऐ हाज़िरो-नाज़िर ख़ुदा।

अर्श पर है तू यक़ीनन और वह मकतूब भी
तेरी रहमत है फ़ज़ूं तेरे ग़ज़ब से ऐ ख़ुदा।

अरबों ख़रबों रहमतें हों, बरकतें लाखों सलाम,
उन पर उनकी आल पर जो हैं मुहम्मद मुस्तफ़ा।

काबिले-तारीफ़ है तू मेरे रब्बुल आलमीन,
तू है रहमानो-रहीम-मालिके-यौमे-जज़ा।

हम तुझी को पूजते हैं तू ही इक माबूद है,
हम मदद चाहते नहीं हर्गिज़ क़भी तेरे सिवा।

तू है ज़ाहिर, तू है बातिन, अव्वलो-आख़िर है तू,
फ़क़्र भी तू देर कर दे, क़र्ज़ भी या रब मेरा।

मैं ज़मीनो-आसमां पर डालता हूं जब नज़र,
कोई भी पाता नहीं हूं मैं ख़ुदा तेरेसिवा।

चाँद-तारेदेरहेहैं अपने सानेअ की ख़बर,
तेरी क़ुदरत से अयां है बिलयक़ीन होना तेरा।

मैं तुझे कुछ जानता हूं, तेरेकुछ औसाफ़ भी,
तू क़यामत में भी होगा जाना-पहचाना मेरा।

तू मेरा ज़ाकिर रहे मैं भी रहूं ज़ाकिर तेरा,
हो ज़मी पर ज़िक्र तेरा आसमां में हो मेरा।

Scanned by CamScanner

क़ल्बे-मुज्तर को सुकूं मिल जाये तेरी याद से,
और तेरे ज़िक्र से हो मुत्मईन ये दिल मेरा।

रोज़ो-शब, सुब्ह मसा, आठों पहर, चौसठ घड़ी,
तू ही तू दिल में हरे कोई न हो तेरे सिवा।

मैं हमेशा याद रक्खूं अपनी मजलिस में तुझे,
तू भी मुझको याद रक्खे अपनी मजलिस में सदा।

बन्द तेरी याद सेमेरी ज़ुबां या रब न हो,
मरते दम तक, मरते दम भी ज़िक्र हो लब पर तेरा।

ज़िन्दगी दुश्वार हो तेरी मुहब्बत के बग़ैर,
माही-ए-बेआब हो बे-ज़िक्र ये बन्दा तेरा।

मैं दुआ के वक़्त तुझ से इतना हो जाऊं क़रीब,
गोया तहतुल अर्श में हूं तेरे कदमों में पड़ा।

हालते सद-यास में भी ऐ ख़ुदा तेरी क़सम,
जी न हारूं और मैं करता रहूं तुझ से दुआ।

बह रही हो मेरी आँखें मेरी गर्दन हो झुकी,
नाक नगड़े, पस्त होकर, तुझसे मैं मांगू दुआ।

तेरे आगे आजिज़ाना, दस्त बस्ता, सर नगूं,
मैं रहूं या रब खड़ा भी तेरे क़दमों में पड़ा।

हर मेरी ऐसी दुआ हो तेरी नेअमत की क़सम,
जैसे कोई तीर हो अपने निशाने पे लगा।

हर मेरी ऐसी दुआ हो जिस से टल जाएं पहाड़,
ग़ार वालों से भी बढ़कर तेरी रहमत से ख़ुदा।

हर मेरी तौबा हो ऐसी जो अगर तक़्सीम हो,
तेरे बन्दों पर तो बख़्शे जाएं लाखों बे-सज़ा।

नेकियों में तू बदल दे और उनको बख़्श दे,
उम्र भर के अगले पिछले सब गुनाहों को ख़ुदा।

हज मेरे मबरूर हो सब कोशिशें मशकूर हों,
दे तिजारत तू भी वह जिसमें न हो घाटा ज़रा।

तेरी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ हो मेरी कुल ज़िन्दगी,
खाना-पीना, चलना फिरना, बैठना उठना मेरा।

जो क़सम खाई या खाऊं तुझ पे कर के ऐतमाद,
मअ फ़लाहे दो जहां के साथ पूरी हो ख़ुदा।

मैं न छोडूं, मैं न छोडूं संगे-दर तेरा कभी, आ गया हूं,
आ पड़ा हूं, तेरे दर पर ऐ ख़ुदा।

Scanned by CamScanner

दुनिया की ख़ुशनसीब औरत

यह किताब दरअसल एक साहिबे ईमान औरत को अपने दीन की सआदत और अल्लाह तबारक व तआला के फ़ज़ल व इनायत से बहरावर करने के लिए लिखी गई है।

यह ग़मज़दा और मायूस दिलों को उम्मीद और शादमानी से हमकिनार करने वाली है।

यह मुस्लिम ख़्वातीन को ग़मों से निजात की राह दिखाती है और उनके अंदर नाउम्मीदी से उम्मीद व यक़ीन की तरफ़ पेशक़दमी का हौसला पैदा करती है ताकि बादे नसीम के खनक झौंकों के साथ उम्मीद व यकीन का सूरज उन पर तुलूअ हो।

यह किताब शिकस्ता दिल, ग़मों से निढाल और अंदेशों में गिरफ्तार ख़्वातीन को तमाम तर परेशानियों से निजात की तरफ़ दावत देती है।

यह किताब उन के अक्ले सलीम, क़ल्बे वसीअ, रूहे लतीफ़ और नफ़्से ज़की को ग़ोरो-फ़िक्र की दावत देती है और उन को पुकार पुकार कर कहती है कि सब्र करो ओर अल्लाह से अजर की उम्मीद रखो, अल्लाह की रहमत से मायूसी मत इख़्तियार करो क्योंकि अल्लाह तबारक व तआला हर हाल में तुम्हारे साथ है, अल्लाह रब्बूल इज्जत तुम्हारे लिये काफ़ी है, अल्लाह रब्बुल आलमीन तुम्हारा वली, नसीर, हामी व नासिर और निगेहबान है। उससे उम्मीद लगाए रखो और उसी पर तवक्कल करो।

ऐ इस्लाम की अलमबर्दार बहनो !... इस किताब का मुतालआ करो, ये कुरआन पाक की मुहकम आयात, हदीसे नबवी (सल्ल.) की सहीह नुसूस, हकीमाना अक़्वाले ज़र्रीन- सबक़ आमूज़ वाक़िआत , दिलनशीन अशआ़र, सहीह अफ़्क़ार और बेशबहा नसीहत आमेज़ वाक़िआत व तजर्बात व मुशाहिदात पर मुश्तमिल है।

इस किताब का मुतालआ़ करो और हुज़्न व मलाल, मायूसी और पज़मुर्दगी और अंदेशा हाए दूरदराज़ को अपने दिलो-दिमाग़ से निकाल बाहर करो।

All India Sole Distributor
POPULAR BOOK STORE
Outside Merti Gate, Jodhpur (Raj.)
M.9460768990, 9414700077

मौहल्ला सब्जी फरोश, रतलाम M.P. Mob. 7000411352, 9827397772

M.R.P. : ₹250/-

Scanned by CamScanner